सराक क्षेत्र

सराक क्षेत्र

डॉ. नीलम जैन

सराक साहित्य संस्थान

68, मिशन कम्पाउण्ड,

सहारनपुर

पुस्तक प्राप्ति स्थल
आनन्द जैन
803, कटरा छतरी,
नई सड़क, दिल्ली-110006
फोन : 3269042, 3280227

© डॉ. नीलम जैन

मूल्य : 200.00
प्रथम संस्करण : 1996
प्रकाशक : **सराक साहित्य संस्थान**
दिल्ली-110095
टाइप सैटिंग : **आधार लेजर प्रिंट**
ई. 32, ज्योति कालोनी, शाहदरा, दिल्ली-110032

मुद्रक : नवप्रभात प्रिंटिंग प्रेस, शाहदरा, दिल्ली-32

सभी सराक बन्धुओं को

विषय सूची

आधारिका

पश्चिमी बंगाल, बिहार, उड़ीसा के लगभग 300-400 ग्रामों में सर्वेक्षणोपरान्त कई लाख सराकों की जनसंख्या के आंकड़े सामने आए हैं। जैनागम में अनादिकाल से ही वर्तमान सराक क्षेत्र प्रणम्य क्षेत्र रहा है। तीर्थंकरों की जन्मभूमि, विहारस्थली, तपोभूमि एवं निर्वाणभूमि के रूप में यह क्षेत्र पूज्य रहा है। इस क्षेत्र के अनेक नगरों, जनपदों, ग्रामों के नाम भगवान महावीर की कीर्ति गाथा के प्रत्यक्ष साक्षी हैं—वर्धमान, मानभूम, सिंहभूम, वीरभूम, वर्द्धमानपुर आज भी अपने हृदयस्थल से प्राचीन स्मारकों को आंचल से लगाये हुए गौरवान्वित हैं।

हजारों वर्षों से सांस्कृतिक परम्परा, आचार-विचार से विशुद्ध भारतीय इस क्षेत्र को आवश्यकता है पुनः उन्हीं संस्कृति-संरक्षकों की जो इस क्षेत्र के प्रति अपनत्व भाव रखें। यहां की बिखरे पुरातत्व पर शोध कर विश्व के सम्मुख गर्व से कह सकें—हमारी संस्कृति की जड़ें सदैव समृद्ध रही हैं और रहेंगी।

इसके साथ ही यह सत्य भी सामने आए कि सराकों की अवस्थिति व इतिवृत्त के सक्षम, तर्कसम्मत ऐतिहासिक साक्ष्य हैं। प्रस्तुत सन्दर्भ पुस्तक में सराक शब्द की व्याख्या, कुलदेवता पार्श्वनाथ एवं पुरातत्व से सम्बन्धित कुछ प्रामाणिक तथ्य संग्रहीत किए गए हैं। इस आशा के साथ कदाचित् इनकी परिभाषा कोई सन्दर्भ भविष्य के सादे भवन की एक महत्वपूर्ण नींव की ईंट सिद्ध हों।

अन्त में, श्री चरणों में प्रणाम, उन स्वयंसिद्ध श्रमण उपाध्याय ज्ञानसागर जी को जिनके भागीरथ प्रयासों से, सराक क्षेत्र में प्रवास से विच्छिन्न कड़ियां शृंखलाबद्ध हो रही हैं।

डॉ. नीलम जैन
सहारनपुर

जंगलों में रहने वाले 'सराक' शुद्ध शाकाहारी हैं, भारतीय संस्कृति के सिरमोर हैं सराक

सराक जाति के लोगों का प्रमुख निवास बंगाल, बिहार, उड़ीसा प्रान्त के कई ग्रामों में है। वन्य अंचलों से घिरे समाज की मुख्य धारा से लगभग अलग-थलग से आदिवासी क्षेत्र में सराकों के कई गांव हैं। बिहार प्रान्त में सिंह भूमि जिले में 6 ग्राम, रांची में 49 ग्राम, दुमका में 29 ग्राम, वीरभूम में 3 ग्राम, धनबाद में 12 ग्राम, संथाल परगना के 29 ग्राम, बंगाल प्रान्त में बांकुड़ा जिले के 31, वर्धमान के 28, पुरुलिया के 80, मेदिनीपुर के 40 तथा उड़ीसा प्रान्त में कटक के 49, पुरी के 29, गंजाम के 77 ग्रामों का सर्वेक्षण कर अनेक रोमांचक, अनुकरणीय एवं प्रभावी तथ्य सामने आए हैं।

बिहार, बंगाल, उड़ीसा की वन्य जनजातियों के मध्य हजारों वर्षों से रहते हुए भी ये विशुद्ध शाकाहारी हैं। प्याज, लहसुन तक से भी परहेज रखने वाले ये सराक पानी भी छानकर पीते हैं तथा रात्रि में भोजन भी नहीं करते हैं, स्वच्छता के प्रति इनकी सावधानी का यह आलम है कि बाहर से काम करके आए हुए पति तक को भोजन देने के उपरान्त पत्नी वह थाली हाथ से अशुद्ध होने के भय से स्पर्श नहीं करती है तथा कहीं आस-पास के ग्रामों में जाने पर ये अपने घर का, अपने हाथ का ही बनाया हुआ भोजन प्रयुक्त करते हैं।

निम्न स्तरीय जीवन जीने वाले इन सराकों ने सिर्फ कृषि करके ही जीवनयापन करना सीखा है, हजारों युवक इस प्रगतिशील आधुनिकता की रोशनी से बेखबर बस पुरानी खुरपी-हल लिये ही दिखाई देते हैं। शिक्षा, तकनीक, शिल्प की कोई किरण अभी इन तक नहीं पहुंची, जबकि स्वयं को भारतीय संस्कारों का सच्चा प्रतिनिधि कहते हुए हम रोमांचित हैं। प्रकृत्याशान्त, सौम्य, सरल ये सराक गर्व से कहते हैं कि आज तक इनकी किसी भी पीढ़ी ने ऐसा कोई अपराध नहीं किया जिससे जेल जाना पड़ा हो या सजा भुगतनी पड़ी हो। आपस में ही सुलझाने की कला में भी ये निपुण हैं। हिंसा, अपराध तो दूर यहां तक कि प्रतिदिन के व्यवहार में भी ये हिंसक शब्द जैसे 'काटो', 'मारो' का प्रयोग नहीं करते।

हम अन्धविश्वासी-रूढ़िवादी कहकर इनको नकार नहीं सकते। इनकी जीवन शैली नये-नये चिन्तन का विशाल भूमि देती है। लाखों लोगों का विभिन्न प्रान्तीय

संस्कृति के मध्य रहते हुए भी समान आचरण संहिता एवं सामाजिक विश्वासों के साथ जीवन स्वयं में पर्याप्त शोध का विषय है। जब भी इस क्षेत्र की ओर किसी समाज शास्त्री, बुद्धिजीवी, इतिहासविद्, पुरातत्ववेत्ता की दृष्टि पड़ी वह इन सराकों के संस्कारों से प्रभावित हुआ है। अनेक अंग्रेज इस क्षेत्र में आए और अपनी कलम से इस विषय में लिख कर गए हैं।

बंगाल और पुरी डिस्ट्रिक्ट गजेटियर 1908-1910 में मि. आई. टी. डाल्टन एवं एच. एच. रिसले लिंखते हैं–"सराकगण झारखण्ड में बसने वाले पहले आए हैं, ये अहिंसा धर्म में आस्था रखते हैं।"

मि. गेट सेसंस रिपोर्ट में है–"बंगाल देश में एक खास तरह के लोग रहते हैं, जिनको सराक कहते हैं।

ये सराक एक ऐसी जाति की संतान हैं जो भूमिजों के आने से पूर्व बहुत प्राचीन काल से यहां बसी हुई हैं, इनके पूर्वजों ने पहले अनेक स्थानों पर मन्दिर बनवाये थे। यह अब भी एक शान्तिमयी जाति है जो भूमिजों के साथ बहुत मेलजोल से रहती है।

स्वयं का जंगलों में रहने का कारण बताते हुए हमें चौकाहेतु के सृष्टिधर मांझी, गौरांग सराक, कन्हाई मांझी, बंगाल के किरीट एवं दीनबन्धु मांझी, उड़ीसा नोयगेडा के श्री गोवर्धन बेहेरा, मदन मोहन साहू आदि कहते हैं कि हमारे पूर्वज धर्म की रक्षा के लिए जंगलों में आए चूंकि कई धर्मान्ध राजा बलात् धर्म परिवर्तन कराते थे। स्वयं को वहां असुरक्षित पाकर जंगलों में रहना प्रारम्भ किया। कलिंग युद्ध ने भी जंगलों की शरण लेने को विवश किया। समय-समय पर अनेक साम्प्रदायिक विद्वेषों से भी बचकर ये जंगल में रह गए।

इन सराकों के गोत्र हैं आदिदेव, शांडिल्य, गौतम, अनन्तदेव, नाग नागेश्वर, शान्तिजाय, पाराशर, देलास आदि। उड़ीसा में तो यह जाति प्रमुखतया कपड़ा बुनना, धागा रंगना आदि के कार्यों में लगी हुइ है। इनके कुल देवता पार्श्वनाथ हैं। सराक जाति के नाम और उद्भव के विषय में इनका कहना है कि अभी हाल में उपाध्याय ज्ञानसागर जी महाराज के प्रवास से इन्हें ज्ञात हुआ है कि सराक शब्द श्रावक का अपभ्रंश है, जिसका अर्थ है, श्रद्धावान विवेकी आचरणशील मनुष्य, सराकों में सभी सामाजिक, धार्मिक रीति-रिवाज एवं संस्कार यह मानने को बाध्य करते भी हैं कि ये विवेकी लोग हैं तथा उन्हीं के उद्‌बोधन से इनमें जागृति आयी है।

ये अहिंसक शैली के सच्चे प्रतिनिधि हैं। इनके चेहरों पर जो सांस्कृतिक छाप है, उससे स्पष्ट है कि ये अत्यन्त मानवीय, दान और नखशिख अहिंसक हैं, इनका जीवन पवित्र, निश्छल, वायाशालीन, भद्र और रहन-सहन करुणा से ओतप्रोत है। ये ईमानदार, कर्तव्यपरायण तथा भारतीय संस्कृति के सिरमौर हैं।

सराक पर्यावरण की रक्षा के प्रति सजग समर्पित हैं। कटे हुए वृक्ष को देखकर एक सराक बोला देख रहे हो यह चाण्डाल किस तरह तरसा-तरसा कर उसे छील रहा है। आज नहीं कई दिनों से इसे छीला-तड़पाया जा रहा है, आज तो इस पर कुल्हाड़ी चल रही है। इसी के अभिशाप से बिहार और बंगाल के बन्धु हावी हैं और तड़प कर मरते हैं। जो रहम नहीं खाते और हरे-भरे वृक्षों को काटता है, उसकी वह दशा है जो वर्तमान में घटित है।

यह क्षेत्र पुरातत्व की दृष्टि से भी समृद्ध है। खण्डगिरी, हाथीगुम्फा, उदयगिरि, उड़ीसा की (गुफाएं) पुलिया अनजाईमाबाद के ध्वंशावशेष मूक भाषा में बहुत कुछ कह रहे हैं।

इस पिछड़े और अभावग्रस्त क्षेत्र को देखकर एक पीड़ा और कसक उठती है। यहां के बच्चों के गालों पर आपको लाली देखने को नहीं मिलेगी, बचपन ही में ये थके हुए से लगते हैं, शिक्षा के आलोक का आक्सीजन इनके पास है न जीवन स्तर को ऊंचा करने वाला कोई उद्योग या व्यवसाय, इनकी बीमारी का भी बस भगवान ही रक्षक है, अस्तित्व के लिए चलने वाला निरन्तर संघर्ष यहां प्रत्येक की आंखों पर लिखा मिल जाएगा। यह क्षेत्र भारत का आदर्श क्षेत्र है, ये वे प्रदेश हैं जिन्होंने पूरे विश्व के कैनवस को संस्कृति की तूलिका पकड़नी सिखाई, शिक्षा के रंग दिये हैं, यह वह क्षेत्र है जो आज भी भारत में बढ़ते जा रहे पाश्चात्य सभ्यता के तूफानों को हितवान बनकर रोक सकता है। यहां का एक-एक बच्चा संस्कारों की जन्म घुट्टी पीकर बड़ा हुआ है, संस्कारहीन होती जा रही इस सभ्यता का यदि कोई आदर्श हो सकता है तो यही सराक। यहां सद्भावना, आपसी प्रेम विश्वास की गहरी जड़ें हैं। इस क्षेत्र में सैकड़ों युवकों-युवतियों, महिला-पुरुषों से मिलने पर मैंने उनके सीधे-सरल संदेश की सर्वग्राह्यता और उनके प्रभाव को सहज रूप में अनुभव किया है। यह सेवा-संकोच कहा जा सकता है कि भारतीयता से जुड़ी मान्यताओं एवं संस्कृति का समादार करने वाले एवं क्षेत्र में सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक पुनर्जागरण कर विश्व को रोपन, उसको पुष्पित करने की आवश्यकता है, संस्कृति की रक्षा करते-करते अभावों के झाड़ों से घिरे हुए इनकी दरिद्रता के पत्तों को झाड़ना होगा तथा नवजागरण के हरे पत्तों से इस सराक वृक्ष को हरा-भरा करना होगा।

अब आवश्यकता इस बात की है कि समाजसेवी संस्था, शासन, कर्मठ कार्यकर्त्ता, संस्कृति-प्रेमी सहृदय जन सब मिलकर इसे भरपूर खाद और पानी दें ताकि आगे चलकर इस विशाल वृक्ष की शीतल छाया में पुनः संस्कृति के स्वरों के अनुप्राणित रह सकें। समाज की मुख्य धारा से जुड़कर यह क्षेत्र चमकते चेहरों वाले, उछलकूद मचाते, ऊर्जा से लबालब भरे बच्चे चाहता है। यह क्षेत्र देश की आर्थिक प्रगति में हाथ बंटाते, भारत का भविष्य संवारने, सुरक्षित रखने में समक्ष हो।

सराक

The name 'Sarawak', 'Sarok' or Sarak is clearly a corruption of 'Shrawak' The Sanskrit word for a hearer which was used by the Jains for lay brothers that is the Jain engaged is secular pursuits as distinguished from 'Yati' that is priests or asectics

—बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर 1910 पृष्ठ सं. 23

Mr. L. S.S O. Mally

अर्थात् सरावक, सरोक, सराक स्पष्ट परिलक्षित है कि श्रावक का अपभ्रंश रूप है। यह संस्कृत में सुनने वाले के लिए कहा जाता है। उस समय जैन धर्म में परिवर्तित व्यक्तियों के लिए प्रयोग किया जाता था। ये श्रावक जैन धर्म प्रवर्तक यति, मुनि, संन्यासी से भिन्न होते थे।

'In 1863' I halted at a place called Jampura twelve miles from Purulia and was visited by some villagers who struck me as very respectable and intelligent in appearence. They called themselves 'Saraks' and they prided themselves on the fact that under our Government not one of their community has ever been

British Commissioner, E T Dalton

सराकगण झारखण्ड में बसने वाले पहले आर्य हैं, ये अहिंसा धर्म में आस्था रखते हैं।

मि. आई. टी. डाल्टन एवं एच. एस. रिसले

बंगाल और पुरी डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1908-1910

बंगाल देश में एक खास तरह के लोग रहते हैं जिनको श्रावक कहते हैं, ये मूल रूप से जैन हैं।

मि. गेट सेसंस रिपोर्ट

वे (सराक) एक ऐसी जाति की संतान हैं जो भूमिजों के आने से पूर्व बहुत प्राचीन काल से यहां बसी हुई हैं, इनके पूर्वजों ने पहले अनेक स्थानों पर मन्दिर बनवाये थे। यह अब एक शांतिमयी जाति है जो भूमिजों के साथ बहुत मेल-जोल से रहती है।

मि. गेट सेसंस रिपोर्ट

सराक लोग हिंसा से घृणा करते हैं, दिन में खाना खाते हैं, सूर्योदय से पूर्व भोजन नहीं करते, गूलर आदि कीड़ों वाले फलों को भी नहीं खाते, श्री पार्श्वनाथ को पूजते हैं और उन्हें अपना कुलदेवता मानते हैं। इनके यहां एक कहावत प्रसिद्ध है :

ढोह डूमर (गूलर) पोढ़ो घाती
ये चारों नहीं खाये सराक जाति।

मि. रूवकूपलैण्ड

इनकी (सराकों की) प्राचीन कारीगरी के बहुत से चिह्न अवशेष हैं जो इस देश में सबसे प्राचीन हैं। अनेकों जैन मन्दिर और जैन तीर्थंकरों, गणधरों, श्रमणों, श्रावक-श्राविकाओं की मूर्तियां आज भी इस प्रदेश में सर्वत्र इधर-उधर बिखरी पड़ी हैं जो कि सराक लोगों के द्वारा निर्मित तथा प्रतिष्ठित कराई गई थीं।

A. S. B. 1868 N. 35

They are represented as having great scruples against taking life They must not eat till they have been the sun and they Venerate Parasanath.

The Jain images are a clear proof of the existence of the Jain religion in their parts in old time. (A. S. B. 1868)

सिंहभूम में तांबे की खानें व मकान हैं जिनका काम प्राचीन लोग करते थे। ये लोग श्रावक थे। पहाड़ियों के ऊपर घाटी में व बस्ती में बहुत प्राचीन चिह्न हैं। यह देश श्रावकों के हाथ में था।

सिंहभूम श्रावकों के हाथ में था जो अब करीब-करीब नहीं रहे हैं। परन्तु तब वे बहुत अधिक थे। उनका असली देश शिखर भूमि (सम्मेद शिखर पर्वत के आस-पास की भूमि) और साकेत कहा जाता है। (जर्नल एसि. 1840 सं. 676)

श्रावक या गृहस्थ जैनों ने जंगलों में घुसकर तांबे की खानें खोजीं जिसमें उन्होंने अपनी शक्ति व समय खर्च किया।

A.S.B. 1869 p. 179-5

यह सब तरफ बात मानी हुई है कि सिंहभूम का एक भाग ऐसे लोगों के पास था जिन्होंने अपने प्राचीन चिह्न मानभूम जिले में रख छोड़े हैं। ये वास्तव में बहुत ही प्राचीन लोग थे जिनको श्रावक या जैन कहते हैं। कोलहेन में भी बहुत सरोवर हैं जिनको 'हो' जाति के लोग 'सरायक सरोवर' कहते हैं।

(बंगाल एथनोलोजी—कर्नल डैल्टन)

ब्राह्मण और उनके मानने वालों ने सातवीं शताब्दी के बाद इन श्रावकों को अपने प्रभाव में दबा लिया जो कुछ बचे व उनके धर्म में नहीं गए वे इन स्थानों

से दूर चले जाकर रहे। मकानों को देखने से संभव होता है दसवीं शताब्दी में ब्राह्मणों का जोर हो गया था। परन्तु बसंत विलास से विदित होता है कि चालुक्य विरध वाला मन्त्री वस्तुपाल (ईस्वी सन् 1219-1233) जब इधर तीर्थयात्रा के लिए आया था उस समय लाटा, गादा, मारू, ठाला, अवन्ति एवं बंग के संघपति इससे मिले थे। इस प्रसंग से पता चलता है कि तेरहवीं शताब्दी में भी गादा तथा बंग में संगठित जैन संघों के नेता विद्यमान थे और सोलहवीं शताब्दी के बीच में कभी भूमिज लोग पश्चिम उत्तर से नये आए हुओं की सहायता से उन्नति में बढ़े होंगे और उनको (श्रावकों को) जड़मूल से नष्ट किया होगा। श्रावकों को सता कर कोलेहान से भी निकाला था। (जर्नल एसि. 1840 नं. 696)

सराकों के कुलदेवता पार्श्वनाथ का ऐतिहासिक महत्व

There can not larger be any doubt that Parsava was a historical personage According to the Jain Tradition he must have lived a hundred years and died 250 years before Mahavira His period of activity, therefore corrosponds to the 8th Centurey B.C.

The parents of Mahavira were followers of religion of Parsava. . The age we live in, there have appeared 24 prophets of Jainism. They are ordinerily called Tirthankras with the 23rd parasarnath we enter into the religion of history of reality. (Introduction to his essay of Jain Bibliography) Mr. Geriton French Scholar

There is evidence to show that so far back as the first Century B. C there were people who were worshipping Rishabhdeva, the first Tirthankra. There is no doubt that Jainism prevailed even before Vardhman or Parasavnath.

Dr. Radha Krishnan, Indian Philosophy, Vol. I, P. 287

भगवान पार्श्वनाथ ने अंग, बंग और कलिंग में जैन धर्म का प्रचार किया था। धर्म प्रचार के लिए वे ताम्रलिप्त बन्दरगाह से कलिंग गये। मार्ग में वे कोपकटक में धन्य नामक एक गृहस्थ के घर ठहरे थे। इस घटना को स्मरणीय रखने के लिए कोपकटक को धन्यकटक कहा जाने लगा। उस समय मयूरभंज में कुसुम्ब नामक क्षत्रिय का राज्य था और वह राजवंश भगवान पार्श्वनाथ द्वारा प्रचारित धर्म से सम्मानित था।

(जैन क्षेत्र समाज, भूमिका, डॉ. नागेन्द्र नाथ बसु)

सम्राट करकण्डु भगवान पार्श्वनाथ के शिष्य थे।

(Indian Culture, Vol. IV, P. 319)

बिहार, बंगाल, उड़ीसा का पुरातत्व

The influence of the Jainism in the district of Singhbhum is also borne out by many existing ancient relics at Benusagar and other areas. The ruins of the temples and the pieces of ancient sculpture. .to the 7th Century

A.D. Jainism in Bihar, Page 64

Bihar has been the centre of our ancient history for centuries. It has been the birth place and has served as a stage for the activities of great heroes in every department of human endeavour–art, science, literature, philosopy religion, statesmanship and war.

Introduction Pay 11 Shriparkashji (Jainism in Bihar)

Older shrines of the middle ages with numerious Jain images, are also found but no longes used for worship

Jainism in Bihar, P C Raychoudhery, p. 94

मध्य भारत, उत्तर प्रदेश तथा बिहार में अनेक जैन मूर्तियां प्राप्त हुई हैं और हजारों कांस्य मूर्तियां पश्चिमी भारत की स्थानीय कला शैली से मिली हैं जिनके अध्ययन से ज्ञात होता है कि राजस्थान की भांति ही बिहार तथा बंगाल में भी जैनियों की अपनी उत्कृष्ट शैली थी।

पर्सी ब्राउन (इण्डियन आर्कीटेक्चर)

दी टैम्पल सीटिज ऑफ दी जैन्स

ह्वेनसांग के अनुसार–बाराभुम परगना के बड़ा बाजार नामक स्थान तक भगवान महावीर भ्रमण करने गए थे। बलरामपुर, बोराम, चंदनकिआरी, पाकवीरा, एधपुर, दारिका चर्रा, दुल्मी, देयली, भवानीपुर, अनई, कटरासगढ़, चेचगांवगढ़ आदि छोटापुर अनेक स्थानों में जैन अवशेष भरे पड़े हैं जिनका जैन धर्म के इतिहास में अपना एक विशेष महत्त्व है।

उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त सभी स्थानों में आज भी सराक-बहुल क्षेत्र हैं।

परीक्षा करने से बंगाल के धर्म में, आचार में और व्रत में जैन धर्म का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। जैनों के अनेक शब्द बंगाल में प्रचलित हैं। प्राचीन बंगाली लिपि के बहुत से शब्द विशेष तौर से युक्ताक्षर देवनागरी के साथ नहीं मिलते, परन्तु प्राचीन जैन लिपि से मेल खाते हैं।

आ. क्षितिमोहन सेन–विश्ववाणी का जैन संस्कृति अंक, पृ. 204

पुरुलिया से 10 मील कंसाई नदी के तट पर बैजनाथ मन्दिर बनाया गया है। इसमें नग्न तीर्थंकर मूर्तियां अंकित हैं जो कि जैन तीर्थंकरों की हैं।

(जर्नल एसियाटिक सोसाइटी नं. 35, Vol. I, सन् 1866, pp 186)

मानभूम में खास पहाड़ी जो 3407 फुट ऊंची है पारसनाथ हिल के समान है। यहीं सुवर्णरिखा नदी तट पर पुराना नगर डलमी या दयापुर डलमी है। यहां जैनियों के खण्डहर हैं। एक विक्रमादित्य का किला है। यही 9 व 10वीं सदी में जैनियों की बस्ती थी।

डलमी से उत्तर-पश्चिम 10 मील देवली गांव में करण वृक्ष के नीचे बहुत से मन्दिरो के चिन्ह अब भी मौजूद हैं। ये सब जैनियों के हैं। सबसे बड़ी मूर्ति अरहनाथ की है। 13 फुट ऊंची है। मस्तक के दोनों और जैन मूर्तियां हैं। यह मन्दिर बडा और सुन्दर था। चारों कोनो पर चार मन्दिर थे जिनमें से दो अब भी विद्यमान हैं। यहां से 1.5 मील पर वृक्ष के नीचे एक सर्प सहित नग्न जैन मूर्ति है व दो छोटी ओर है ईचागढ़ के पास। देवलटाण्ड में भी प्राचीन जैन चिन्ह हैं।

आर्किलोजिकल सर्वे इण्डिया रिपोर्ट, Vol VIII, pp 186 और
जर्नल एसि. सो. बंगाल 1866, Vol. 35, p 1

वर्धमान के नाम पर ही बांगलादेश के मानभूम, सिंहभूम और वर्द्धमान जिलों के नाम पड़े हैं।

(आई. एच. क्यू. 4, पृष्ठ 44, साहित्य परिषद पत्रिका 1322, पृष्ठ 5, जे. बी. ओ. आर. एस. 1927, पृष्ठ 90)

वीरभूम, बांकुड़ा आदि अनेक स्थानों से प्राप्त जैन मूर्तियों को एवं पुरातत्व सामग्री को देखकर श्री आर. डी. बनर्जी ने इसे जैन प्रभाव वाला क्षेत्र कहा है। (ज्ञातव्य है कि इन स्थानों पर आज भी शताधिक ग्राम सराकों के हैं।)

All the Jain images belongs to the Digambar sect
(Studies in Jaina Art, p 26, Dr Umakant Shah Premanand Shah Banda)

A number of inscriptions on the pedestals of some of the images have been found They have not yet been properly deciphered or studied A proper study of the inscriptions and the images supported by some excavations in well-identified area of Jaina Culture will no doubt throw a good deal of light on the history of culture in this part of the country extending over two thousands years.

(P C Roychoudhary, Jain Antiquities in Manbhum)

It is now almost forgotten the district of Manbhum in Chotanagpur Division of Bihar had once been a great centre of Jainism.

P. C Roychoudhary

There is a theory that the Chola soldiers on there way to the expedition under Rajendra Choladeva and on the return back of the defeating Mahipal of the Bengal near about 1023 A.D. has destroyed many of the Jaina temples and images in Manbhum district.

Jainism in Manbhum, Acharya Bhikbhim Somantı Gradih, IIIrd Vol., p. 25

इनके अतिरिक्त कलकत्ता, पटना और भुवनेश्वर के संग्रहालयों में इन क्षेत्रों से प्राप्त जैन प्रतिमाएं रखी हुई हैं। साथ ही अनेकों स्थानों पर खण्डित-अखण्डित जैन प्रतिमाएं, ध्वस्त मन्दिर जैन प्रतीक बिखरे पड़े हैं जिनमें प्रमुख हैं—बिहार में गया जिले के अन्तर्गत पचार पहाड़ी, ब्रह्मजूनी पहाड़ी—जिन्हें देखकर कनिंघम साहब ने लिखा है—यहां की मूर्तियां प्रगट रूप से जैनियों की हैं।

हजारी बाग में पारसनाथ पर्वत एवं कलुहा पहाड़, भद्दलपुर यहां अनेक प्राचीन जैन मन्दिर एवं जैन प्रतिमाएं हैं।

बंगाल में मानभूम के अतिरिक्त बलरामपुर, बोरम, दारिका, दर्रा, करतासगढ़, पवनपुर, पांचेत या पांचकोट पार, तेलकूपी पंखाग्राम, बरा बाजार में अनेक प्राचीन अवशेष हैं। जिला हुगली, मेदिनीपुर, खुलना में भी अवशेष हैं।

सिंहभूम के अतिरिक्त बेनूसागर, कोल्टन, रुआम, हांसी, हुकंडी, देवलडीह, नवाडीह, तमाड़ में प्राचीन स्मारक हैं।

मयूरभज, कोपकटक, बरसई, नीलगिरि में पुण्डाल, डोमगांधार तारिपदा, बाजसाई, रानीबन्ध, बालासर, भीमपुर, किंचिग आदि पुर में पर्याप्त जैन चिह्न हैं।

उड़ीसा के पुरी जिला में उदयगिरि, खण्डगिरि एवं नीलगिरि तो महत्त्वपूर्ण हैं ही इनके अतिरिक्त धौली, तोसाली, पीपजीधाना में जैन मन्दिर एवं जैन प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं।

कटक जिला में अगसिया पहाड़ी, छातिया पहाड़ी, चांदवर, जजपुर, रत्नगिरि से जैन प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं।

पुरी में मन्दैल नामक स्थान से सुन्दर प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं।

पूज्य उपाध्याय श्री का पावन प्रवचन

बंगाल, बिहार, उड़ीसा के क्षेत्र हमारे तीर्थंकरों के वर्षों तक विहारस्थल रहे हैं, वर्तमान में ये ही हमारे सराक बन्धुओं के आश्रय स्थल हैं। इन्होंने विधर्मियों के अत्याचार, दबाव सहने पर भी, गरीबी से ग्रस्त होने पर भी अपने परम्परागत जैनधर्म को नहीं छोड़ा। अपने जैन संस्कारों को जीवित रखा है, सराक जैन हैं, लेकिन जैनधर्म की मूलधारा से कटने के कारण उनकी स्थिति बड़ी दयनीय बन गई है। आज जैन समाज को स्वस्थ एवं संगठित बनाये रखने के लिए इन उपेक्षित एवं अभावग्रस्त सराकों का उत्थान आवश्यक है। रांची सिंहभूम में बिहार के मध्य उनके द्वारा संरक्षित आदर्शों को देख मुझे सुखद आश्चर्य हुआ, उनमें परम्परागत संस्कृति संस्कार वैभव आज भी जीवन्त हैं, यदि आज हम इस क्षेत्र में सदियों से निवास कर रहे सराकों की ओर से दृष्टि हटा लेते हैं तो हमारे तीर्थंकरों द्वारा निर्मित अहिंसा की नींव हिल जाती है जिस पर पूर्व भारत की जैन संस्कृति का भव्य मन्दिर खड़ा है। साहित्य के माध्यम से भी सराक क्षेत्र का समुचित ज्ञान जनमानस को मिल जाता है इसलिए ऐसे ट्रेक्ट प्रकाशित होने चाहिएं।

इतिहास, धर्म, संस्कृति, राजनीति, अर्थशास्त्र और भौगोलिक चाहे किसी भी दृष्टि से देखें, बिहार आधुनिक एवं प्राचीनतम भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और कई अर्थों में तो एकदम विशिष्ट राज्य है। इसी राज्य ने देश के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक वैभव को नया पृष्ठ दिया। नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय, मगध जैसा राज्य जिसने सम्पूर्ण विश्व में कीर्ति पताका फहराई इसी राज्य का स्वर्णिम इतिवृत्त है। हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों से लेकर आदिवासी जनजातियों, सराक, संथाल, खरवार मुण्डा आदि क्षेत्रीय जातियों से समृद्ध विभिन्न संस्कृतियों को संजोने वाला, भारत के महत्वपूर्ण तीर्थों, इतिहास प्रसिद्ध नगरों, कला, वैभव, पुरातत्व और इमारतों आदि को बनाये रखने वाला, एक साथ बनीय सभ्यता से लेकर महानगरीय औद्योगिक विशेषताओं से परिपूर्ण रहने वाला यही राज्य है। भाषा, खान-पान, पहनावा, रहन-सहन आदि से लेकर अर्थ वैषम्य और विविधतामयी एकता भी सबसे अधिक इसी राज्य में मिलती है। एकदम सत्य यह है कि अपने एक-एक वैशिष्ट्य, एक-एक क्रिया-कलाप और एक-एक बात से अतीत से लेकर आज भी यही राज्य भारत की अंगूठी में जड़ा कीमती नग बना हुआ है। यही वह राज्य है जहां चिश्ती

जी की दरगाह, गोविन्द सिंह जी की कर्म-स्थली, बुद्ध का विहार और भगवान् महावीर का जन्म एवं विहार तथा श्री पार्श्वनाथ का निर्वाण हुआ। यहां की कोयले और अभ्रक की खानें, लौह इस्पात के कारखाने भारत की श्री वृद्धि में आधार बने हुए हैं। बिहार राज्य ही के नामकरण में सन्तों का विहार प्रमुख कारण माना जाता है, जैन धर्मावलम्बियों का तो बिहार राज्य अनुपम तीर्थ है। इसका कण-कण पूज्य है। भगवान् महावीर का वर्षों तक विहार इस क्षेत्र में हुआ है आज भी यहां अवस्थित क्षेत्र और उसके नाम से मण्डित सिंहभूम, बिरभूम उन्हीं की यशोगाथा के जीवन्त प्रतीक हैं। वर्तमान में ये भगवान् महावीर के नाम से सज्जित नगरों में भगवान् महावीर की अवस्थिति है ? इस क्षेत्र की जनता में उनके प्रति कितनी श्रद्धा है प्रस्तुत कृति में यही जानने, विचारने, समझने का लघु प्रयास किया गया है। सत्य यह भी है यदि भगवान् महावीर की श्रमण परम्परा के समर्थ सच्चे संवाहक पूज्य उपाध्याय ज्ञानसागर जी महाराज ने वहां रहकर प्रत्यक्षतः सब न देखा, समझा होता तो निश्चित था कि समाज तीर्थंकरों की इस जन्मस्थली एवं विहारस्थली का अल्प समय में ही अन्य संस्कृति में विलीन होते देखने की पीड़ा भोगती और स्थिति इतनी असामान्य हो जाती कि चाहकर भी पुनः इस धरा पर वीर के शासन और सिद्धान्तों को स्थापित नहीं किया जा सकता था।

आज यदि इस सराक समाज को पहचाना गया है तो इनकी ही परम्पराओं के माध्यम से। आस्था और विश्वास, लक्ष्य और मूल्य, साधना और क्रिया में अतीत से वर्तमान तक चली आयी निरन्तरता की धाराओं को ही तो परम्परा कहते हैं। ये धाराएं समय द्वारा परीक्षित होती हैं, उपयोगी और उपोदय भी। परम्परा से ही समाज की पहचान बनती है उनके माध्यम से समुदाय, विचार और व्यवहार एक स्थिर आधार पाते हैं।

इन क्षेत्रों की संस्कृति के प्रदीर्घ इतिहास के सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि अतीत के विभिन्न युगों में अनुकूल परिस्थिति प्राप्त कर प्रतिकूल धारा में पुरुषार्थ, स्वत्व एवं स्वाभिमान की रक्षा करते हुए ये सराक अपनी सांस्कृतिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने में समर्थ सिद्ध हुए हैं।

भगवान् पार्श्वनाथ और भगवान् महावीर दोनों ने ही इस क्षेत्र को अपने विहार और देशना से पवित्र किया है। तीर्थंकर अनुपम और असाधारण होते हैं। दोनों तीर्थंकरों का लोकव्यापी प्रभाव था ही। एक तीर्थंकर को उनके अनुयायी अब तक अपना कुलदेवता मानते हैं और दूसरे तीर्थंकर के विहार की स्मृति सुरक्षित रखने के लिए जनता ने समूचे प्रदेश का नाम ही बिहारप्रान्त रखकर विशेष स्थानों का नाम सिंहभूम, विरभूम, वर्द्धमान आदि रख दिया।

सराक जाति में जैनधर्म का प्रचार सिंहभूम, धनबाद और रांची जिलों में विशेषतः हुआ। इस क्षेत्र के सराकों के साथ जैनों का सम्पर्क भी अविच्छिन्न रूप से चल रहा है। पूज्य उपाध्याय श्री जी की प्रेरणा से यहां मन्दिरों का भी निर्माण कार्य चल रहा है, इसलिए दिगम्बर आम्नाय के अनुसार पूजन, णमोकार मंत्र का जाप, आदि करते हैं। ये सराक बन्धु अपने नाम के अन्त में जैन श्रावक भी लगाते हैं।

बिहारप्रदेश प्राचीन काल में मगध, अंग, वैशाली, संघ आदि में बंटा हुआ था। तीनों ही राज्य प्रबल थे। श्री महावीर के उत्तरकाल में मगध राज्य अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक प्रबल हो गया था। वैशाली और अंग के राज्यों पर मगध का आधिपत्य हो गया तब यह प्रदेश मगध कहा जाने लगा। मनुस्मृति, महाभारत आदि हिन्दू ग्रन्थों में महावीर से पूर्वकालीन इस प्रदेश का कोई एक नाम उपलब्ध नहीं होता बल्कि अंग और मगध ये दो नाम मिलते हैं किन्तु शिशुनागवंशी अजातशत्रु ने अंग, वैशाली आदि राज्यों को सदा के लिए समाप्त कर दिया। तब राज्य शक्ति की अपेक्षा इस प्रदेश को मगध कहने लगे। किन्तु यह नाम अधिक समय तक नहीं चल पाया, अजातशत्रु के उत्तराधिकारी इस राज्य को छिन्न-भिन्न होने से नहीं बचा पाये। तब फिर मगध नाम छोड़ देना पड़ा। वस्तुतः प्रदेश का नाम मगध नहीं रहा। मगध में तो केवल वर्तमान पटना और गया जिले सम्मिलित रहे हैं। उसकी राजधानी पहले राजगृह और बाद में पाटलिपुत्र रही है। इसलिए इस प्रदेश पर जब मगध का राज्य हो गया तो इसे मगध कहा जाने लगा किन्तु वह प्रदेश का नाम न होकर राज्य का नाम रहा। तब प्रदेश का नाम क्या था ? प्रदेश को बिहार नाम कब मिला ? ये सब शोध के विषय हैं। यह निर्विवाद है कि बिहार नाम स्वयं में इतिहास का वाचक है। बिहार में भारतीय संस्कृति झलकती है, एक युग विशेष प्रतिबिम्बित होता है और साथ ही ऐसा भी बहुत कुछ जो भौगोलिकता से पृथक् धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं दार्शनिक क्षेत्र के अनेकानेक पहलुओं को स्पर्श करता है।

जिन्होंने भी सराक क्षेत्र देखा होगा, उनके विषय में सुना होगा निःसन्देह उन्हें भगवान् महावीर, भगवान् पार्श्वनाथ स्मरण हो आए होंगे—वही प्राकृतिक सुषमा, वही सारा पर्यावरण, वही शुद्ध-बुद्ध चेतना, वही संस्कारी सामाजिक जीवन है। यहां के अरण्य, धरातल अभी श्री वीर को विस्मृत नहीं कर पाये, न ही श्री पार्श्वनाथ को। धूप, शीत, वर्षा का प्रकोप सहना, अभावों में भी प्रसन्नता का अनुभव, सरल, सादगी पूर्ण निश्छल जीवन उन्होंने वहीं तो सीखा था। कुल परम्परा जीवित है। भगवान् महावीर के श्रमशील पुरुषार्थी संदेश को यह सराक समाज अपने अन्दर धारण किये

हुए है। कोई घर पक्का नहीं, परम्परागत ढंग की झोपड़ियां, खपरैल के बने मकान हैं। कहीं-कहीं इन सराकों के लिए खुले हैं प्राइमरी स्कूल शिक्षित, सभ्य बनाने को। इन्हें स्कूल ग्राम पंचायत और ग्राम विकास अधिकारी के माध्यम से कितना सभ्य बना पाये यह बात पृथक है, पर इनके मासूम चेहरे आगन्तुक को देखते ही खिल उठते हैं। गर्व से कहते हैं भगवान् के कृषि का संदेश दिया सो करते हैं, खेती-बाड़ी में लगे हैं। यह धरा हमारा तीर्थ है। श्री पार्श्वनाथ के आशीष से सब कुछ सहज है। प्रसन्न मुख हैं। आकाश तले बिखरी यह धरा ज्यों की त्यों है। इसके ऊपर जो कुछ भी उथल-पुथल हुई वह निःसन्देह चिन्तनीय है।

किसी प्रदेश, किसी अंचल में रहे मानव हैं उसके सुख-दुःख, उल्लास-वेदना, उसकी भावनाएं सभी कुछ समान हैं। वह अपनी प्रसन्नता में मुस्कान बिखेरता है और उसके दुःख-दर्द की कहानी उसके आंसू ही कहते हैं फिर भी जीवन बहुरंगी है। भौगोलिक परिस्थितियां, सामाजिक परम्पराएं तथा रीति-रिवाज और समाज विशेष का आर्थिक गठन यह सब मिलकर प्रत्येक अंचल के जन-जीवन को विशिष्ट स्वरूप देते हैं। यही वे आधार हैं जिनसे लोक संस्कृति की विशिष्ट पहचान होती है अथवा जिन पहचान के माध्यम से वे अद्यतन स्वयं को संगठित कर जीवित रखे हुए हैं ऐसा ही है एक क्षेत्र 'सराक'—जिसकी अपनी विशिष्ट संस्कृति है। क्षेत्रीय आचार-विचार से अप्रभावित हजारों वर्षों से शुद्ध सात्विक संस्कारों में रचे-बसे इनके सभ्य, शुद्ध एवं धार्मिक आचरण को देखकर ही शोधकर्ता इस भूमि के नामकरण और इन्हें एक-दूसरे का पर्याय मानते हैं। सर्वविदित है भगवान् महावीर अपने काल में पर्याप्त प्रभावक धर्मपुरुष थे। जिनका धर्म जातीयता से कभी नहीं बंधा। वह धीरे-धीरे राजकुलों से झोपड़ी तक फैला, संभ्रान्तों से दरिद्रों तक पनपा।

महावीर के सत्य शील मनुष्य, मनुष्य के अघटित भेदों के विरुद्ध क्रान्ति जगाई और उनका दयालु हृदय दुःखी, गरीब, असहाय लोगों की सहायता करने को तत्पर बना। उनकी विश्वविस्तीर्ण दया ने दुःखी हो रहे जगत को आत्मसुधार और पवित्र जीवन का सन्देश पहुंचाने की प्रेरणा दी और प्राणी मात्र में विश्वबन्धुत्व की भावना का अनुशीलन करने का प्रयास किया। पूर्व समय में यूरोप में जैसे ईसाई धर्म फैला था वैसे ही धीरे-धीरे भारतवर्ष में जैनधर्म भी प्रचार पाने लगा और वह भी यहां तक कि श्रेणिक, कुणिक, चन्द्रगुप्त, सम्प्रति, खारवेल, बिम्बसार आदि अनेक राजाओं तथा भारतवर्ष के हिन्दूराज्य की प्रारम्भिक विख्यात शक्तियों ने जैनधर्म स्वीकार किया।

भगवान् महावीर ने विहार भी बहुत स्थानों पर किया—मगध और अंग देश के राज्य में आए हुए उत्तर और दक्षिण बिहार के लगभग सभी नगरों में उन्होंने

विहार किया, प्रमुखतया वे मगध और अंग में ही रहे। उनके अनेक चातुर्मास वैशाली, राजगृही, चंपा, मिथिला, श्रावस्ती में हुए। प्रसिद्ध विद्वान् याकोबी कहते हैं :

"श्रावस्ती जिसको सहेत-महेत भी कहते हैं, जैनों की चन्द्रिकापुरी या चन्द्रपुर है।" उस काल में उस समय में श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम चातुर्मास अस्थिक ग्राम में, तीन चातुर्मास चंपा और पृष्ठ चंपा में, बारह वैशाली और वाणिज्य ग्राम में, चौदह राजगृह और नालन्दा के उपनगर में एक श्रावस्ती में और एक पावानगरी में राजा हस्तिपाल की रज्जुशाला (लेखनशाला) में किया था (याकोबी पृ. 244) से हुई।

"श्री महावीर प्रभु बारह वर्ष से कुछ अधिक काल तक लाढ़ वज्रभूमि और शुभ्रभूमि में और बंगाल में आज के राढ़ प्रदेश में भ्रमण करते रहे थे।"

शार्पेंटियर दी ज्योग्रॉफिकल डिक्शनरी ऑफ एशियेण्ट एंड मैडिवल इंडिया

भगवान् महावीर ने व्यक्ति और समाज के उद्धार के लिए, चारों पुरुषार्थों को सम्यक् ढंग से चरितार्थ करने के लिए राजनीति और धर्म को गतिशील बनाया उन्होंने धर्म की व्याख्या ही नहीं की अपितु उसको गति भी दी थी।

भगवान् महावीर का लोकव्यापी प्रभाव

भगवान् महावीर के धर्म विहार और प्रभाव का प्रामाणिक इतिहास मिलता है। आचार्य जिनसेन ने 'हरिवंश पुराण' में इस इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश डाला है। हरिवंश पुराण में वर्णित यह इतिहास प्रामाणिक तो है ही, उससे भारत के सभी भागों में भगवान् महावीर के अलौकिक विस्तार पर भी अधिकृत प्रकाश पड़ता है। उसका सार इस प्रकार है–

राजा श्रेणिक प्रतिदिन तीर्थंकर भगवान् महावीर की सेवा करता था। वह गौतम गणधर को पाकर उनके उपदेश से सब अनुयोगों में निष्णात हो गया था। उसने राजगृह नगर का जिन मन्दिरों से व्याप्त कर दिया। वर्द्धमान जिनेन्द्र ने पूर्वदेश की प्रजा के साथ-साथ मगध देश की प्रजा को प्रबुद्ध कर विशाल मध्य देश की ओर गमन किया। मध्य देश में धर्मतीर्थ की प्रवृत्ति होने पर समस्त देशों में धर्म विषयक अज्ञान दूर हो गया। भगवान् महावीर ने भी वैभव के साथ विहार कर मध्य के काशी, कौशल, कुसन्ध्य, साल्व, त्रिगर्त, पंचाल, भद्रकार, पटच्चर, मौक, मतन्य, कनीय, सूरसेन और वृकार्थक समुद्रतट के कलिंग, कुरूजांगल, कैकेय, आत्रेय, कम्बोज, वाल्हीक, यवन, सिन्ध, गान्धार, सौवीर सूर, भीरू दरौरूक वाडवान, भारद्वाज और क्वाय तोय तथा उत्तर दिशा में तार्प, कार्प और प्रच्छाल आदि देशों को धर्म से युक्त किया।

श्वेताम्बर आश्रमों के अनुसार भगवान् महावीर के 42 विरक्त वर्षों में चातुर्मास इस प्रकार हुए, अस्थिग्राम में 1 और पृष्ठ चम्पा में 3, वैशाली और वाणिज्य ग्राम में 12, राजगृह और नालन्दा में 14, मिथिला नगरी में 6, भद्दिया नगरी में 2, आंलभिका और श्रावस्ती में 1, वज्रभूमि में 1 और पावापुरी में 1–इस प्रकार भगवान् महावीर ने कुल 42 चातुर्मास किए।

इतिहासकार भी यह स्वीकार करते हैं कि भगवान् महावीर का प्रभाव असामान्य रूप से तत्कालीन लोक जीवन पर पड़ा था। राजाओं ने भगवान् के चरणों में शीश ही नहीं झुकाया अपितु तन-मन-धन से स्वयं को समर्पित भी किया। राजाओं में प्रमुख हैं श्रेणिक, श्रेणिक बिम्बसार के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हैं। राजगृही को स्वयं बसाया था और राजधानी बनाया था केवल श्रेणिक ही नहीं पूरा का पूरा परिवार भगवान् महावीर से प्रभावित था। श्रेणिक के पुत्र वारिषेण, चिलात

और अभयकुमार तथा महादेवी चेलना भगवान् की भक्त थी और इन सबने भगवान् के पास यथासमय दीक्षा ली।

वैशाली गणतन्त्र के राजा चेटक जिनकी सात पुत्रियां और दस पुत्र थे, जैन धर्मानुयायी थे। यह बात जैन शास्त्र, बौद्ध ग्रन्थ एक स्वर से स्वीकारते हैं। राजा चेटक ने अपनी पुत्रियों के विवाह जैनधर्म अनुयायी राजाओं से ही किए। बड़ी पुत्री प्रियकारिणी (त्रिशला) का कुण्ड ग्राम के राजा सिद्धार्थ के साथ विवाह किया, प्रभावती–सिन्धु सौवीर के राजा–उदायन के लिए दी, सिप्रादेवी (मृगावती) वत्स नरेश शतानीक को दी गई। सुप्रभा (शिवादेवी) दशार्ण देश के हेमवच्छ के नरेश दशरथ को दी गई। राजा श्रेणिक उस समय बौद्ध धर्मावलम्बी थे, श्रेणिक के पुत्र अभय कुमार की योजना से चेलना का विवाह श्रेणिक से हुआ वह भगवान् महावीर के ही कालान्तर में अनुयायी बने। शेष दो पुत्रियां ज्येष्ठा और चन्दना दीक्षित हो गईं।

इन सब राजाओं के अतिरिक्त हेमांगद देश के राजपुर नगर के नरेश जीवन्धर कुमार जैन-धर्मानुयायी थे। भगवान् महावीर के कल्याणकारी उपदेश सुनकर उन्हें भोगों मे अरुचि हो गई। वे भगवान् के समीप मुनि बने। उनके साथ उनके भाई नन्दाढ्य, मधुर आदि ने भी दीक्षा ली। उस समय अनेक राजकुलों में जैनधर्म था। अंग, बंग, कलिंग, मगध, वत्स, काशी, कौशल, अवन्ती, शूरसेन, आच्छत्र, सुदूर सिन्धु सौवीर, चेर, पांड्य आदि देशों के राजा भगवान् के भक्त थे। वज्जि संघ, मल्ल संघ, यौधेय आदि गणतन्त्रों में भगवान् महावीर की मान्यता थी।

अतः निःसन्देह इस सिंहभूम, विरभूम के नामकरण का महत्व सराक शोध के लिए व्यापक महत्व रखता है। वर्षों तक इस क्षेत्र में विहार का ही प्रतिफल है कि हजारों वर्ष पश्चात भी संस्कारों का प्रवाह धूमिल नहीं हुआ है।

यों तो विश्व का कोई भी समाज जो सर्वदा सहज, सामान्य एवं समृद्ध रहे। समाज भी अन्ततः मनुष्यों का समूह होता है, विश्व में ऐसे अपवाद कम होते हैं जो कभी तनावग्रस्त न हों, कभी परिवर्तित न हों। सराक समाज भी इससे पृथक नहीं है। वह भी ऐसा समाज है जो आज संकटों, विपन्नता एवं परिवर्तन के चक्र में फंसा है। यह वही समाज है जिसका इतिहास में गौरव श्रद्धापूर्ण स्थान रहा है किन्तु दर्द यह है कि घात-प्रतिघातों से जितना आहत यह समाज हुआ है शायद ही कोई और हो। बार-बार सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक आक्रमणों ने इसकी कमर तोड़ी है, सांस्कृतिक एकात्मकता पर गर्व करने वाला यह समाज अपने ही क्षेत्र में टुकड़े-टुकड़े बंट कर रह गया है। जो बहक गये वे कुछ और बन गए जो नहीं बहके वे रह गये। आज के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन में इस अपर्याप्त

आत्मविश्लेषण और अपनी जड़ों से विच्छिन्न वर्तमान की गुंजलकों को समझना कठिन तो है पर असंभव जरा भी नहीं है।

वर्तमान के इस संस्कारी सराक समाज के पिछड़ेपन के लिए जब हम विदेशी दासता और दुर्भाग्य का उदाहरण देते हैं तो हम सच के कुछ टुकड़ों को सम्पूर्ण सत्य बनाने की दुश्चेष्टा का बौद्धिक खेल खेलते होते हैं इससे कुछ आगे बढ़कर हम इनके जीवन में निरन्तर विकराल होती समस्याओं पर बस विलाप ही करते रह जायेंगे।

जहां तक हमारी बात है हमने अपनी ऐतिहासिक विरासत के उन विस्मयकारी सूत्रों और तंतुओं को विस्मृति के गह्वर में डाल दिया है जो हमें न सिर्फ हमारी पहचान और अखण्डित एकता देते रहे बल्कि सारे सांस्कृतिक, धार्मिक आक्रमणों को झेलने की प्राण शक्ति भी। हमारा वर्तमान यदि जरा भी महावीर युग से नाता बनाये रखता तो आज सराक समाज इतना उपेक्षित न होता। पूज्य ज्ञानसागर जी महाराज ने सराक समाज की उस प्राणशक्ति को, उस सदियों पुरानी अंतर्लय को प्रत्यक्षतः पुनर्व्याख्यायित किया और गंभीर आशयों वाली वह मनोभूमि तैयार की जहां कोई हीन ग्रन्थि नहीं है बल्कि सबमें समानता और एकता की विवेकपूर्ण स्थिति बिनी है। सहस्राब्दियों, शताब्दियों के ये श्रेष्ठ मानव संस्कार मूल्यहीन होकर यों बिखर न जाते।

हमें गम्भीरता से सोचना होगा कि सराकों के इन बच्चों को हम कैसे समर्थ बनायें, ऐसे शिशुओं की शिक्षा का दायित्व किस प्रकार लें, महिलाओं का आर्थिक विकास कैसे हो ? उनके जीवन स्तर में सुधार कैसे हो ?

आश्चर्य की बात यह भी है जो लोकतन्त्र आज पिछड़े हुओं का समर्थक बनता है, उसकी भी दृष्टि इन पर नहीं जाती। इन्हें न सामाजिक न्याय मिल रहा है, न ही राजनैतिक। यदि इस स्थिति में शीघ्र सुधार न हुआ तो भारत का जैन समाज अपनी संस्कृति के और शक्ति के समीकरणों की महत्ता को अक्षुण्ण न रख पाएगा। बिहार, बंगाल और उड़ीसा का खण्डहर होता कला वैभव दूर-दूर तक मिट्टी में मिलते हुए अनेक कलापूर्ण मन्दिरों और प्रतिमाओं के ध्वंस अवशेष कौन चुन-चुन कर मस्तक पर लगाकर भविष्य में सुरक्षा की जिम्मेदारी लेगा ?

हमें सम्पूर्ण शक्ति सराकों की चेतना को विकसित कर उनके संजोए गौरव को सुव्यवस्थित करने में लगानी है।

सराकों के कुलदेवता भगवान् पार्श्वनाथ का लोकव्यापी प्रभाव

भगवान् पार्श्वनाथ को सिंहभूम या विरभूम के सराक ही नहीं अपितु समस्त सराक क्षेत्र के बन्धु अपना कुलदेवता मानते हैं। उनका व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावक था। उनकी साधना महान् थी। उनके लोकव्यापी प्रभाव का मूल कारण था कि उन्होंने सर्वाधिक स्थानों पर विहार किया। भगवान् पार्श्वनाथ का विहार जिन देशों में हुआ था, उन देशों में अंग, बंग, कलिंग, मगध, काशी, कौशल, अवन्ति, कुरू, पौण्ड्र, मालव, पांचाल, विदर्भ, दशार्य, सौराष्ट्र, कर्नाटक, कोकण, लाट, कच्छ, कश्मीर, सोण, पल्लव और आमीर देश थे। ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं कि वे तिब्बत मे पधारे थे। भगवान् ने जिन देशों में विहार किया था, वहां सर्वसाधारण पर उनका व्यापक प्रभाव पड़ा और वे उनके भक्त बन गये।

सर्वसाधारण के राजनय वर्ग पर भी भगवान् पार्श्वनाथ का व्यापक प्रभाव था ऐसे साहित्यिक साक्ष्य और पुरातात्विक प्रमाण उपलब्ध होते हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि गजपुर नरेश स्वयंभू ने भगवान् के समीप प्रव्रज्या ग्रहण की, अहिच्छत्र के गंगवंशी नरेश प्रियबन्धु ने भगवान् के दर्शन किये और उनका अनुयायी बना। उस समय के व्रात्य क्षत्रिय राजा भगवान् पार्श्वनाथ के उपासक थे। जब भगवान् शौरीपुर पधारे तो वहां का राजा प्रभंजन उनका भक्त बना गया।

वाराणसी नरेश अश्वसेन और महारानी वागादेवी ने भगवान् के निकट दीक्षा ग्रहण की थी। वज्जि संघ के लिच्छवी आदि आठ कुल उनके भक्त थे। उस संघ के गणपति चेटक, क्षत्रिय कुण्ड के गणपति भगवान् महावीर के पिता सिद्धार्थ भी, पार्श्वनाथ सम्प्रदाय के उपासक थे पांचाल नरेश दुर्मुख, विदर्भ नरेश भीम और गांधार नरेश नागजित श्री पार्श्वनाथ के समकालीन थे और श्री पार्श्वनाथ के भक्त थे। श्री पार्श्वनाथ के तीर्थ में उत्पन्न कलिंग नरेश करकण्डु पार्श्वनाथ के अनुयायी थे और उन्होंने तेर (जिला–उस्मानाबाद) में चरण स्थापित किए और श्री पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्तियों की स्थापना की।

इस प्रकार अनेक नरेश श्री पार्श्वनाथ के काल में भी तथा उनके पश्चात्काल में श्री पार्श्वनाथ को अपना इष्ट मानते थे। सर्वसाधारण पर भी भगवान् का कितना प्रभाव था यह आज भी बंगाल, बिहार, उड़ीसा में फैले लाखों सराकों, मेदिनीपुर जिले

के सद्‌गोपों, उड़िया के रंगिया जाति के लोगों, अलक बाबा आदि के जीवन व्यवहार को देखने से पता चलता है। यद्यपि भगवान् पार्श्वनाथ को लगभग तीन हजार वर्ष व्यतीत हो चुके हैं लेकिन फिर भी उनकी भक्ति का प्रकाश ये लोग आज तक अपने हृदय में संजोकर रखे हैं। इन जातियों के अतिरिक्त श्री सम्मेदशिखर के निकट रहने वाली भील जाति भी श्री पार्श्वनाथ की अनन्य भक्त है। इस जाति के लोग मकर संक्रान्ति के दिन श्री सम्मेदशिखर के सभी टोंकों की वन्दना करते हैं और श्री पार्श्वनाथ की टोंक पर एकत्रित होकर उत्सव मनाते हैं तथा गीत, नृत्य करते हैं। भगवान् पार्श्वनाथ की निर्वाण भूमि भी बिहार क्षेत्र में ही है। तीर्थराज सम्मेदशिखर जी आज पारसनाथ हिल के नाम से ही विख्यात है।

वीर की विरभूमि

सर्वविदित है भगवान् महावीर के पांच नाम प्रसिद्ध हैं—वीर, महावीर, अतिवीर, सन्मति एवं वर्द्धमान। वर्तमान विरभूम भगवान् महावीर के विहार क्षेत्र के अन्तर्गत रहा ही। इसमें सन्देह नहीं कि उन्हीं के जग व्यापी धर्म एवं प्रभाव को देखा यह क्षेत्र विरभूम घोषित कर दिया गया हो, खैर इतिहास कुछ भी कहे पर वर्तमान का सम्पूर्ण परिदृश्य एक स्वर से उनके सिद्धान्तों में आस्था का जयघोष कर रहा है।

विरभूम वर्तमान सर्वेक्षण से मात्र 3 ग्रामों को समाहित किए हुए है। वे हैं :

(1) भागाबांध
(2) बोलिहारपुर
(3) खड़गना।

400 के लगभग सराकों की यह विरभूम भगवान् महावीर एवं जैनत्व के आदर्शानुरूप ही है।

भागाबांध में सराकों के 8 घर, बोलिहारपुर में 14 तथा खड़गना में 12 घर हैं। तीनों ही ग्राम विकसित हैं। शिक्षा का प्रबन्ध है तथा पुराने लोग जहां कृषि को मुख्य व्यवसाय एवं आजीविका का साधन बनाये हुए हैं वहीं आधुनिक शिक्षित युवा शासकीय सेवाओं के लिए लालायित हैं। इस क्षेत्र में सर्वेक्षकों ने जिन आश्चर्यकारी तथ्यों को पाया वह मुख्यतया यह हैं कि विरभूम से कई सौ किलोमीटर दूर स्थित दुमका जिले की सामाजिक परम्पराओं में एवं विरभूम की सामाजिक परम्पराओं में आश्चर्यजनक विशेषताएं हैं। इनके खानपान पूर्णतया शुद्ध हैं, शाकाहारी हैं, पानी छानकर पीते हैं, रात्रि भोजन के त्यागी हैं। अहिंसक हैं। लम्बे अन्तराल तक संस्कृति की इस सुरक्षा का निश्चयतः आधार गहरे तक रमे हुए संस्कार ही हैं, इनके गोत्र आदिदेव हैं। लगभग 60 प्रतिशत शिक्षित समाज है। रांची जिले में स्थित 47 ग्राम सराकों के हैं। सर्वेक्षकों की टीम का यह भी कहना है कि विरभूम के सराक देखने में संभ्रान्त, वार्तालाप में सभ्य एवं मिलनसार, अतिथिप्रिय हैं। इनसे तनिक भी जैनत्व की वार्ता की जाये तो प्रसन्नतापूर्वक सुनते हैं और पश्चाताप करते हैं कि हमारे पूर्वजों ने अपनी सांस्कृतिक धरोहर को नष्ट-भ्रष्ट क्यों होने दिया, समाज के प्रति तनिक-सा विक्षोभ है कि समाज में संतुलन रहना चाहिए,

हम पूर्णतया जैन हैं, हमें समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाना चाहिए। वीर-सी विरभूम अपलक देख रही है कब पुनः वीर आकर इस बंजर धरा को अपने अमृताशीष से लहलहा देंगे, कब पुनः उनका विहार इस भूमि का भाग्योदय करेगा। इस भूमि को आवश्यकता है वीर की. वीर के पथानुगामियों की।

जब पूज्य ज्ञानसागरजी महाराज के आगमन का समाचार इस क्षेत्र में गूंजा, सर्वेक्षकों द्वारा ज्ञात हुआ कि पुनः कोई दिगम्बर साधु इस धरा को पवित्र करने पधारे हैं तो उनके हर्ष का पारावार न था। सर्वेक्षकों का अभूतपूर्व स्वागत करते हुए कह रहे थे हमारे क्षेत्र में ही सर्वप्रथम उनके चरण आने चाहिएं। यहां के युवाओं में अन्तरंग से धर्म के प्रति समर्पण है, गुरु भक्ति है, जैनधर्म की क्रियाओं को विस्तार से जानने की अभिलाषा है।

विरभूम जिला पहले वर्तमान वर्द्धमान प्रदेश का ही एक भाग था। इसी के भाग को वज्रभूम कहा जाता था। इस स्थान का नाम भी भगवान् के नाम पर उनके विहार क्षेत्र के नाम पर विरभूम पड़ गया। इस जिले के सराकों के नाम के अन्त में हद्द, रक्षित, दत्त, प्रामाणिक, सिंह, दास आदि उपाधियां लगती हैं तथा इनके गोत्र गौतम ऋषि, अन्ध्र ऋषि, अनन्त ऋषि, काश्यप और आदिदेव हैं।

जातीय स्थान की अपेक्षा इनके चार थोक या पाट हैं।

(1) पाच कोटिया–मानभूम के पांचेत राज्य के निवासी।

(2) नदी पारिया–वे सराक जो मानभूम में दामोदर नदी के दाहिने तट पर रहते हैं। विरभूमया–विरभूम के रहने वाले सराक (3) तमारिया–जो रांची के तमाड़ परगना के निवासी हैं। इसके अतिरिक्त सारकी तांती या तांती सराक भी हैं। यह जाति बुनने का काम करती है और जिला बांकुड़ा के विष्णुपुर भाग में रहती है। इनमे भी चार भाग हैं–अश्विनी, तांती, पात्रा, उत्तरकुली और मन्दरानी। संथाल परगने में इनको फूलसारकी, सिखरिया, कन्दल और सारकी तांती कहते हैं।

सिंहभूम

सिंहभूम—भगवान् महावीर का चिह्न है सिंह—सिंह ही वह पर्याय थी जिसमें भगवान् महावीर का महावीर बनने का क्रम प्रारम्भ हुआ। इस सिंहभूम में भगवान् महावीर का विहार हुआ और सुखद संयोग है कि पूज्य ज्ञानसागर जी का प्रवास भी अधिकांश इसी सिंहभूम में रहा। क्षेत्र का भी अपना प्रभाव होता है, पर्यावरण का भी अपना असर होता है। सिंहभूम के 6 ग्रामों में धार्मिक शिविर भी लगे, धर्मप्रभावना भी हुई, अनेकानेक धार्मिक कार्यक्रम भी हुए। मन्दिरों की व्यवस्था में सुधार हुआ, घर-घर में तीर्थकरों के चित्र लगे, प्रतिमाओं की स्थापना हुई, आबाल-वृद्ध, महिला-पुरुष सभी ने धर्म का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त किया। विधिवत् परीक्षाओं में भले ही कुछ कम विद्यार्थी रहे हों किन्तु प्रारम्भिक ज्ञान तो शत-प्रतिशत को ही हो गया था। साधु चर्या को सर्वथा विस्मृत सराक बन्धु अब पूर्वजनित संस्कारों से तत्काल पूर्णतया जान गए। अब वे चौका लगाते, आहार देते, नियम-संयम का पालन करते। प्रवास के मध्य तो सिंहभूम ज्ञानभूमि बनी रही। इस क्षेत्र के विषय में 'आन दी एनशियेण्ट कापर माइनर्स ऑफ सिंहभूम—1896' में लिखा है :

"छोटा नागपुर की तलहटी से तांबे की खानयुक्त पहाड़ियों का पर्यवेक्षण करते-करते मैं जितना ही पूर्व की ओर अग्रसर होता गया, उतना ही देखता गया कि जहां भी खानें थीं, उन सबसे ही तांबे का निष्कासन कार्य पूरा हो चुका था, पहाड़ों के ऊपर अधिपत्यकाओं में, अरण्य में, यहां तक कि जो धूल-धक्कड़ एवं गर्दिश के नीचे दब चुकी थी, उससे भी तांबा निकल चुका था, यह देखकर मेरे मन में कौतूहल एवं प्रश्न जागृत हुआ कि वे लोग कौन थे जिन्होंने इन खानों से इतनी निपुणतापूर्वक तांबा निकाला ? इस विषय में जिनका नाम लिया गया वे थे सराक।"

सुखद संयोग है यह भी कि संसार में तांबा ही एक ऐसी वस्तु है जिसे लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। सिंहभूम का सर्वाधिक सराक बहुल क्षेत्र है नवाडीह जिसमें परिवारों की संख्या 104 और जनसंख्या 603 है। पूज्य उपाध्याय श्री जी ने नवाडीह देवलटांड़, आगसिया, सिंहभूम क्षेत्र को अपने विहार से पवित्र किया।

जिला सिंहभूम के निम्न ग्राम हैं :

1. खरसवां 2. आगसिया 3. रुगड़ी 4. नवाडीह 5. देवलटांड़ 6. चिपड़ी।

1000 से भी अधिक सराक बन्धु के 325 के लगभग घर हैं। इनके गोत्र मुख्यतः आदिदेव, वत्सराज, गौतम, शाण्डिल्य हैं। सराक अपने नाम के साथ मांझी लगाते हैं। इसी क्षेत्र में अधिक धार्मिक शिक्षण शिविर लगे हैं। यहां के युवाओं का उत्साह, वृद्धों की श्रद्धा, महिलाओं की भक्ति अद्भुत है। सैकड़ों वर्षों बाद किसी गुरु को देखते ही इनका हर्ष और उल्लास सहज ही इनके पूर्व संस्कारों को स्मरण करा जाता था।

सर्वेक्षकों के एक दल ने जब सिंहभूम सराक क्षेत्र का भ्रमण किया तो देखा कि इस क्षेत्र के सराक बन्धु सच्चे श्रावक हैं, अहिंसक हैं, जल छानकर पीते हैं, रात्रि भोजन नहीं करते हैं, जहां मन्दिर हैं वहां मन्दिर से भी जुड़े हैं, पूर्णतया शाकाहारी हैं, वेशभूषा से आदिवासी हैं। इन्हें आदिवासी कहना इस अर्थ में भी समीचीन है कि जैनधर्म की परम्परा का निर्वहन करने वाले वे ही इस क्षेत्र के प्रथम निवासी थे। इनके पूर्वजों का अवश्यमेव इस क्षेत्र में प्रभुत्व रहा होगा, राज्य रहा होगा अथवा राज्य तक परिचय रहा होगा तभी कोई क्षेत्र किसी नाम विशेष का द्योतक बनता है। पूज्य उपाध्याय श्री के स्वागतार्थ इनका हर्ष, उल्लास देखते ही बनता था। साधु भक्ति इनके अणु-अणु में है। यहां के युवक सम्पूर्ण प्रवास काल में तो चरणों में रहे ही अब भी पूज्य श्री के ही सान्निध्य में रहकर धर्म लाभ लेते रहते हैं। नवाडीह, देवलटांड़ (सिंहभूम) आदि में श्रावकों में गृहास्थाचार्य भी पाये जाते हैं। ये लोग यज्ञोपवीत धारण करते हैं, श्री पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा (प्रायः धातु की) रखते हैं और उसका अभिषेक भी करते हैं। अन्य सराक यज्ञोपवीत धारण नहीं करते। ये मांझी, महामात्र, पात्र, हत, सान्तरा, वर्धन, महात्र, अहिवुधि, सामग्री, देवता, प्रामाणिक, आचार्य, वेहेरा, दास, साधु पुष्टि, महात, मोहता, मण्डल, वैशाख, राउत, नायक, निशक्त, मौधुरी, मुदी, सेनापति, उच्च, नाहक आदि भिन्न-भिन्न संज्ञाधारी हैं। सिंहभूम के विषय में मेजर टिकल जर्नल एशियाटिक सोसाइटी 1840 पृ. 699 में लिखा था कि "सिंहभूम सराकों के हाथों में था जो करीब-करीब नहीं रहे, परन्तु तब वे बहुत थे। उनका असली देश शिखर भूम और पांचेत कहा जाता है। सराकों को सताकर कोलेहान से निकाला गया।"

कोलेहान में बहुत से प्राचीन सरोवर हैं जिन्हें 'हो' जाति के लोग सरावक सरोवर कहते हैं। इन्हीं सराकों ने सिंहभूम जिले की तांबे की खानों का पता लगाया था और उनका विकास किया था।

श्री दिगम्बर सराक जैनमन्दिर नवाडीह

श्री दिगम्बर जैन सराक नवाडीह में पूज्य उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी की प्रेरणा से धार्मिक शिक्षण शिविर के फलस्वरूप स्वाध्याय के प्रति भी जनमानस की भावना जागृत हुई, इस क्षेत्र में स्वाध्याय हेतु पुस्तकें भी उपलब्ध कराके जिनवाणी का भण्डार संग्रह किया गया। 29.4.93 को नवाडीह के जैनमन्दिर में श्री सुखमाल जी की साक्षी में छहढाला, पूजनपाठ प्रदीप, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, बोधप्रद काव्य, छत्र चूड़ामणि, द्रव्यसंग्रह, पुरुषार्थ सिद्धयुपाय, पद्मपुराण, पाण्डवपुराण, रयणसार, सुदर्शनचरित्र, धन्यकुमारचरित्र, मदन पराजय, भावसंग्रह, यशस्तिलक चम्पू तथा अनेक जैन पत्र-पत्रिकाएं यथा-तीर्थंकर, सन्मतिवाणी, जैन महिलादर्श, अहिंसा वाणी, जैन जगत, जैन प्रचारक आदि की प्रतियां उपलब्ध कराई गईं।

यहां पर साहू श्री शान्तिप्रसाद जी के द्वारा एक नवमंदिर का निर्माण हुआ था। जिसकी वेदी प्रतिष्ठा सन् 1964 में हुई थी, उस समय एक अखिल भारत वर्षीय दि. जैन सराक सम्मेलन रखा गया था, जिसमें सम्पूर्ण भारत के श्रेष्ठीवर्ग पहुचे थे, क्षु. श्री मनोहरलाल जी वर्णी भी थे, उसी समय से रांची वालों की सहायता से यहां प्रत्येक वर्ष रथयात्रा निकलती थी जो अब कुछ वर्षों से नहीं निकलती है।

आगसिया दि. जैन मन्दिर हेतु भी श्री सृष्टिधर मांझी को सुदर्शनचरित्र, पद्मपुराण, छत्रचूड़ामणि, सागारधर्मामृत, पूजन पाठ संग्रह तथा अनेक पत्र-पत्रिकाएं यथा, मानवधर्म, जैन जगत, दर्शनकथा, शिशुधर्म, जैनधर्म शिक्षावली, आत्मोदय, स्वानुभव, महासमिति-पत्रिका, अहिंसा वाणी, भक्तामरस्तोत्र आदि उपलब्ध कराये गए। यहां पर ब्र. कृपाराम जी थे जो सप्तम प्रतिमा का पालन करते थे जिनकी प्रेरणा से रूगड़ी बाजार की बलि प्रथा बंद हुई थी।

श्री दि. जैन सराक मन्दिर चैत्यालय में भी 28-5-93 को श्री भीमदेव मांझी को मन्दिर हेतु मुक्ति पथ की ओर, चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षावली, रत्नकरण्डश्रावकाचार, परमेष्ठी अर्चना, समाधिशतक, सम्यक्त्वकौमुदी, पुरुषार्थ सिद्धयुपाय, श्री राजगिरी सिद्धक्षेत्र पूजन, मदनपराजय, छत्रचूड़ामणि, सुदर्शनचरित्र, प्रश्नोत्तर श्रावकाचार, पाण्डवपुराण, धन्यकुमारचरित्र प्रदान किए गए।

श्री दिगम्बर जैन श्रावक मन्दिर देवलटांड़ 28-4-93, 24-5-93 एवं 8-6-93 को श्री मदन मोहन श्रावक को निम्न पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं—आत्मबोध, देव-

शास्त्र-गुरुवाणी, (पूजा संग्रह) भक्ति संग्रह, रत्नावली, जैनधर्म, रेशन्दी गिरि, अरिहन्त, विद्यासागर, मंगल पुष्प, संगम धारा, शाकाहार ही क्यों ? वर्णी प्रवचन, सहज सुख साधन, अण्डे के बारे में सौ तथ्य, नैतिक शिक्षावली, शाकाहार या मांसाहार, भावसंग्रह, यशस्तिलक चम्पू, पाण्डव पुराण। देवलटांड़ का मंदिर इस क्षेत्र का सबसे प्राचीन मंदिर है, मूर्तियां भी अत्यधिक प्राचीन हैं। उसकी गुम्बज हजारों वर्ष पुरानी प्रतीत होती है, जो अपने अन्य गुम्बजों की अपेक्षा विशेषता को लिए हुए है। उस गांव का नाम देवों का प्रमुख स्थान होने से देवलटांड़ पड़ा ऐसी जनप्रसिद्धि है।

सिंहभूमि के सराक घरों में भगवान् महावीर और आचार्यो के चित्रों का वितरण कराया गया, चित्रों का मानसिकता पर अनुकूल प्रभाव पड़ता ही है चित्त की एकाग्रता हेतु वीतरागी मुद्रा का दर्शन परमाश्यक है। पूज्य उपाध्याय श्री जी के प्रवास काल में 5-5-93 को खरसवां ग्राम में 12 सराक बन्धुओं के घरों में भगवान् महावीर, आ. श्री सुमतिसागर जी, श्री सम्मेदशिखर जी के कैलेण्डर वितरित कराये गए।

नवाडीह में 109 सराक बन्धुओं के घरों में भगवान् पार्श्वनाथ, आ. विमल सागर जी एवं उपाध्याय श्री भरतसागर जी महाराज के चित्र वितरित किए गए।

देवलटांड़ में भी 30-5-93 को 36 सराक परिवारों में भगवान् महावीर, आ. सुमतिसागर जी महाराज तथा भगवान् पार्श्वनाथ के कैलेण्डर वितरित किए गए।

चिपड़ी में 25-5-93 को 22 सराक बन्धुओं को भगवान् पार्श्वनाथ, भगवान् महावीर एवं आ. सुमतिसागर जी महाराज के कैलेण्डर वितरित किए गए।

आज पूरी सिंहभूम के घर-घर में भगवानों एवं दिगम्बर साधुओं के चित्र हैं, धर्म पुस्तकें हैं। साधु चर्या का ज्ञान इन्हें हो चुका है।

धार्मिक शिक्षण शिविर

नवाडीह, देवलटांड़, चिपड़ी में 12-3-93 से 21-3-93 तथा आगसिया में 21-3-93 से 29-3-93 तक धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। नवाडीह में अध्यापक थे श्री निखलेश मांझी एवं शरद अधिकारी, देवलटांड़ में जितेन्द्रनाथ मांझी व विजय कुमार मांझी, चिपड़ी में हेमन्त मांझी, रतन मांझी, आगसिया में सत्येन्द्रनाथ मांझी, निखलेश मांझी। इन क्षेत्रों में इस प्रकार के ये प्रथम शिविर थे। बालशिक्षा प्रथम भाग का ही अध्ययन कराया गया लेकिन विद्यार्थियों का उत्साह देखते ही बनता था। बालक-बालिकाएं जिनकी उम्र 9 वर्ष से 15 वर्ष थी, इस शिविर में प्रशिक्षित किए गए—नवाडीह में सैकड़ों विद्यार्थियों ने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया,

विधिवत् परीक्षा देकर लगभग 70 विद्यार्थियों ने प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार प्राप्त किए। उल्लेखनीय है कोई भी विद्यार्थी इन शिविरों में असफल नहीं रहे। देवलटांड़ में 58 बालक-बालिकाओं ने प्रथम भाग की परीक्षा दी तथा चिपड़ी में 24 बालक-बालिकाओं ने। ज्ञातव्य है चिपड़ी में कुल 22 घर ही सराकों के हैं।

आगसिया में सराकों के 30 घर हैं। 51 बालक-बालिकाओं ने 21-3-93 से 29-3-93 तक विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया। यहां छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं का उत्साह देखते ही बनता था। संजीव मांझी, प्रदीप मांझी जैसे 6-7 वर्ष के बच्चे कण्ठस्थ करके णमोकार मंत्र का सस्वर पाठ करते थे।

विरभूम

(1) ग्राम – भागाबांध
पत्रालय – बोलिहारपुर
थाना – मुम्मद बाजार
जिला – विरभूम

स्थिति–मुख्य पथ जामताड़ा से सिवड़ी वाली सड़क से 26 किमी. दूर पूर्व दिशा में स्थित है, यातायात का साधन अच्छा है।

सराक घर – 8
कुल जनसंख्या – 150
मुख्य व्यवसाय – कृषि
मुख्य व्यक्तियों के नाम–श्री नरहरिमंडल, श्री तारा पदो, श्री शांति पदो मंडल, श्री अजित मंडल, श्री सपन मंडल।
शिक्षित व्यक्ति – 60 प्रतिशत शिक्षा के साधन सुलभ हैं।

(2) ग्राम – बोलिहारपुर
पत्रालय – बोलिहारपुर भाया मुम्मद बाजार
थाना – मुम्मद बाजार
जिला – विरभूम

मुख्यपथ (बिहार, बंगाल) जामताड़ा से सिवड़ी पथ में सिवड़ी बस्ती से 25 किमी. की दूरी पर पूर्व की ओर बसा हुआ है।

यातायात के साधन उपलब्ध हैं। मुख्य पथ से मिला हुआ है।

सराक घरों की संख्या – 14
कुल जनसंख्या – 100
मुख्य व्यवसाय – कृषि

मुख्य व्यक्ति–श्री अरविन्द सिन्हा, श्री निभाई मंडल एवं श्री गुरूपदो मंडल हैं।

शिक्षित लोगों का प्रतिशत 60 है। इनमें से कुछ लोग स्नातक एवं स्नातकोत्तर भी हैं। शिक्षा की सुविधा अच्छी है। सभी के गोत्र आदिदेव हैं, गांव में मिडिल स्कूल भी है।

सर्वेक्षण रिपोर्ट सिंहभूम

(1) ग्राम — खरसवां
पत्रालय — खरसवां
थाना — खरसवां
जिला — सिंहभूम
श्रावकों के घर — 9
जनसंख्या — 43
मुख्य व्यक्ति — श्री गोवर्द्धन मांझी

खरसवां टाटा नगर से 65 किमी. दूर चक्रधरपुर रोड पर स्थित है।

(2) ग्राम का नाम — आगसिया
पत्रालय — देवलटांड़
थाना — ईचागढ़
जिला — सिंहभूम
सराकों के घरा — 30
कुल जनसंख्या — 150

मुख्य व्यक्ति—श्री सूरजमल मांझी, श्री राजेन्द्र मांझी, श्री वशिष्ट मांझी, श्री देवेन्द्र मांझी एवं श्री प्रद्युम्न मांझी।

गोत्र — वत्सराज, आदिदेव

इस ग्राम में एक जैन मन्दिर भी है। यह टाटानगर से 65 किमी. दूर रांगामाटी से 7 किमी. उत्तर में स्थित है।

(3) ग्राम का नाम — रूगड़ी
पत्रालय — देवलटांड़
थाना — ईचागढ़
जिला — सिंहभूम
गोत्र — धर्मदेव, आदिदेव
श्रावकों के घर — 35
कुल जनसंख्या — 223

मुख्य व्यक्ति—श्री राजेन्द्रनाथ मांझी, श्री कमलकान्त मांझी, श्री अभिराम झी एवं श्री गोविन्द मांझी।

स्थिति—टाटानगर से 65 किमी. पश्चिमी राज्य पर स्थित रांगामाटी से 6 किमी. उत्तर में स्थित है।

(4) ग्राम का नाम	—	नवाडीह
पत्रालय	—	देवलटांड़
थाना	—	ईचागढ़
जिला	—	सिंहभूम
श्रावकों के घर	—	104
जनसंख्या	—	603

मुख्य व्यक्ति—श्री दयालचन्द जैन, श्री जितेन्द्र जैन, श्री मोहन मांझी।

गोत्र — आदिदेव, धर्मदेव, वत्सराज, गौतम, शांडिल्य

यहां एक जैन मन्दिर है। सराक बन्धुओं में अत्यधिक धार्मिक अभिरुचि है। यहां पहले प्रतिवर्ष रथयात्रा निकलती थी, शिक्षण शिविर लग चुका है।

(5) ग्राम	—	देवलटांड़
पत्रालय	—	देवलटांड़
थाना	--	ईचागढ़
जिला	—	सिंहभूम
सराक घर	—	32
कुल जनसंख्या	—	185

मुख्य व्यक्ति—श्री मदनमोहन मांझी, श्री अभिमन्यु मांझी एवं श्री वशिष्ठ मांझी।

(6) ग्राम	—	चिपड़ी
पत्रालय	—	चिपड़ी
थाना	—	ईचागढ़
जिला	—	सिंहभूम
सराक घर	—	22
कुल जनसंख्या	—	101

मुख्य व्यक्ति—श्री भीष्मदेव मांझी, श्री राजेन्द्रनाथ मांझी।

यहां धार्मिक शिक्षण शिविर लग चुका है। यहां के सराक बन्धुओं में पूर्ण धार्मिक रुचि है। घर में चैत्यालय है।

श्री विश्वेश्वर मांझी, श्री रवीन्द्रनाथ मांझी, श्री धीरेन्द्रनाथ मांझी, श्री हरिकृष्ण मांझी, श्री अश्विनी मांझी आदि सराक युवाओं ने पूज्य उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी की प्रेरणा से इस क्षेत्र का सूक्ष्म सर्वेक्षण किया। इन युवकों को यह देखकर सुखद

आश्चर्य था कि इनके संस्कार पूर्णतया धार्मिक हैं, जब यहां धार्मिक शिक्षण शिविर लगाया गया तो पृथक्-पृथक् प्रायः सभी ग्रामवासी उपस्थित रहते थे भले ही जिनको लिखना नहीं आता था ऐसे प्रौढ़ परीक्षा नहीं दे सके पर समस्त पाठ्यक्रम विधिवत् स्मरण कर सुनाते रहे। बालक-बालिकाएं, युवक-युवतियां, महिला, पुरुष सभी में धार्मिक जागृति थी। किसी दिगम्बर साधु के दर्शन के उतावले थे, जिस किसी प्रकार अपने क्षेत्र में लाना चाहते थे, सर्वाधिक इस क्षेत्र के युवा पूरे सराक प्रवास में दिन-रात उपाध्याय श्री जी के साथ रहे। क्षेत्रवासियों का यह भी पुण्य ही है एक तो यहां पूर्व से मन्दिर हैं ही जहां नहीं थे वहां पूज्य उपाध्याय श्री जी की प्रेरणा से कुछ ग्रामों में प्रतिमाएं स्थापित हुईं। धार्मिक पर्वों को आयोजित करने का अत्यन्त उत्साह रहा, घर-घर में पहली बार दिगम्बर साधु और तीर्थंकरों के चित्र लगे। मन्दिरों में शास्त्र-स्वाध्याय प्रारम्भ हुआ। भाग्योदय में सिंहभूम प्रथम रहा, रहता भी क्यों न ? आखिर भगवान् महावीर की भूमि जो है।

बदलाव की आहट

सिंहभूम के प्रायः प्रत्येक ग्राम में शिक्षण शिविर आयोजित किए गए इन धर्म शिविरों एवं कक्षाओं की उपादेयता एवं सार्थकता यह है कि बालिकाएं जो छोटे भाई-बहनों को ही गोद में लिए या फिर चौका-बर्तन कर घरों की लीपा-पोती करती हुई दृष्टिगत होती थीं। वे बालिकाएं विकास का प्रतीक बन गई हैं। श्री सुरेन्द्रनाथ मांझी की शैव्या और वासुदेव मांझी की बावी कुमारी जब क्रमशः 75 प्रतिशत, 92 प्रतिशत नम्बर लेती हैं तो सहसा ही आश्चर्य से सबकी दृष्टि में विशेष बन जाती हैं। ग्राम के वृक्ष तले धर्म की वर्णमाला सिखाये जाने के अन्तर्गत चलाये जाने वाले ये विशेष धार्मिक शिक्षण शिविरों में रुचिपूर्वक एवं नियमित रूप से उपस्थित रहकर बालक-बालिकाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला और आज वह गर्व से अपनी स्लेट पर अपनी आवाज लिख-लिखकर दिखाते हैं, आज उनके बड़े जान गए हैं कि ये आपके संकेतों और इशारों पर ही चलकर जीवनयापन नहीं करने आए हैं अपितु एक मस्तिष्क भी साथ लेकर आए हैं वह मस्तिष्क जिसकी सजगता की आज आवश्यकता है और जिसके बलबूते पर ही ज्ञान प्राप्त कर अतीत से चले आ रहे संस्कारों को ग्रहण कर स्थायित्व दिया जा सकेगा।

गांव की ये छोटी-छोटी बालिकाएं फटे थैले में ही सही दो किताब लेकर घूमती हैं। सराक जागरण एवं नैतिक दायित्वों के बोध हेतु एक प्रभावशाली मार्गदर्शक की भूमिका निभा रही हैं। देवलटांड़ में भी श्री गोविन्द मांझी की सची रानी परीक्षा में श्री मदन मांझी के प्रथम रहने वाले पुत्र संजय मांझी से पीछे नहीं है, दोनों के ही अंक 95 प्रतिशत हैं। इन शिविरों के माध्यम से बालिकाएं ही नहीं, युवतियां भी घरों से बाहर निकलती रहीं। इस तरह कल तक केवल दो और दो जानने वाली सुनीता, भारती आदि आज सबके लिए गर्व का विषय हैं। सर्वेक्षकों ने समीपता से जब यहां की इस नवीन पीढ़ी से सम्पर्क स्थापित किया तो उन्होंने माना कि सराकों में पुनर्जागरण का अद्भुत कार्य एवं धार्मिक क्रान्ति का बिरवा उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने ही रोपा है, वे ही इसे पल्लवित एवं पुष्पित करेंगे। पुरानी जड़ता के पत्ते अब झर रहे हैं और उनका स्थान अब नव जागरूक हरे पत्तों ने लेना शुरू कर दिया है। आज वहां युवापीढ़ी में आगे बढ़ने की ललक है। वे समाज और धर्म के लिए समर्पित हैं पर अर्थाधार भी उन्हें हमें देना होगा,

अब प्रश्न इस बात का नहीं है कि प्रगति की संभावना नहीं है, अब तो विकास के प्रश्न पर सोचना है, बहुत कार्य करना है, सम्पूर्ण स्थिति के बारे में इससे ज्यादा सच कुछ नहीं है कि हम सबको मिलकर एक कोशिश करनी होगी। कोशिश जो संस्कारों को सुदृढ़ करें, समाज को प्रगतिशील बनायें।

समस्याएं अनेक हैं समाधान कम, पूज्य उपाध्याय श्री द्वारा परिवर्तन की किरण पहुंचाने का सफल सार्थक प्रयास प्रारम्भ किया गया है जो भी उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं, उन्हें स्थायी बनाया जा सकता है वरन् इनका विस्तार भी किया जा सकता है। स्वैच्छिक सामाजिक संस्थाओं को भी आगे बढ़ना चाहिए।

आज सराक क्षेत्र की अस्मिता की रक्षा के लिए हमें अपना आत्मगौरव एवं संस्कृति-प्रेम जागृत करना होगा, अपनी पौराणिकता के इन जीवन्त साक्ष्यों को सुरक्षित रखना होगा, अनादिकाल से हमारी जो सेवा की, त्याग की, दान की परम्परा रही है उसको जीवन्त बना आधुनिकतम माध्यमों के अनुरूप समस्वरता प्रदान करनी होगी, दौड़ में विजयी होने के लिए ही नहीं बल्कि टिकने के लिए भी साहस और धैर्य की जरूरत है इसके अभाव में सराकोत्थान का अभियान सफल नहीं हो सकता, आज हमारे सामने यही अहम् प्रश्न होना चाहिए इसे सफल बनाने के लिए सम्पूर्ण जैन समाज को तन, मन, धन से लगना होगा तभी सराक समाज की अस्मिता और अस्तित्व की रक्षा हो सकेगी।

अब आवश्यकता इस बात की है कि पूरा जैन समाज मिलकर इन्हें भरपूर खाद और पानी दे ताकि आगे चलकर इस विशाल वृक्ष की छाया में अन्य ग्राम की बालायें भी उभर कर सामने आ सकें, ग्राम्य युवक भी अपने पूर्वजों के कंधों पर भार न रहकर आर्थिक प्रगति के नये स्रोतों से जुड़ सकें।

आशा है कि शीघ्र ही अनुकूल समय आएगा और ये लाखों निरीह सराक जैनधर्म की मुख्य धारा से जुड़ जाएंगे। सिर्फ थोड़े से संस्कारों की पूंजी इनके पास बची हुई है जिसके आधार पर हमें इन्हें समृद्ध करना है। इधर-उधर बिखरे पड़े बहुमूल्य कलापूर्ण जैन मन्दिर, मूर्तियां और विपुल जैन कीर्तियां इनकी जैनधर्म के प्रति आस्था और समर्पण की जीवन्त गाथा गा रही हैं। इनका विगत गौरव, पूर्वजों का धर्म, विरासत में मिले संस्कार इनकी विरासत है। सम्पूर्ण जैन समाज का वात्सल्य इन्हें मिले तो ये पुनः अपने मूल धर्म को स्वीकार कर इन प्रान्तों में बिखरी हुई प्राचीन कला सामग्री को उचित एवं व्यवस्थित रूप दे सकते हैं।

सराक क्षेत्र में भले ही वह बंगाल हो, बिहार हो या उड़ीसा, सचमुच बच्चों एवं महिलाओं के सामने जितनी विषम परिस्थितियां हैं उनमें जीवित रह सकना सचमुच बड़ी उपलब्धि है, जन्म लेने के बाद हर कदम पर मृत्यु उनकी प्रतीक्षा

करती मिलती है। वास्तव में जन्म लेने के काफी पहले से ही बिना किसी गलती के ये बच्चे मौत के सम्मुख खड़े कर दिये जाते हैं, इन लाचार बच्चों के पास जन्म से पूर्व या जन्म के पश्चात् ऐसा कोई साधन नहीं होता जिसके बूते पर वे मौत का सामना कर सकें।

आंकड़ों के अनुसार 20 प्रतिशत बच्चे तो गर्भावस्था में मर जाते हैं, इसके बाद वे बच्चे हैं जो पैदा होते ही या पैदा होने के कुछ देर बाद मर जाते हैं उन्हें मां का दूध भी पीने को नहीं मिलता, वे अपने साथ ही कितनी ही आशाओं व सपनों को ले जाते हैं।

कोई डॉक्टरी सहायता पाने से पूर्व मर जाने वाले बच्चों अथवा जन्म के पहले ही बच्चों के मर जाने का सबसे बड़ा कारण होता है माताओं का बीमार और कमजोर होना। कई बार यह मौत का कारण चिकित्सकीय सुविधाओं का अभाव होता है। इन सब कारणों के अतिरिक्त अनेक ऐसे कारण हैं जिनके चलते नवजात शिशुओं को काल-कवलित होना पड़ता है। अनेक मामलों में बच्चों के साथ मां की भी जान चली जाती है।

समाज में व्याप्त उपेक्षा, अज्ञान और लापरवाही के चलते सैकड़ों शिशु अपना पहला जन्म-दिन मनाने के पहले ही इस संसार से विदा हो जाते हैं। इन एक साल की उम्र पूरी करने के पहले मृत्यु का वरण करने वाले शिशुओं से भी ज्यादा संख्या ऐसे शिशुओं की है जो अपनी उम्र के पांच वर्ष पूरे करने से पहले ही मृत्यु की गोद में समा जाते हैं। इन बच्चों की मृत्यु के प्रमुख कारणों में डायरिया, निमोनिया, टायफाइड और ऐसे ही अन्य संक्रमणों का नाम आता है। इनमें से कुछ भाग्यशाली बच्चे मुख्य माइको, डिप्थीरिया, पर्टनिस, टिटनेस, पोलियो और खसरे से बचाव के टीके पा जाते हैं, तो बच जाते हैं पर अधिकांश तो इनके अभाव में मृत्यु के चंगुल में आ ही जाते हैं। इन बच्चों के मां-बाप या तो बहुत अज्ञानी हैं या इनके प्रति लापरवाही, अपनी इन कमियों के चलते वे बच्चों को अस्पताल नहीं, अंतिम संस्कार करने ले जाने में ही समर्थ होते हैं। काश ! वहां कोई प्राथमिक चिकित्सा स्वास्थ्य केन्द्र होता।

ढेरों बच्चों की त्रासदी कई अर्थों में इससे भी बड़ी है। वे मौत से तो बच जाते हैं पर उन्हें मुर्दा भविष्य जीने को बाध्य होना पड़ता है। जब सारी दुनिया तेज और तेज दौड़ने की कोशिश में लगी हो, हजारों दुर्भाग्यशालियों को अपने पैरों पर भी चल पाना नसीब न हो, या जब सारी दुनिया बेहतर कल की ओर देखने में लगी हो, ढेरों भाग्यहीन बच्चे कुछ भी देख पाने में असमर्थ हों या फिर जब शारीरिक-बौद्धिक स्तर की नयी-नयी सीमाएं तलाशी जा रही हैं, ढेरों बच्चे केवल आयोडीन

युक्त नमक न पाने के कारण मन्द बुद्धि हो जायें और शारीरिक रूप से अविकसित रह जायें तो इसे घोर दुर्भाग्य या मौत के बराबर कहना शायद इन बच्चों की त्रासदियों को कम करके आंकना है। शारीरिक एवं मानसिक अक्षमता पर कुपोषण का तुर्रा, और इससे भी आगे इन दुर्भाग्यशाली बच्चों के आस-पास अपना साम्राज्य स्थापित किए हुए अज्ञानता, अशिक्षा और गरीबी—ऐसे हजारों बच्चों की जिन्दगी को मजाक—एक क्रूर मजाक—बना देती है।

इन सारी बाध्यताओं और अक्षमताओं के मध्य में भी ये बेचारे जब स्वयं को जीवन के शेष मुद्दों के लिए तैयार करने निकलते हैं तो उनके सामने सरकारी स्कूल के नाम पर या तो कुछ भी नहीं होगा या फिर होगा एक जीर्ण-शीर्ण कमरा और इस पूरे उपक्रम को संचालित करने और देखने-भालने के लिए एक अध्यापक।

मौत की देवी इस बीच अपना काम जारी रखती है, अब वह बच्चों की जान मारने के स्थान पर आकांक्षाओं, सपनों और आशाओं को मारती है। राज्य में हर दूसरी लड़की और हर चौथा लड़का स्कूल नहीं जाता और ऐसा करके या करने पर विवश होकर वह बच्चा अपने भविष्य की हत्या करता है और जो स्कूल जाते भी हैं वे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं करते।

इसके बाद जो बच्चे अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करते भी हैं, उन्हें लगता है कि उनकी शिक्षा उनके लिए किसी काम की नहीं है क्योंकि इसकी सहायता से वे धनार्जन करने में असफल रहते हैं, जल्दी ही ये बच्चे अपने बिल्कुल अनपढ़ भाई-बहनों की तरह ही सबसे सस्ते, सबसे निरीह कार्यों में यथा—गाड़ियों की मरम्मत करने, गिट्टी तोड़ने, बोझा ढोने या किसी ऐसे कार्य में लग जाते हैं जिसका बच्चों से कोई लेना-देना नहीं होता है। सामाजिक अव्यवस्था की यह परिणति है कि इस क्षेत्र के लगभग 1 लाख युवाओं में 90,000 के पास काम नहीं है जबकि 20 हजार बच्चों को काम के पीछे अपनी आहुति देनी पड़ती है। रोजगार के इस अव्यवस्थित वितरण का दुष्परिणाम है कि सराक क्षेत्र में लगभग 90 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

यहां के बच्चों के गालों पर आपको लालिमा देखने को नहीं मिलेगी। धंसी हुई फटी-फटी आंखें, खाल के भीतर से झांकती हड्डियां यहां के बच्चों की पहचान है। जब बचपन पूर्ण यौवन पर होना चाहिए तब ये बच्चे असहाय थके हुए और चुके हुए लगते हैं। उनके आस-पास परियों जैसी कोई कल्पना नहीं होती और सामने उनके इर्द-गिर्द कभी फटकते तक नहीं। गरीबी, अशिक्षा, बाल-श्रम तथा पहले से भी अधिक गरीबी का चक्र ही एक मात्र चक्र या दुष्चक्र है जो आस-पास होता है, उन्हीं के साथ-साथ इस क्षेत्र का भविष्य भी इस दुष्चक्र में उलझा रहता है। क्षेत्र

के नौनिहालों की इस अवस्था की जिम्मेदारी उनकी स्वयं की तो नहीं हो सकती।

प्रश्न यह है क्या इस सराक क्षेत्र को, इन दुःखी और अहसास से परे हो चुके थके हुए कदमों वाले युवाओं की आवश्यकता है ? या यह क्षेत्र चमकते चेहरे वाले, ऊर्जा से लबालब भरे बच्चे चाहता है जो सचमुच वीर की संतान हों ? प्रश्न यह है कि देश का सर्वाधिक शिक्षित सम्पन्न जैन समाज अपने बच्चों के विषय में चिन्तित होकर सरकार को और श्रीमन्तों को इस ओर आकर्षित करेगा ?

प्रश्नों की शृंखला यहीं समाप्त नहीं हो जाती। प्रश्न यह भी है क्या वह प्रदेश जो श्रमण संस्कृति व तीर्थंकरों के जन्म, विहार, निर्वाण स्थल रहे वे यह ऐसा बंजर क्षेत्र बने रहने की त्रासदी ही भोगें ? क्या यही आदर्श है जैनत्व का ? क्या कहेगा भविष्य और वर्तमान इस धरा को देखकर कि क्या यहां सुभिक्ष होता था ? तीर्थंकरों की भूमि इतनी श्रीहीन इस भूमि की रज को कौन शीश चढ़ाएगा। क्या मानवता के पुजारी शुद्ध वातावरण, प्राथमिक चिकित्सा व्यवस्था, अच्छी शिक्षा, मन्दिर की बढ़िया नींव की व्यवस्था करा सकता है ? अल्प शब्दों में कहूं तो इस क्षेत्र को विकसित होने का मौका दे सकता है ? क्या कभी यह क्षेत्र अपने नाम के अनुरूप इन कठिन सवालों का उत्तर ढूंढ़ने का प्रयत्न प्रारम्भ करके अपना नाम सार्थक कर सकेगा ?

सराक लोग बड़े शान्त नागरिक हैं, ये झगड़ा-फसाद से बचते हैं और पड़ोसियों के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं। इनके 17 गोत्र हैं। वामनधारी ताम्रशासन (बारहवीं शताब्दी) से ज्ञात होता है कि मयूरभंज के भंजवंशीय राजाओं ने श्रावकों को बहुत ग्राम दिए थे। श्रावकों ने जंगलों में तांबे की खानें ढूंढीं और अपनी सारी शक्ति लगाकर इन खानों का विकास किया ऐसा अनेक अंग्रेज पुरातत्ववेत्ताओं एवं इतिहासविदों ने भी लिखा है, किन्तु विश्वास किया जाता है सन् 1023 ई. में चोल राजा राजेन्द्र देव ने बंगाल के नरेश महीपाल पर आक्रमण किया तब आते-जाते दोनों ही समय चोल सेना ने धर्म-द्वेषवश सराकों के बनवाए हुए जैन मन्दिरों का विध्वंस किया। इसके बाद पाण्ड्या नरेशों ने लिंगायत, शैव सम्प्रदाय के उन्माद में जैनधर्मायतनों का विनाश किया और सराकों को धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया। जिन्होंने अपना धर्म छोड़ना स्वीकार नहीं किया, उन पर भारी अत्याचार किए गए। जब दक्षिण की ओर से शैवधर्म और आन्ध्रप्रदेश की ओर से वैष्णवधर्म का झंझावात प्रबल वेग से बढ़ता हुआ उड़ीसा, बंगाल और उत्तर बिहार में आया उस समय उसके सामने जो झुक गए वे बच गए, जिन्होंने कुछ साहस बटोरकर उसके सामने खड़े होने का प्रयत्न किया, वे नष्ट हो गए या मार दिये गये। एक बार तो श्रावकों को अपना स्थान, धन्धा, धर्मालय सब कुछ छोड़कर भागना पड़ा किन्तु

राज्याश्रय में पला हुआ धार्मिक विप्लव बंगाल, बिहार और उड़ीसा में श्रावकों का सफाया करके ही माना। ये विस्थापित लोग जहां-तहां प्रायः गांवों में सुरक्षा की दृष्टि से बस गए। व्यापार छोड़कर खेती-बाड़ी का धन्धा करने लगे। धर्म छोड़कर भी संस्कार न छोड़ सके और हिन्दू कहलाकर भी स्वयं को श्रावक अथवा सराक ही कहते रहे।

जंगलों और पहाड़ियों के सूनेपन में भी घर बनाकर शान्त वातावरण में हृदय से भी शान्त हैं। अभावों की पीड़ा से अन्तस को झुलसाते नहीं हैं। बिजली, पानी की व्यवस्था हो, न हो इन्हें सरकार से कोई शिकायत नहीं है। गांवों में लोग घरों में न ताला लगाते हैं, न वहां चोर हैं।

सराक बन्धु स्त्री हो या पुरुष आगन्तुकों से हँसकर मिलते हैं और यथोचित आतिथ्य कर धन्य समझते हैं। बहुत ईमानदार हैं ये।

इन सराकों के विषय में हमें नए ढंग से सोचना होगा। हमारी संस्कृति का आधार 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' रहा है, वही आज खण्डित दिखलाई पड़ रहा है, हमने भौतिक क्षेत्र में भले ही बहुत कुछ प्राप्त किया हो किन्तु एकता को तो हमने विखण्डित करके दिवालियापन ही दिखाया है।

सराकों के बीच उपाध्याय श्री महावीर की धरोहर बही

सराक जाति का उद्भव एवं विकास इतिहास के पृष्ठों में खोया हुआ है। इसके इतिहास की ओर दृष्टि डालें तो इन मान्यताओं पर अविश्वास नहीं किया जा सकता कि भगवान् महावीर का सिंहभूम, वर्धमान एवं विरभूम जिलों में विहार हुआ था वहां के निवासियों को जैनधर्म के संस्कारों से सुसंस्कारित किया गया था, और वहां के श्रावकों द्वारा धन-वैभव से सम्पन्न थे तथा उनके द्वारा बहुत से जैन मन्दिरों का भी निर्माण कराया गया था।

समय ने करवट ली। काल का तूफान जब गुजरता है तो वहां का सब कुछ बदल जाता है पुराना सब साफ हो जाता है ऐसा ही इस जाति के साथ हुआ, सम्राट अशोक ने अपने शासन की वृद्धि के लिए युद्धों का सहारा लिया, युद्धों में लाखों श्रावकों को मौत के घाट उतार दिया गया, महावीर के अनुयायियों को धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया गया, उनके ऊपर अनेक प्रकार के अत्याचार किए गए, अतः वे जंगलों में भाग गए, जंगलों से निकलकर कभी नगरों में आने का अवसर नहीं मिला, खेती आदि करके ही अपना गुजारा करते।

जिस प्रकार जल और पवन का संयोग न मिलने से मिट्टी में दबा बीज अंकुरित नहीं हो पाता ठीक इसी प्रकार दिगम्बर गुरु के दर्शन और उपदेश का संयोग न मिलने से सराक हृदय की भूमि में दबा हुआ धर्म का बीज अंकुरित नहीं हो पा रहा था। उनके ऊपर अज्ञानता की तह पड़ती चली गई थी। सराक बन्धुओं के हृदय से धर्म की मणियां शनैः-शनैः लुप्त होती जा रही थीं, उनके जीवन में दुख की काली छाया बढ़ती जा रही थी। यद्यपि देश में सम्पन्नता और खाद्य-सामग्री का अभाव नहीं था किन्तु सराक भाई दरिद्रता के पंक में फंसे हुए थे, विगत वर्षों से सराक ग्रामों की धारा पर मिथ्यात्व का गहन अन्धकार छाया हुआ था।

वर्तमान में सराक बन्धु बिहार, बंगाल एवं उड़ीसा के 12 जिलों में बसे हुए हैं। भाषा एवं सामाजिक परिवर्तनों के कारण उ.प्र., राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात के प्रदेशों में रहने वाले जैनों से उनका कोई सम्बन्ध नहीं रहा, वह जैन समाज की मूल धारा से टूट गए थे, उन्हें मूल धारा से जोड़ने का समय-समय पर काफी प्रयास भी किया गया, पूज्य आ. विद्यासागर जी महाराज, क्षु. गणेशप्रसाद जी

वर्णी, क्षु. मनोहर लालवर्णी जैसे महान सन्तों तथा श्री बैजनाथ जी सरावगी, साहू श्री शान्तिप्रसाद जी जैन, प. बाबूलाल जमादार, रायबहादुर श्री हरकचन्द जी पाण्ड्या रांची, श्री विमलप्रसाद जी खरखरी वाले एवं श्री शिखरचन्द जैन आदि द्वारा भी सराकोद्धार हेतु कदम उठाए गए।

उपाध्याय श्री का आगमन वरदान सिद्ध हुआ

सन् 1993 में उपाध्याय श्री का आगमन सराक बन्धुओं के लिए वरदान सिद्ध हुआ और दिगम्बर सन्त को पाकर सराक क्षेत्र की धरा मुस्करा उठी, वर्षों से गहन अन्धकार में डूबे सराक बन्धुओं के अज्ञानता के बादल छटने लगे तथा धार्मिक संस्कार पुनर्जीवित हो उठे।

उपाध्याय श्री का एक निराला ही व्यक्तित्व है, इनकी समग्र अन्तश्चेतना वात्सल्य गुण से ओत-प्रोत है, जब वह बोलते हैं तो उनके प्रत्येक शब्द से वात्सल्य की धारा फूटती है, उनकी मुस्कान से झरने वाले वात्सल्य निर्झर से तो उनके भक्त भींग-भींग जाते हैं, उनका व्यवहार अत्यन्त अनुशासित तथा संयत है, उन्होंने अपने जीवन में सबसे ज्यादा अनुशासन को महत्व दिया है क्योंकि अनुशासन ही हमारे जीवन की सफलता की कुंजी है।

करुणा पुकार उठी

सराक भक्तों को उपाध्याय श्री की अभय प्रदायिनी मधुभरी करुणा की धारा प्रवाहित हुई। कल्याणमयी वाणी सुनी तो जैसे शिशु अपनी सब समस्याओं को अपने माता-पिता के समक्ष प्रगट कर देता है वैसे ही निर्भय होकर सभी ने अपनी-अपनी समस्यायें उपाध्याय श्री के समक्ष रखीं।

उपाध्याय श्री ने जब सराकों की सामाजिक, आर्थिक समस्याओं को सुना तो उनके हृदय में सराकों के प्रति करुणा का अजस्र स्रोत प्रवाहित होने लगा और उनके मन में सराकों के विकासोत्थान हेतु भावनाएं जाग्रत हुईं तथा उनके लिए कुछ करने को कृत संकल्पित हो गए, मुनि जीवन के आवश्यक कर्तव्यों का पालन करते हुए वे सराकों के जीवन में उत्थान के पुष्प विकसित करने के लिए भागीरथ के समान प्रयत्नशील हो गए। उपाध्याय श्री अन्धे की लाठी के समान सिद्ध हुए।

जैसे पावस ऋतु के आने पर चातक पक्षी लालायित नेत्रों से आसमान की ओर टकटकी लगाए रहते हैं कि कब पानी बरसे और मुझे तृप्ति मिले, उसी तरह चातुर्मास की बेला में चातुर्मास कराने हेतु सभी सराक ग्राम निवासी अपने-अपने ग्राम

के लिए उपाध्याय श्री की बाट जोह रहे थे लेकिन द्वय युगल मुनिराज का अपने पूर्ण ज्ञान के खजाने को लिए तड़ाई ग्राम (रांची जिला) में पदार्पण हुआ, मुनिराजों को पाकर ग्रामवासियों का मन मयूर नाच उठा अपने सजल नेत्रों से द्वय महाराज श्री की अगवानी कर चरण पखारे। महाराज श्री ने जैसे ही तड़ाई ग्राम में चातुर्मास की स्वीकृति दी तो उन सराक भाइयों ने ऐसा महसूस किया कि मानो हम बेसहारों के लिए मसीहा चलकर आया है और उन्होंने अपने भाग्य को सराहा।

चातुर्मास के दौरान अनेकानेक धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए, साथ ही इन कार्यक्रमों से अलग विराट् सराक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें दूर-सुदूर प्रान्तों के संभ्रान्त महामहिम उद्योगपति पधारे साहू श्री अशोक कुमार जी दिल्ली, श्री उम्मेदमल जी पाण्ड्या आदि जैन समाज के प्रमुख, वयोवृद्ध समाजसेवी रायबहादुर भी हरकचन्द जी पाण्ड्या रांची सम्मिलित थे। महाराज श्री की प्रेरणा से हुए इस अभूतपूर्व आयोजन को सभी ने मुक्त कण्ठ से सराहा। महाराज श्री की विचारधारा से सहमत होकर सराक बन्धुओं के आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए एक वृहद् फण्ड की स्थापना की जो इस सम्मलेन की सबसे बड़ी उपलब्धि रही।

रामबाण औषधि मिल गई

महावीर के लघुनन्दन महावीर के पथ का अनुसरण करते हुए बिहार, बंगाल सभी सराक ग्रामवासियों को शिविर के माध्यम से जैनधर्म के सिद्धान्तों को बताकर वीतराग धर्म के प्रति आस्था को मजबूत किया, और ये शिविर, सभी उन सराक भाइयों के धार्मिक शिक्षा के विकास में रामबाण औषधि की तरह साबित हुए, उपा. श्री द्वारा प्रशिक्षित युवकों द्वारा पूज्य श्री की प्रेरणा से धर्म की रश्मियों को जनमानस तक पहुंचाने के लिए सभी प्रान्तों में लघु शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें सभी आबाल-वृद्धों ने नई उमंग के साथ भाग लिया और धार्मिक शिक्षा के साथ ही सदाचार, नैतिकता के संस्कार प्राप्त किए।

तड़ाई चातुर्मास के पश्चात् महाराज श्री धर्म की वर्षा करते हुए जशपुर, अम्बिकापुर, बगीचा आदि होते हुए पेटरवार पहुंचे।

जमीन पर फरिश्ता उतरा

बिहारप्रान्त का चतुर्थ चातुर्मास पेटरवार में (बिहार) हुआ तभी श्री कमल कुमार जी पाटोदी का सम्पर्क महाराज श्री से हुआ, जिन्हें इस युग के सरसेठ

हुकुमचन्द के समान दानवीर कहा जाये तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। जब उन्हें महाराज श्री ने सराक भाइयों की करुण व्यथा सुनायी तो उनका हृदय द्रवीभूत ही गया और सराक भाइयों को कुछ कर गुजरने के लिए संकल्पित हो गए।

उन्होंने महाराज श्री का आशीर्वाद ग्रहण कर अल्प माहों में ही तन-मन-धन से समर्पित होकर सराक भाइयों को अपने हृदय से लगाते हुए उनकी समस्या को अपनी समस्या समझते हुए इस जुझारू व्यक्तित्व ने बहुत कुछ कर डाला। सराक ग्रामों में पाठशाला, मन्दिर आदि का निर्माण कराकर बेरोजगारों के जीवन की आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति कराने में संलग्न हैं, उनकी मां श्री भी इस कार्य में अपने बेटे के साथ कंधा से कंधा मिलाकर सहयोग दे रही हैं और आज सराक भाई उनसे ऋणी होकर उन्हें अपना फरिश्ता मान रहे हैं।

अनायास संयोग ऐसा बना कि उपाध्याय श्री ने मेरठ में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में आने हेतु बिहारप्रान्त से उत्तरप्रदेश की ओर विहार कर दिया।

सन् 1995 का भव्य चातुर्मास अतिशय क्षेत्र बड़ागांव में बड़ी प्रभावना के साथ हुआ।

बिहार क्षेत्र से विहार किए हुए गुरुवर को 11-12 माह हो गए हैं, किन्तु आज भी सराक भाइयों के प्रति सहानुभूति-करुणा बरकरार है, शहरों से हटकर एकान्त स्थान में साधना में रहते हुए भी सराक भाइयों के पूर्व वैभव को पुनः वापिस लाने के लिए विभिन्न-विभिन्न प्रान्तों के (म.प्र., उ.प्र., पंजाब) समाजसेवी भाइयों को प्रेरित करते हैं कि ये सराक भाई आततायियों के जुल्म के कारण तुमसे ही बिछुड़ गए है। अतः उन्हें उठाकर अपने गले लगाओ और जैन समाज को एक विशाल रूप दो।

जैन धर्म का प्राचीन गौरव स्थल

बंग प्रान्त

भारत के पूर्वांचल को प्रकृति ने बड़े ही सुन्दर ढंग से संजोया है। इस देश में यहां के शैलगिरि, गहन-वन और सरिताओं ने धर्म एवं संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह ब्राह्मण, जैन एवं बौद्ध धर्मों की तपोभूमि है, यह त्रिवेणी कई सहस्र वर्ष पूर्व से अबाध गति से प्रवाहित होती रही है। पर्वत शृंखलाओं के मध्य बसे इस भूमिखण्ड में विभिन्नताओं के साथ ही एकरूपता का विराट दर्शन होता है। इस तपोभूमि की पावन दामोदर, कंसा, स्वर्णरेखा के जलों से सिंचित करती हुई सहस्रों वर्ष से जनमानस को प्रेरित करती हुई, पतित पावन गंगा में मिल जाती है। मौर्यकाल के उपरान्त गुप्तकाल एवं राजा खारवेल ने जैन धर्म को पूर्णरूपेण पल्लवित एवं पुष्पित किया। प्रमाणस्वरूप आज भी सम्भवतः बंगाल, बिहार, उड़ीसा का में बहुलता से जिन अवशेष उपलब्ध होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में हम प्रमुखतया बंगाल के उन दो जिलों का वर्णन कर रहे हैं जिनके नाम भगवान् महावीर के यश-वैभव की जीवन्त गाथा अपने नाम में उनका नाम समाहित कर अमर हो गए हैं। धरा भी तो ऐसे पुण्य पुरुषों के संस्पर्शन को लालायित रहती ही है। पू. उ. 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज भी पुनः उसी इतिवृत्त की पुनरावृत्ति के जीवन्त प्रमाण हैं। उनके चरण संस्पर्शन से पुनः जन-जन को भगवान् महावीर स्मरण हो गए और सराक बन्धु पुनः उसी प्रकार पूज्यवर गुरुदेव की शरणागत हो गए।

सराक बन्धुओं की इस शाश्वत अवस्थिति का चित्रण करने का लघु प्रयास है। इसमें मेरा कुछ नहीं, जो भी है इतिहासविदों का, पुरातत्वविदों का सर्वेक्षण है। मैंने मात्र एकत्रीकरण का प्रयास किया है। इसका और व्यापक शोधकार्य होना चाहिए जिससे हम इस क्षेत्र में पुनः अपनी संस्कृति का ध्वजारोहण गर्व के साथ कर सकें।

पूज्य श्री 108 गुरु ज्ञानसागर जी के चरणों में कृतज्ञतापूर्वक नमोऽस्तु!

बंगाल प्रान्त

प्राचीन काल में बंग देश (वर्तमान बंगला देश) व्यापारिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध था। राजनैतिक दृष्टि से, प्रतीत होता है कि प्राचीन बंग अग्रपंक्ति में अपना

स्थान कभी भी नहीं बना पाया। यहां ऐसा कोई प्रतापी व्यक्तित्व नहीं उभरा, जिसने दिग्विजय द्वारा चक्रवर्ती का विरुद धारण किया हो। छठी शताब्दी के अन्त में बंग के राजनैतिक क्षितिज पर शशांक नरेश का उदय हुआ उसने समूचे बंग, कलिंग, आन्ध्र, कोंगद और कन्नौज को जीत लिया। उसका शासनकाल छठी शताब्दी के अन्तिम कुछ वर्षों से लगभग ई. स. 619 तक माना जाता है। वह कट्टर वेदानुयायी था। बौद्ध और जैनधर्म से उसको हार्दिक द्वेष था, अपने सैनिक अभियान के समय मार्ग में जो बौद्ध विहार और जैन मन्दिर मिलते थे, उन्हें वह नष्ट करता था। नालन्दा का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय उसी ने जलाया ऐसा माना जाता है। चक्रवर्ती बनने जैसा शौर्य तो वह न दिखा सका पर औरंगजेब जैसे धर्मान्ध व्यक्तियों की काली सूची में उसने अपना नाम लिखा लिया। शशांक के अत्याचारों का बदला पाल नरेशों ने कसकर लिया, किन्तु वे भी ऐसे नरेश न बन सके जिन्हें सम्राट कहा जा सके।

चोलवंशी राजेन्द्र ई. स. 1018 से 1044 ने पाण्ड्य, चेर, सिंहल, चालुक्य के राजवंशों को पराजित किया। उसने कलिंग, ओड्र, दक्षिणी कौशल और बंग तक अपना साम्राज्य विस्तार किया, फिर उसने नौसैनिक अभियान चलाकर मलय प्रायद्वीप, जावा, सुमात्रा, कैडाह पर अपनी विजय वैजयन्ती फहराई। इस अभियान के समय उसकी सेना ने मार्ग में पड़ने वाले सभी जैन मन्दिरों और मूर्तियों का व्यापक विनाश किया, समूलोच्छेदन का कार्य किया। एक कट्टर शैव के रूप में उसने जैनधर्म और आयतनों का निर्मम विनाश किया। जिस प्रकार दक्षिण में, वीर शिव लिंगायत के आचार्य अप्पार ने पल्लव राजा महेन्द्र वर्मा, जो नरसिंह वर्मा का पुत्र था, को जैन से शैव बनाकर जैनों का विनाश कराया तथा शैव आचार्य सम्बन्दर ने अपने सहयोगी सन्त तिरुनाबुक्करसर के साथ पाण्ड्य राज सुन्दर पाण्ड्य को जैन से शैव बनाकर हजारों जैनों को बलात् शैव बनाया। आठ हजार जैनों को कोल्हू में पेल दिया (पौदयपुराण से)। उसने अनेक जैन मन्दिरों और मूर्तियों का विध्वंस किया अथवा उन्हें परिवर्तित करके शैव मन्दिर और शिव बना लिया, उसी प्रकार चोलराज राजेन्द्र ने 1029 ई. में और पाण्ड्य नरेश जयवर्मन सुन्दर पाण्ड्य ने सन् 1251-1268 उड़ीसा, कलिंग और बंगाल के जैन मन्दिरों और मूर्तियों का विध्वंस किया।

बिहार व बंगाल के हजारीबाग, मानभूम, सिंहभूम, रांची, पटना आदि जिलों और उड़ीसा के नीलगिरि, अतसपुर, मयूरभंज आदि स्थानों पर ईसा पूर्व प्रथम शती तक की मूर्तियां उपलब्ध होती हैं। ये मूर्तियां जहां बिखरी हुई हैं वहां मन्दिरों के चिह्न भी मिलते हैं, अतः असंदिग्ध रूप से ये मन्दिर भी इसी काल के हैं। बंगाल

में पार्श्वनाथ और महावीर बंग प्रदेश में जैनधर्म प्रचार के कुछ ऐसे उल्लेख उपलब्ध होते हैं, जिनके अनुसार श्री ऋषभदेव, श्री पार्श्वनाथ और श्री महावीर प्रभु ने बंग में विहार किया था और धर्मोपदेश दिया था। कहा जाता है, श्री पार्श्वनाथ के धर्म-प्रवचनों ने बंग प्रदेश के सहस्रों व्यक्तियों के हृदय में जैनधर्म की अमिट छाप अंकित कर दी थी। श्री पार्श्वनाथ जी के विहार प्रसंग में ताम्रलिप्ति और कोपकटक स्थानों का उल्लेख मिलता है। इन स्थानों पर वे गए थे। श्री पार्श्वनाथ के पश्चात् भगवान् महावीर ने अंग, मगध और कलिंग के समान बंग देश में भी विहार करके जनमानस को जैनधर्म की शिक्षाओं से प्रभावित किया था। तीर्थंकर महावीर के उपदेशों का प्रभाव जनता पर अत्यधिक पड़ा। मानभूम, वर्द्धमान आदि नगरों के नाम महावीर के नाम पर ही रखे गए ऐसा कहा जाता है। बंगाल के इन स्थानों और इनके निकटवर्ती जिलों के अनेक प्राचीन जैन मन्दिरों के भग्नावशेष बिखरे पड़े हुए हैं। इन जिलों में अनेक जैन मूर्तियां उपलब्ध हुई हैं। बंगाल के विभिन्न भागों में फैले हुए सराक बन्धु पार्श्वनाथ और महावीर की धर्म परम्परा के जीवित अवशेष हैं।

ताम्र शासन

बंगाल के राजशाही जिले में पहाड़पुर नामक स्थान से एक ताम्रशासन या ताम्रपत्र उपलब्ध हुआ है। यह स्थान कलकत्ता से लगभग 275 किमी. उत्तर की ओर और जमालगंज स्टेशन से 5 किमी. पश्चिम की ओर से बदलगाछी थाने के अन्तर्गत है। यह ताम्रपत्र गुप्त संवत् 159 (ई. सन् 478) का है। यहां एक जैन विहार मन्दिर था, जिसके ध्वंशावशेष चारों ओर बिखरे पड़े हैं। इसके चारों ओर प्राचीन काल में प्राचीर था, आजकल इसके अवशेष मिलते हैं। मध्य में एक टीला है। इसके कारण इस स्थान का नाम पहाड़पुर पड़ गया है। इस टीले के उत्खनन से ही उक्त ताम्रपत्र उपलब्ध हुआ है।

इस ताम्रपत्र में पंचस्तूपान्वय के निर्ग्रन्थ श्रमणाचार्य गुहनन्दि के जैन विहार का उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार एक ब्राह्मण दम्पति ने पुण्ड्रवर्द्धन के विभिन्न ग्रामों में भूमि खरीदकर बटगोहाली ग्राम के जैन विहार को अर्हन्पूजा के लिए उसे दान दिया था। अनुमान किया जाता है कि बटगोहाली का विहार वही होना चाहिए जो पहाड़पुर की खुदाई में प्रकाश में आया है।

खुदाई के फलस्वरूप इस विहार के सम्बन्ध में अनेक तथ्य प्रकाश में आए हैं। यह विहार विशाल आकार का था। इसका परकोटा लगभग एक हजार वर्ग मी.

का था। जिसके चारों ओर 175 से भी अधिक गुफाकार प्रकोष्ठ थे। विहार के चौक में चारों दिशाओं में विशाल द्वार थे। चौक के ठीक बीचोंबीच स्वस्ति के आकार का सर्वतोभद्र मन्दिर था। यह साढ़े तीन सौ फुट लम्बा-चौड़ा था। इसके चारों ओर परिक्रमा बनी हुई थी। मन्दिर तीन मंजिल का था। इनमें से दो मंजिल तो स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। मन्दिर की दीवारें और फर्श पक्की ईंटों की बनी हुई हैं। तीसरी मंजिल के ऊपर शिखर था। आजकल जो अवशेष उपलब्ध हैं उनमें 70 फुट ऊंची दीवार अब भी विद्यमान है।

यह मन्दिर स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। इसकी कला का प्रभाव बर्मा के पैगान और मध्य जावा के चण्डी लोटो जोंगरंग और चण्डी सीतु मन्दिरों पर स्पष्ट परिलक्षित होता है।

The Struggle for Empire, V.V. Bhartiya, Vidaya Bhawan, Bombay, pp 637-640

इसकी कला की समानता कोई दूसरा मन्दिर नहीं कर सका। सर्वतोभद्र मन्दिरों की परम्परा में यह संभवत प्रथम ज्ञात मन्दिर है। सर्वतोभद्र मन्दिर जैन परम्परा की अपनी विशेषता है। इस सम्पूर्ण विहार मन्दिर का निर्माण एक ही काल में हुआ था।

उक्त ताम्रपत्र में लिखा है—गुप्त संवत् 159 में एक ब्राह्मण नाथ शर्मा और उसकी भार्या रान्ती ने बटगोहाली ग्राम में पंचस्तूपान्वय निकाय के निर्ग्रन्थ आचार्य गुहनन्दि के शिष्य-प्रशिष्यों द्वारा अधिष्ठित विहार में भगवान् अर्हन्तों की पूजा सामग्री के निर्वाहार्थ तथा निर्ग्रन्थाचार्य गुहनन्दि के विहार में एक विश्राम स्थान के निर्माणार्थ यह भूमि सदा के लिए इस विहार के अधिष्ठाता बनारस के पंचस्तूप निकाय संघ के आचार्य गुहनन्दि के शिष्य-प्रशिष्यों को दान में दी।

आचार्य गुहनन्दि पंचस्तूपन्वय के प्रमुख आचार्य थे। इस पंचस्तूपान्वय की स्थापना आचार्य अर्हनबलीदू की थीं। ये पुण्ड्रवर्द्धन के निवासी थे। इसी पंचस्तूपान्वय में आगे चलकर षट्खण्डागम के सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य वीरसेन और आचार्य जिनसेन भी हुए।

बटगोहाली संभवतः वट गुफावली का अपभ्रंश रूप है। इस नाम से ऐसा प्रतीत होता है कि यहां वट वृक्ष और गुफाएं बहुत थीं। यह गांव पुण्ड्रवर्द्धन नगर से उत्तर-पश्चिम की ओर 32 किमी. और वानगढ़ (प्राचीन कोटि वर्ष) से दक्षिण-पूर्व की ओर 45 किमी. था। इन दोनों के मध्य में बटगोहाली गांव आबाद था। पुण्ड्रवर्द्धन और कोटिवर्ष दोनों ही प्राचीन काल में जैनधर्म के केन्द्र थे इसलिए इस विहार का बहुत महत्व था। पुण्ड्रवर्द्धन राजनैतिक दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण था।

मौर्य और गुप्तकाल में इस नगर में प्रान्तीय उपरिक (गर्वनर) रहता था। श्रुतकेवली भद्रबाहु और आचार्य अर्हद्बली दोनों ही आचार्य इसी नगर के निवासी थे।

बटगोहाली बिहार की ख्याति विद्या केन्द्र के रूप में भी थी। यहां अनेक दिगम्बर मुनि रहकर ध्यान अध्ययन करते थे। उनके कारण अनेक यात्री दर्शनों के लिए उनका उपदेश सुनने आया करते थे। अनेक छात्र विद्याध्ययन के लिए आते थे। ऐसा लगता है, ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में पूर्व में बटगोहाली बिहार, उत्तर में मथुरा बिहार, पश्चिम में सौराष्ट्र स्थित गिरिनगर की चन्द्रगुफा और दक्षिण में श्रवणबेलगोला—ये चारों दिशाओं में जैन तत्वविद्या के सुदृढ़ केन्द्र थे।

इस विहार की ख्याति जैन विद्यापीठ के रूप में गुप्तकाल तक रही। गुप्त शासन के तिरोहित होने पर बंगाल में शशांक ने बटगोहाली जैन विहार बुरी तरह से क्षत-विक्षत किया। संभवतः इसके फलस्वरूप कुछ समय तक इस विहार पर ब्राह्मणों का अधिकार रहा। शशांक की मृत्यु के पश्चात् बंगाल में एक शती तक अराजकता का दौर-दौरा रहा। तब बंगवासियों ने स्वेच्छा से गोपाल नामक सरदार को सन् 750 में बंग देश का राजा निर्वाचित कर लिया। इसी से पाल वंश चला। इसका पुत्र धर्मपाल ई. सं. 770 में गद्दी पर बैठा। पालवंशी नरेश कट्टर बौद्ध धर्मानुयायी थे। धर्मपाल ने जैन विहार पर अधिकार कर लिया। उसने बटगोहाली के निकट सोमपुर नामक स्थान में बौद्ध विहार की नींव डाली और जैन विहार को उसमें सम्मिलित करके एक विशाल बौद्ध विहार बना दिया। इस पर बौद्धों का अधिकार मुस्लिम शासकों के काल तक रहा। जब उन्होंने इसे नष्ट कर दिया, तब से वह भग्न दशा में पड़ा है।

बटगोहाली अर्थात् आधुनिक पहाड़पुर से प्राप्त ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है और उससे जैन विहार के सम्बन्ध में प्रकाश पड़ता है, जिसकी ख्याति लगभग सात सौ वर्ष तक विभिन्न रूपों में रही।

जैन कला और पुरातत्व—बंगाल के विभिन्न स्थानों पर जैनकला और पुरातत्व की सामग्री उपलब्ध होती है, जो परिमाण की दृष्टि से भले ही प्रचुर न हो किन्तु गुण और गरिमा की दृष्टि से उनसे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

कलकत्ता के इण्डियन म्यूजियम में पाषाण और धातुओं की कुछ जैन प्रतिमाएं कुषाण और गुप्त युग की रखी हुई हैं। भगवान् पार्श्वनाथ की एक 4 फुट ऊंची मूर्ति तथा एक शिलाफलक में लेटी हुई त्रिशला की मूर्ति गुप्त युग की कला का प्रतिनिधित्व करती है। यहां पाषाण और धातु की अन्य कई जैन मूर्तियां हैं जिनका काल ईसा की 9-10वीं शताब्दी माना जाता है।

पाकबीर—इसके पश्चात् पाकवीर-समूह के ध्वस्त पाकवीर मन्दिर हैं

(पाकवीर-समूह से हमारा आशय उन ध्वस्त मूर्तियों से है जो पाकवीर और आसपास बिखरे पड़े हैं)। ऐसा विश्वास किया जाता है कि पाकवीर और उसके आसपास विस्तृत क्षेत्र में जैनों ने, जो आजकल सराक कहलाते हैं, अनेक जैन मन्दिरों और मूर्तियों का निर्माण कराया था।

पाकवीर पुरुलिया से 45 किमी. तथा बड़ा बाजार के उत्तर-पूर्व में 30 किमी. और पौंचा के पूर्व में डेढ़ किमी. पर एक छोटा-सा गांव है जिसे पाकवीर कहते हैं। यहां बहुत से प्राचीन मन्दिर और कला सामग्री चारों ओर बिखरी पड़ी है, मुख्यतः यह जैनों से सम्बन्धित है। यहां की कुछ प्रमुख कला सामग्री एकत्रित करके एक छप्पर के नीचे जमा कर दी गई है। यह छप्पर किसी प्राचीन मन्दिर के अवशेषों के ऊपर बना हुआ है। उस मन्दिर की नींव अब तक यहां विद्यमान है। यहां सबका ध्यान आकृष्ट करने वाली एक विशाल मूर्ति है। यह मूर्ति ऋषभदेव तीर्थंकर की है। यह नौ फुट ऊंची है और श्याम वर्ण की है। अजैन जनता इसे भैरव देव मानकर पूजती है। और भी कई मूर्तियां हैं जिन पर तीर्थंकरों के चिह्न बने हुए हैं। दो छोटी मूर्तियों पर बैल के चिह्न अंकित हैं। एक छोटी मूर्ति पर कमल का चिह्न बना है। एक चैत्य है जिसके चारों ओर क्रमशः महावीर शान्तिनाथ, ऋषभदेव और कुन्थुनाथ की मूर्तियां हैं। इन चारों मूर्तियों के ऊपर दोनों ओर उड़ते हुए हंस चोंच में पुष्प-मालाएं लिए हुए दिखलाई पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त एक और चैत्य है। बड़ी मूर्ति जिस मन्दिर की थी, वह मन्दिर बड़ा विशाल रहा होगा और लगता है पाकवीर के पास एक ऐतिहासिक पाषाण है, जिस पर दो हाथ का एक वृक्ष अंकित है, इसके ऊपर एक पद्मासन जैन मूर्ति है, उसके दोनों ओर दो इन्द्र हैं, वृक्ष के ऊपर एक बालक शाखा पर बैठा है, नीचे माता-पिता बने हैं, माता की गोद में बालक है, पिता यज्ञोपवीत पहने हुए हैं, नीचे आसन में सात गृहस्थों का अंकन है, इस मूर्ति के अवलोकन से स्पष्ट है कि मध्य काल में सिंहभूम और मानभूम जिलों में जैनधर्म की स्थिति बहुत अच्छी थी। पुरातत्वावशेषों के अतिरिक्त मानभूम जिले में अन्य भी कुछ ऐसे प्रमाण उपलब्ध हैं, जिनसे मध्य काल में जैनधर्म की बिहार में स्थिति पर प्रकाश पड़ता है। इन जिलों में ब्राह्मण जाति के जो व्यक्ति निवास करते हैं, वे दो वर्गों में विभक्त हैं--पश्चिमी ब्राह्मण और पूर्वी ब्राह्मण। पश्चिमी स्वयं को वर्द्धमान महावीर की जाति का या उनका अनुयायी बतलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि पश्चिमी ब्राह्मण राजस्थान अथवा गुजरात से यात्रा करते हुए यहां पहुंचे थे और मध्य काल में वहीं बस गए थे। कहा जाता है कि ई. सन् 1023 में राजेन्द्र चोलदेव के सेनापतित्व में राज्य विस्तार के हेतु चोल सैनिकों ने मानभूम के जैन मन्दिरों को ध्वस्त कर दिया था। यहां से प्राप्त अवशेष मध्यकालीन हैं

जिससे इस जिले की मध्यकालीन जैनधर्म की स्थिति का बोध प्राप्त होता है। उसका मुख पश्चिम की ओर है। बड़ी मूर्ति पैरों और जांघों पर खण्डित है। कहा जाता है कि जब मुसलमानों ने इस देश को जीता था तो उन्होंने तलवारों से इस मूर्ति को तोड़ा था। ये निशान उसी के हैं।

इसके पास ही सन् 1871-72 में टीले की खुदाई कराई गई थी। उसमें पांच जैन कलावस्तु निकलीं। ईंटों का एक पूर्वाभिमुख मन्दिर अब भी भग्न दशा में खड़ा हुआ है। इसके उत्तर में चार पाषाण मन्दिर एक पंक्ति में हैं। जब ये बने थे, तब इनमें केवल गर्भगृह ही था, किन्तु बाद में मण्डप बना दिए गए, जो बाद में टूट गए। ये सब उत्तराभिमुखी हैं।

इनके उत्तर में पांच मन्दिर हैं। ये पंक्तिबद्ध न होकर अक्रम से हैं। इनमें दो मन्दिर पत्थरों के हैं और तीन मन्दिर ईंटों के हैं। ईंटों के मन्दिर टूटे पड़े हैं। पत्थरों के मन्दिरों में एक पूर्ण है, दूसरा भग्न हो चुका है।

इसके उत्तर में चार मन्दिरों की पंक्ति है। इसमें तीन पाषाण के हैं और एक ईंटों का है। सभी भग्न हैं। ईंटों के मन्दिर के पूर्व में दो टीले हैं जो ईंटों के दो मन्दिरों के अवशेषों से बन गए हैं। मन्दिरों की इस पंक्ति के दक्षिण में तीन पाषाण मन्दिरों की पंक्ति है, किन्तु वे सब भग्न हैं।

ये लगभग तीन-साढ़े तीन सौ वर्ग फुट में फैले हुए हैं। मन्दिरों के निकट कई तालाब हैं। एक में पत्थर के घाट बने हुए हैं लेकिन ये घाट टूट-फूट चुके हैं। मन्दिरों में जो पत्थर लगाए गए हैं, वे बलुए पाषाण हैं। ये बिना चूने के जोड़े गये हैं। कारीगरी सादा, किन्तु सुन्दर है। मण्डप या महामण्डप में जो स्तम्भ काम में लाए गए हैं वे बिल्कुल सादा हैं।

इस प्रकार लगता है, यहां पन्द्रह-सोलह या इससे भी अधिक मन्दिर थे।

पुरुलिया जिले में ही अनाईमहादेव बेडा या अनाईजामाबाद स्थान है। यह स्थान पुरुलिया से 10 किमी. दूर है। वह कंसा नदी के किनारे पर वृक्षों और लताओं से सुशोभित रमणीय स्थान है। यहां खुदाई में 11 जैन मन्दिर और अनेक जैन मूर्तियां निकली थीं किन्तु सभी भग्न अवस्था में। किन्तु कुछ वर्ष पूर्व वहां के महन्त शिवानन्दजी को भूगर्भ स्थित जैन मूर्तियों के सम्बन्ध में स्वप्न हुआ तदनुसार जमीन खोदी गई। फलतः भगवान् पार्श्वनाथ की पांच फुट ऊंची नीलवर्ण पाषाण की खड्गासन प्रतिमा उपलब्ध हुई। यह प्रतिमा एक शिलाफलक में उत्कीर्ण है। इसके दोनों ओर छह-छह कोष्ठकों में चौबीस तीर्थंकरों की खड्गासन प्रतिमाएं अंकित हैं। भगवान् के शीर्ष पर सप्तफणावली मण्डप है।

अनाईजामाबाद का क्षेत्र तो शोधकर्ताओं के लिए अत्यधिक उपयुक्त है,

साधना करने वालों के लिए साधना की जगह है। कलकत्ता, मुम्बई, मद्रास, दिल्ली, आरा, गोहाटी आदि से दर्शनार्थी यहां आते हैं। बंगाल, बिहार का तो यह अतिशय क्षेत्र है। चारों ओर के ग्राम यहां मनौती मांगते हैं। कहते हैं आश्रम के महन्त श्री शिवानन्दजी के पैर शिथिल होकर अशक्त हो गए थे। तीन माह तक उसी स्थान पर एकाग्रता से रहे जहां भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति थी। एक दिन उन्हें लगा कि किसी ने कहा भगवान् पार्श्वनाथ का 'जल ला और प्रक्षाल कर'। महन्त जी ऐसे उठे जैसे विद्युत का करण्ट छू गया और वह चलने-फिरने लगे। कंसा नदी पर गए, छानकर जल लाए और ठीक हो गए। कहते हैं इस आश्रम में हिंसक प्रवेश नहीं कर सकता। सहज विरोधी जीव—यथा नेवला और सर्प भी यहां एक साथ रहते हैं।

भगवान् के पृष्ठ भाग में सर्पकुण्डली अत्यन्त कलापूर्ण प्रतीत होती है। शीर्ष पर सप्तफणावली मण्डप है। भगवान् के पृष्ठ भाग में सर्पकुण्डली अत्यन्त कलापूर्ण प्रतीत होती है। अधोभाग में दोनों ओर चमरेन्द्र खड़े हुए हैं। चमर कन्धे पर रखा हुआ है। दोनों चमरवाहकों का एक चरण नृत्य मुद्रा में उठा हुआ है। चरणों के दोनों ओर हाथ जोड़े हुए धरणेन्द्र और पद्मावती खड़े हुए हैं। पार्श्वनाथ की यह मूर्ति अति भव्य और अतिशय सम्पन्न है। इसके अतिरिक्त और भी कई मूर्तियां निकली थीं, वे सब वहीं विराजमान हैं।

वर्धमान जिले में आसनसोल के निकट पूचहा गांव है। इस गांव के बाहर एक टीला है जिसे देवलगढ़ (राजपाड) कहते हैं। इस टीले के ऊपर भगवान् ऋषभदेव की दो फुट ऊंची पद्मासन प्रतिमा विद्यमान है। इसके अतिरिक्त पंचबालयति की प्रतिमा भी रखी हुई है। चारों ओर प्राचीन ईंटें बिखरी हुई हैं। इससे प्रतीत होता है कि यह टीला किसी प्राचीन जैन मन्दिर का अवशेष है।

खड़गपुर से 55 किमी. दूर रूपनारायण नदी तट पर कोयलघाट नामक स्थान है। इस नदी का पुल बनाते समय एक खम्भे की खुदाई में भगवान् चन्द्रप्रभु की एक प्रतिमा निकली थी जो यहां के पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में विराजमान कर दी गई। यह मूर्ति हल्के पीले और काले रंग की है। इस मूर्ति के सम्बन्ध में दो बातें बहुल प्रचलित हो गई हैं—एक तो यह कि यह मूर्ति समय-समय पर रंग बदलती है। दूसरे, इसके समक्ष जो भी मनोकामना की जाएगी वह अवश्य ही पूर्ण होगी। इन किंवदन्तियों के कारण अनेक जैन मन्दिर और जैनेतर नर-नारी यहां मनौती मनाने आते रहते हैं। इस प्रकार यह मन्दिर अतिशय क्षेत्र बनता जा रहा है।

इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि कभी यह स्थान उन जैनों का, जिन्हें आज सराक कहा जाता है, बहुत बड़ा केन्द्र रहा होगा और यहां उस

समय जैनों की संख्या बहुत रही होगी। यहां जो सामग्री उपलब्ध हुई है वह ईसा पूर्व से लेकर गुप्तकाल तक की है। इस सम्भावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इतनी बड़ी संख्या में यहां मन्दिरों का निर्माण इसलिए किया गया, क्योंकि यह तीर्थ क्षेत्र था। सम्भवतः भगवान् महावीर विहार करते हुए यहां पधारे थे और उनके उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक व्यक्तियों ने जैनधर्म अंगीकार किया था। भगवान् महावीर से पहले श्री पार्श्वनाथ जी भी यहां पधारे थे। इन तीर्थंकरों की किसी विशेष घटना की स्मृतिस्वरूप इन मन्दिरों का निर्माण किया गया।

पहाड़पुर के फलकों पर बंगाल के पशु-पक्षी और वृक्ष-वनस्पति का घनिष्ठ अंकन है। उनमें हाथी, घोड़ा, चम्पक, कदम्ब आदि हैं।

बंग जनपद में जैनधर्म के अनेक सुप्रसिद्ध केन्द्र थे किन्तु तीर्थ क्षेत्र एक भी नहीं था। आज भी बंग देश (बंगला देश और भारत के बंगाल प्रान्त) में जैनों का कोई तीर्थ विद्यमान नहीं है। प्राचीन काल में बंग देश में कर्ण, सुवर्ण, कोटिवर्ष, ताम्रलिप्ति, कोपकटक, पहाड़पुर आदि सुप्रसिद्ध जैन केन्द्र थे, किन्तु वे भी तीर्थ नहीं थे और आज तो उनकी पहचान भी दुर्लभ है।

कलकत्ता के इण्डियन म्यूजियम में ऐतिहासिक महत्व की दुर्लभ वस्तुएं और उत्खनन से प्राप्त सामग्री संग्रहीत है। इसमें पाषाण और धातुओं की मूर्तियां सुरक्षित हैं। यहां पाषाण की केवल 4 जैन तीर्थंकर मूर्तियां देखने में आई हैं :

1. एक सवा तीन फुट के शिलाफलक में चौबीस तीर्थंकरों की कामोत्सर्गासन में प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं। मध्य में श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकर पद्मासन में विराजमान हैं। यह प्रतिमा 9वीं शती की है।

2. पार्श्वनाथ की कुछ हल्के भूरे पाषाण की यह प्रतिमा तीन फुट ग्यारह इंच की है। यह पद्मासन में विराजमान है। यह प्रतिमा गुप्तयुग में 5वीं शती की स्वीकार की गई है। ध्यानस्थ पार्श्वनाथ के ऊपर संवरदेव द्वारा किए गए उपसर्ग का दृश्य अंकित है।

3. एक तीर्थंकर प्रतिमा जिसकी चरण चौकी पर कोई लांछन और लेख नहीं है, अतः यह निश्चित नहीं हो सका है कि यह किस तीर्थंकर की प्रतिमा है। इसकी अवगाहना साढ़े चार फुट है तथा पद्मासन में स्थित है। इसका काल 9-10वीं शताब्दी प्रतीत होता है।

4. एक पाषाण फलक में भगवान महावीर की माता त्रिशला लेटी हुई हैं और तीर्थंकर के गर्भावतरण के सूचक 16 स्वप्न देखती हुई सुखनिद्रा का आनन्द ले रही हैं। फलक में 16 स्वप्न अंकित हैं। यह मूर्ति गुप्त शैली में ईसा की पांचवीं शताब्दी

की अनुमानित की जाती है। यह मूर्ति महास्थान (बंगला देश) से उपलब्ध हुई थी। कुछ लोग भ्रमवश इसे मायादेवी के स्वप्नदर्शन की मूर्ति मानते हैं किन्तु वस्तुतः है त्रिशला का स्वप्नदर्शन।

5 धातु की जैन प्रतिमाएं हैं। इनमें दो पद्मासन हैं तथा शेष तीन खड्गासन हैं। पांचों ही प्रतिमाएं जैन तीर्थंकरों की हैं और प्रायः दसवीं शती की हैं। इनमें 1 प्रतिमा मध्यप्रदेश से, 3 उड़ीसा से तथा 1 प्रतिमा बंगाल से उपलब्ध हुई है।

वर्द्धमान जिले की अवस्थिति

गजेटियर (प्रकाशित) 1910 के अनुसार वर्द्धमान जिले की सीमाएं इस प्रकार हैं—

उत्तर में संथाल परगना, वीरभूम, मुर्शिदाबाद, दक्षिण में हुगली, मिदनापुर, बांकुड़ा, पूर्व में नदिया और पश्चिम में मानभूम। इसमें 2697 वर्ग मील स्थान है।

गजेटियर में कुछ विशेष विवरण तो नहीं है किन्तु कलकत्ता बंगीय साहित्य सम्मेलन का अष्टम अधिवेशन जो वर्द्धमान में हुआ था, उसका विवरण बंगला सन् 1921 का मुद्रित देखने पर प्रसिद्ध विश्वकोष के रचयिता श्रीयुत् नगेन्द्रनाथ बसु लिखित वर्द्धमान की प्राचीन कथा है। इसका सार निम्न प्रकार है—

प्राचीन काल में वर्द्धमान तथा उसके आसपास के जिले को राढ़भूमि कहते थे। मार्कण्डेय पुराण तथा वराहमिहिर की वृहत् संहिता में भी वर्द्धमान जिले का वर्णन है। इसका कहीं-कहीं नामसूत्र भी है। महाभारत के टीकाकार नीलकण्ठ ने सूक्ष्म को ही राढ़देश कहा है। श्री महावीर स्वामी के समय के अनुमान में सन् ईस्वी से 500 वर्ष पूर्व सूक्ष्म तथा राढ़देश को वर्द्धमान के नाम से जाना जाता था। 24वें तीर्थंकर भगवान् महावीर ने यहां कई वर्ष तक विहार किया इसलिए दिगम्बर जैन समाज ने इसे पुण्य क्षेत्र माना और बहुत सम्भव है कि वर्द्धमान स्वामी के पुण्य समागम होने से इस स्थान का नाम वर्द्धमान प्रसिद्ध हुआ।

आई. एच. क्यू. 4, पृष्ठ 44, साहित्य परिषद पत्रिका 1922, पृष्ठ 5 जे. बी. ओ., आर. एस. 1927, पृष्ठ 90 के अनुसार वर्द्धमान के नाम पर बंगला देश के मानभूम, सिंहभूम और वर्द्धमान जिलों के नाम पड़े हैं। यूनानी दूत मैगस्थनीज भारत में ई. पू. चतुर्थ शती में आए थे, उन्होंने भी इस देश को गंगारिडि नाम से लिखा है। यूनान और रोम देश के कवियों के वर्णन से मालूम पड़ता है कि सन् ई. से चौथी शताब्दी पूर्व से पहली शताब्दी के मध्य में इस वर्द्धमान देश के अन्दर परतालिस, गंगे और कारवया नाम के तीन प्रधान नगर थे तथा बन्दरगाह थे। फ्रांसीसी विद्वान सैण्ट मार्टिन वर्तमान वर्द्धमान को ही परतालिस कहते हैं। गंगासागर संगम को ही गंगे तथा वर्तमान कांटोया काटदया है।

सन् ई. की सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री ह्वेनसांग राढ़देश में आया था। इस यात्री ने लिखा है कि उस समय राढ़, सूक्ष्म अथवा वर्द्धमान को कर्ण सुवर्ण कहते

थे। यह प्रदेश बहुजनपूर्ण बहुत धनशाली तथा विद्यानुरागी पुरुषों का आवास था। राजधानी कर्ण सुवर्ण थी। उसमें 10 बौद्ध आश्रम तथा 50 अन्य सम्प्रदायों के देव मन्दिर थे। सन् ई. 8वीं एवं 9वीं शती में इस राढ़देश में शूरवंशीय राजाओं का अधिकार था, उसके पश्चात् पाल राजाओं के अधिकारों में जो भाग रहा उसको उत्तर राढ़ और पाल वंश के अधिकार में जो देश का भाग रहा उसको दक्षिण राढ़ कहते हैं। जैनधर्म का अस्तित्व इस देश में अति प्राचीन काल से था।

वर्द्धमान जिले में मंगलकोर थाने के अन्तर्गत उज्जैनी नगर के पास आडउयाल नामक ग्राम के मध्य में वट वृक्ष के पीछे एक मंगलचण्डी का मन्दिर है। इसके पास से होकर ग्राम में उत्तर-पूर्व कोने में लोचनदास का पाट है। यह समाधि स्थल है। इस समाधि मन्दिर के बाहर पूर्व भाग में माधवी लता के नीचे दो समाधि स्थलों के मध्य में एक कृष्ण पाषाण की बनी हुई बहुत सुन्दर जैन तीर्थंकर की प्रतिमा थी। इस मूर्ति को अब कलकत्ता बंगीय साहित्य परिषद के स्थान में लाकर रखा गया है। यह मूर्ति शान्तिनाथ भगवान् की है चूंकि आसन में मृग का चिह्न है। मूर्ति के मस्तक पर छत्र शोभायमान है। उसके दोनों ओर दुन्दुभि शोभनीक है और भी देव-देवियों की मूर्ति भूमि रूप है।

बंगाल में अनेक स्थानों पर जैन मूर्तियां मिली हैं और सरकारी संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। जैन पुरातत्व सामग्री को देखकर श्री आर. डी. बनर्जी ने इसे 'जैन प्रभाव वाला क्षेत्र' कहा है। श्री डी. के. मित्र द्वारा सुन्दर वन के पास अन्वेषण में कम-से-कम दस मूर्तियां प्रकाश में आई हैं। आर. डी. बनर्जी ने लिखा है ये सभी मूर्तियां दिगम्बर जैन सम्प्रदाय की हैं।

डॉ. उमाकान्त प्रेमानन्दशाह, एम.ए., पी-एच. डी. बगैदा ने अपनी पुस्तक Studies is India Art, Page No. 26 में लिखा है—"All the India images belongs to the Digambara Sect." अर्थात् ये सारी मूर्तियां जैन दिगम्बर सम्प्रदाय की हैं। P. C. Roy Choudhary, Jain Antiquities in Manbhum में लिखते हैं—A number at inscriptions on the Pedestals of the images have been found. Thay have not yet been property deciphereel or studied. A proper study at the inscriptions and the images supported by some excquaties in well identified area at Jaina culture will no doubt throw a good deal at light on the history of culture in this part at country extendies over two thousand years.

Amrit Aazar Patrika, Nov.1956

मानभूम जिला की अवस्थिति

सन् 1911 के गजेटियर के अनुसार मानभूम छोटा नागपुर के पूर्वीय भाग में था, उसमें लिखा है–

यह मानभूम छोटा नागपुर के पूर्वीय भाग में है। 4147 वर्ग मील जगह है जिसमें सन् 1901 में 13,01,364 जनसंख्या थी। इसकी भौगोलिक सीमा उत्तर में हजारीबाग और संथाल परगना, पूर्व में वर्द्धमान, बांकुड़ा और मिदनापुर, दक्षिण में सिंहभूम और पूर्व में रांची और हजारीबाग हैं। इसमें बराकर, दामोदर, स्वर्णरेखा तीन प्रसिद्ध नदियां हैं। इस जिले में श्रावकों की संख्या जिनको अब सराक कहते हैं 10,496 है।

इनके सम्बन्ध में मानभूम गजेटियर जिसको एक कूपलैण्ड साहब ने बनाया था तथा सन् 1911 में छपा है उसमें लिखा है–सराक लोग पक्के शाकाहारी हैं, ये मांसाहार से परहेज करते हैं–गूलर आदि कीड़े वाले फलों को नहीं खाते। दिन में खाना अच्छा समझते हैं। कुलदेवता श्री पार्श्वनाथ को कहते हैं। यद्यपि जैनधर्म का उपदेश न मिलने से यह जैनधर्म को बिल्कुल भूल गए हैं तथा श्रावकों के संस्कार मौजूद हैं।

A. S. B. 1868, No. 35 में लिखा है–

They (Sarak) are represented as having great scruples against taking life. They must not eat till they have seen the sun and they venerate Parasavnath.

The Jain images are a lear proof of the existence at the Jain religion in there parts in old times. (A. S. B. 1868)

It is now forgotten that the district at Manbhum in Chota Nagpur Division in Bihar has been a great centre in Jainin Probably no other district in India could he fane more ancient Jain Antiquities going in neglect than in Manbhum.

Manbhum was the district through which are had to pase while going from Bengal or Bihar to Utkal or Orissa.

शोध हेतु व्यापक सम्भावनाएं

आश्चर्य है कि मानभूम जिले में जैन पुरातत्व की व्यापक सामग्री फैली हुई है, परन्तु सब उपेक्षित है। बाराभूम जिले का पावनपुर छोटा-सा ग्राम प्राचीन समय में महत्वपूर्ण जैन केन्द्र था। यहां काफी प्राचीन जैन मन्दिर एवं ध्वांसावशेष हैं, कुछ मन्दिरों पर आकर्षक कलाकारी है। मन्दिर के चारों ओर तीर्थंकरों की खण्डित

प्रतिमाएं यहां 6 किलोमीटर की दूरी पर छोटा-सा ग्राम अजानी में 2 फुट ऊंची शान्तिनाथ जी भगवान् की खड्गासन प्रतिमाएं हैं।

कुछ पूर्ण प्रतिमाएं भी वृक्षों के नीचे अथवा खुले स्थानों पर पड़ी हुई हैं। इनको राजकीय संरक्षण भी नहीं है। फलस्वरूप प्रतिदिन क्षरण हो रही हैं, चूंकि इन पर राजकीय प्रतिबन्ध नहीं है, अतः कुछ लोग इन्हें अपने घरों की दीवारों में और मन्दिरों में लगवा रहे हैं। यदि इन प्रतिमाओं पर शोध किया जाए तो निश्चित रूप से इससे 2000 वर्ष प्राचीन सांस्कृतिक इतिहास पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा। जैन लोगों को इस ओर आगे आना चाहिए।

हिन्दी मनु., पी. सी. राय चौधरी के लेख

वर्द्धमान जिले की विशेषताएं

1. इस जिले में शिक्षा का विशेष प्रचार है। स्त्री, पुरुष सभी प्रायः शिक्षित हैं। उच्च शिक्षा का प्रचार है।

2. मुख्य व्यवसाय कृषि है। रहन-सहन, वार्तालाप सभी शिष्ट एवं सभ्य है। जीवन स्तर मध्यम है।

3. शुद्ध शाकाहारी हैं, अपनी मर्यादाओं का पालन करते हैं।

4. जैनाचार्यों द्वारा प्रतिपादित गृहस्थोचित नियमों का पालन घर-घर होता है। णमोकार मन्त्र तथा अन्य जैन चर्चाओं का ज्ञान है।

5. स्त्रियां घर एवं रसोई में शुद्धि और मर्यादाओं का पालन करती हैं।

6. आर्थिक स्थिति ठीक है--व्यापार, खेती, नौकरी करते हैं।

7. अतिथि सत्कार करते हैं। दहेज प्रथा से परेशान हैं।

8. कहीं भी कभी भी किसी सराक बन्धु को जघन्य अपराध में सजा नहीं मिली और न जघन्य कुकृत्य करता हुआ पकड़ा गया।

9. सादा जीवन और उच्च विचार वाले श्रद्धालु श्रावक हैं।

10. विधवा विवाह, अनमेल विवाह, विजातीय विवाह नहीं करते।

11. अपनी सराक जाति (दुमका, बांकुड़ा और संथाल परगने में ही शादी करते हैं।

12. सराक जाति का पूर्ण संगठन चाहते हैं।

13. प्याज, लहसुन, शराब, मांस, मछली, अण्डा आदि का प्रयोग नहीं करते।

14. स्वाभिमानी और बात के धनी हैं। तीर्थयात्राएं करते हैं।

वर्द्धमान

पश्चिमी बंगाल में बांकुड़ा, वर्द्धमान, पुरुलिया, मेदिनीपुर, मानभूम सराक बहुल क्षेत्र हैं। ताजा सर्वेक्षण में वर्द्धमान, पुरुलिया, बांकुड़ा के ही 139 ग्रामों में 4283 परिवारों में 32891 सराक बन्धु निवास कर रहे हैं।

प्राचीनकाल में वर्द्धमान तथा उसके आसपास की भूमि को राढ़ भूमि कहते थे। श्वेताम्बर साहित्य में भगवान् महावीर के छद्मस्थकाल के विहार का विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है। भगवान् ने लाढ़ (राढ़) देश के वज्रभूमि और शुभ्रभूमि प्रदेश में अपनी छद्मावस्था में विहार किया। उस समय वहां के निवासियों ने उपसर्ग भी किए किन्तु भगवान् के व्यक्तित्व का यह चमत्कार ही कहना होगा कि वे ही लोग भगवान् के अनुयायी बन गए और देश का नाम ही भगवान् के नाम पर वर्द्धमान हो गया। तब से राढ़ के स्थान पर वर्द्धमान ही चला आ रहा है।

पूज्य उपाध्याय ज्ञानसागर जी के प्रवास काल में उनसे प्रेरणा लेकर युवकों के एक समूह ने जिनमें प्रमुख थे—दीनबन्धु मांझी, अजित कुमार मांझी, सृष्टिधर मांझी, किरीट मांझी। एक दल इस जिले के सर्वेक्षण हेतु गया। इस जिले के 28 ग्रामों के 377 परिवारों की कुल जनसंख्या 3581 से वार्ता के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इन्हें अपने सराक होने का अनुभव तो है पर दीर्घ समय से किसी भी प्रकार का धर्म साधन न मिलने से ये अपनी संस्कृति को भुला बैठे हैं। यहां शिक्षा का प्रचार-प्रसार है। जीवन स्तर मध्यम है। सुरुचि सभ्यता है। अतः समझाने पर शीघ्र समझ भी जाते हैं। स्वभावतः सरल एवं शान्त ये बंगाल निवासी यहां की परम्रागत प्रान्तीय संस्कृति के साथ कभी तालमेल बैठा ही नहीं सके। ये अलग तो हो गए पर मांसाहार से सूर्योदय देखने वाले उस मतस्य मांसप्रिय क्षेत्र से संस्कारगत आत्मीयता न रख सके।

सराक क्षेत्र एवं उपाध्याय ज्ञानसागर जी

बीसवीं शती का यह अन्तिम दशक जैन समाज के लिए दुःस्वप्न की नीम-रोशन सुरंग की भांति है जहां प्रकाश की इधर-उधर बिखरी थिगलियां भी अंधेरे की ही छायाओं के सदृश लगती हैं। आज भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार से सांस्कृतिक आक्रमण हो रहे हैं। देव, शास्त्र, गुरु सबके प्रति श्रद्धा को हमने प्रश्नचिह्नित कर दिया। हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन में धर्म, अश्रद्धा, शंका और कुतर्कों से घिर गया है। हमने अपने वैज्ञानिक तर्कसम्मत श्रद्धास्पद जिनदेव की वाणी को इस वैज्ञानिक युग में अलमारियों में बन्द कर दिया। किन्तु ये गुरु

ही जिनकी करुणा एवं वात्सल्य समय-समय पर प्रत्येक प्राणी को सावधान कर धर्मोन्मुख करते हैं।

पश्चिमी बंगाल के रज को पूज्य श्री ने अपने चरणारबिन्द से जैसे ही स्पर्श किया कि वह माटी जन-जन के लिए पूज्य हो गई। चारों ओर के सराक क्षेत्र बंगालवासियों के सुप्त संस्कार जागृत हो गए। हजारों की संख्या मे पुरुलिया, वर्धमान, झापड़ा, मिहीजाम, पुचड़ा, रघुनाथपुर, राजड़ा आदि ग्रामों से युवा आकर चरणों को स्पर्श कर धन्य हो गए। सभी ने किसी दिगम्बर जैन साधु के दर्शन पहली बार ही किए थे। आहारचर्या का दृश्य देखने हेतु भीड़ उमड़ पड़ी।

4-12-94 को पुरुलिया (बंगाल) में बंगाल प्रान्तीय विराट सराक सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 200 ग्राम के 1500 सराक बन्धु पधारे। सम्मेलन में बंगाल के विभिन्न सराकों ने अपने विचार रखे और पूज्य श्री के शुभागमन को अपने लिए, क्षेत्र के लिए कल्याणकारी बताया। तत्काल ही पुचड़ा (वर्द्धमान) में जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार का निर्णय लिया गया। रघुनाथपुरा में एक सेन्टर तथा राजड़ा में एक जैन मन्दिर और मिनी सेन्टर एवं बोदमा में एक जैन मन्दिर का निर्माण कार्य हो चुका है, खोलने का भी प्रस्ताव पारित हुआ। हर्ष का विषय है कि श्री प्रेमचन्द जी जैन तेल वालों (मेरठ) ने इस कार्य को सम्पन्न कराया। वहां एक सेन्टर का निर्माण कार्य हो चुका है। मन्दिर का कार्य पूरा हो चुका है। शीघ्र ही 23 फरवरी, 96 में वेदी प्रतिष्ठा होने जा रही है।

वर्द्धमान जिले की गतिविधियां
1-8-95 तक की रिपोर्ट

पूज्य उपाध्याय श्री जी की पावन प्रेरणा से वर्द्धमान जिले में प्रगति के द्वार खुल गए हैं। आबाल वृद्ध जहां एक ओर धार्मिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है वहीं उन्हें स्वाबलम्बी बनाने हेतु भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। वहां विद्यालयों में अध्ययनरत असहाय सराकों को छात्रवृति एवं पाठ्य-पुस्तकें भी प्रदान की जा रही हैं तथा कम्पाउण्डरी, टाइपिंग, ड्राइविंग आदि का प्रशिक्षण देकर आर्थिक रूप से स्वाबलम्बी बनाने की दिशा में भी प्रयास किए जा रहे हैं।

वर्द्धमान जिले के ग्राम इटापाड़ा में पांचवीं-छठी-सातवीं-आठवीं एवं दसवीं कक्षा में क्रमशः अध्ययनरत छात्रों, काकुली मण्डल, शंकर मांझी, उत्तममजा, किरीटी मांझी एवं देवकुमार मांझी को 100/-, 100/-, 150/-, 150/- एवं 200 रुपये की छात्रवृति पुस्तकों हेतु वितरित की गई।

आछरा जहां सराकों के 24 घर हैं वहां के छात्रों को जो आठवीं-नवीं-दसवीं में पढ़ते हैं उनको 150 एवं 200 रुपये की छात्रवृति पुस्तकों हेतु प्रदान की गई है। इनके नाम हैं—मलय मांझी, सनातन मांझी, मिदुला मण्डल, उत्तम मांझी, प्रिया मांझी, मिलू मांझी, विवेक मांझी, सौरभ मांझी।

गोरोनडीह के दामक्यारी गांव के नवीं कक्षा के 4 छात्रों को 200 रुपये की छात्रवृति प्रदान की गई। इनके नाम हैं—विश्वरूप मांझी, अंजन मांझी, प्रशान्त मांझी, पुत्रुल मांझी।

लालगंज के 4 छात्रों को जो छठी-सातवीं-आठवीं के छात्र हैं 100, 150 एवं 200 रुपये पाठ्य-पुस्तकों हेतु प्रदान किए गए। इनके नाम हैं—सौरभ मांझी, चेताली मांझी, दीपांकर मांझी, सोवा मांझी।

पुचड़ा ग्राम के नवीं कक्षा के तीन छात्रों को 200 रुपये की छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इनके नाम हैं—देवाशीष मांझी, तारकनाथ मांझी, झरना मांझी।

सालनपुर के सातवीं-आठवीं कक्षा के 3 सराक छात्रों को 150 रुपये पाठ्य-पुस्तकों हेतु दिए गए जिनके नाम हैं—मीना लायक, बारानली लायक, अमिया लायक।

आसनसोल के आठवीं कक्षा के झूलन मण्डल को 200 रुपये दिए गए।

वर्धमान क्षेत्र में 17-18 गांवों में दिगम्बर सराक कमेटी बनाई जा चुकी है। सराक क्षेत्र में जो व्यक्ति बहुत गरीब हैं, बीमारी से पीड़ित हैं या कोई ऐसे व्यक्ति जिनका सहारा नहीं है, जो विधवा है उन्हें आर्थिक रूप से सहयोग किया जा रहा है एवं बीमार व्यक्तियों का मुफ्त इलाज कराया जा रहा है।

इसी प्रकार रोजगार प्रशिक्षण के अन्तर्गत गोराडीह कमर्शियल इन्स्टीट्यूट में 4 युवकों को टाइपिंग प्रशिक्षण प्रदान कराया गया। ये युवक हैं—मानस मांझी, आशीष मांझी, कु. बाबी मांझी, हीरसदन मांझी, माध्यमिक शिक्षा प्राप्त इन सबको प्रवेश शुल्क एवं मासिक शुल्क प्रदान किया गया। इनके कोर्स की अवधि 3 माह है।

इसी प्रकार 8 युवकों एवं युवतियों को रूपनारायणपुर राजलक्ष्मी कमर्शियल इन्स्टीट्यूट में प्रवेश दिलाया गया। इनको भी मासिक फीस एवं प्रवेश फीस प्रदान की गई। इनके नाम हैं—अशोक कुमार मांझी, अनिता मांझी, पवित्रा मांझी, श्रीमती शिखा मण्डल, तरुण कुमारी मण्डल, काकोली मांझी, प्रदीप मांझी, देवकुमारी मांझी।

मोटर ड्राइविंग के लिए वर्द्धमान जिले के सालनपुर, आछड़ा, इटापाड़ा ग्रामों के 6 युवकों को प्रशिक्षण हेतु 1-7-95 को प्रवेश दिलाया गया है। इनकी 350 रुपये महीना फीस एवं कुल खर्च 1000 रुपये प्रति युवक सराकोत्थान समिति की
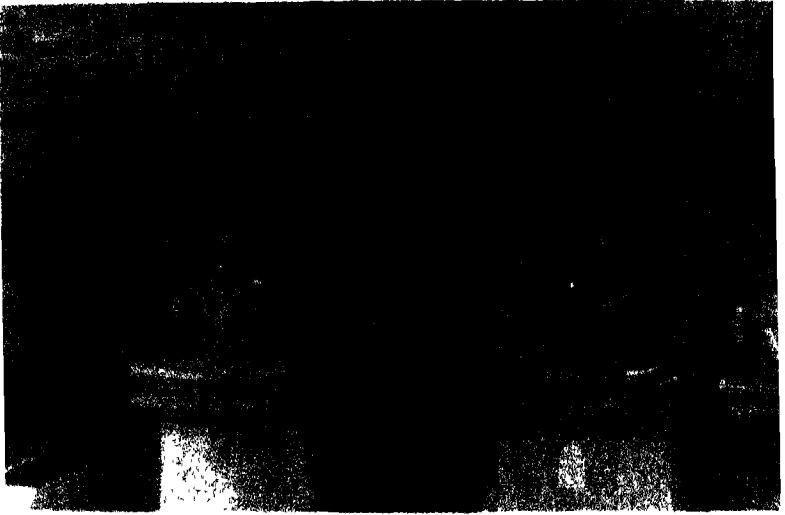
श्री रत्नगिरी जी पहाड़ पर १९८८ में नवनिर्मित मन्दिर जी में भगवान १००८ श्री पार्श्वनाथजी की ७ फुट पद्मासन प्रतिमा।

सराक क्षेत्र

श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर जी के शिखर जी का निर्माण हुए लगभग २००० वर्ष हो गये हैं। चौधरी बाजार, कटक

श्री खन्दगिरी जी पहाड़ पर भगवान १००८ श्री पार्श्वनाथ जी की ९ फुट खड्गासन प्रतिमा।

श्री जैन मन्दिर जी के अन्दर मुख्य वेदी का चित्र नायक प्रतिमा
१००८ श्री चन्द्र प्रभुजी ।
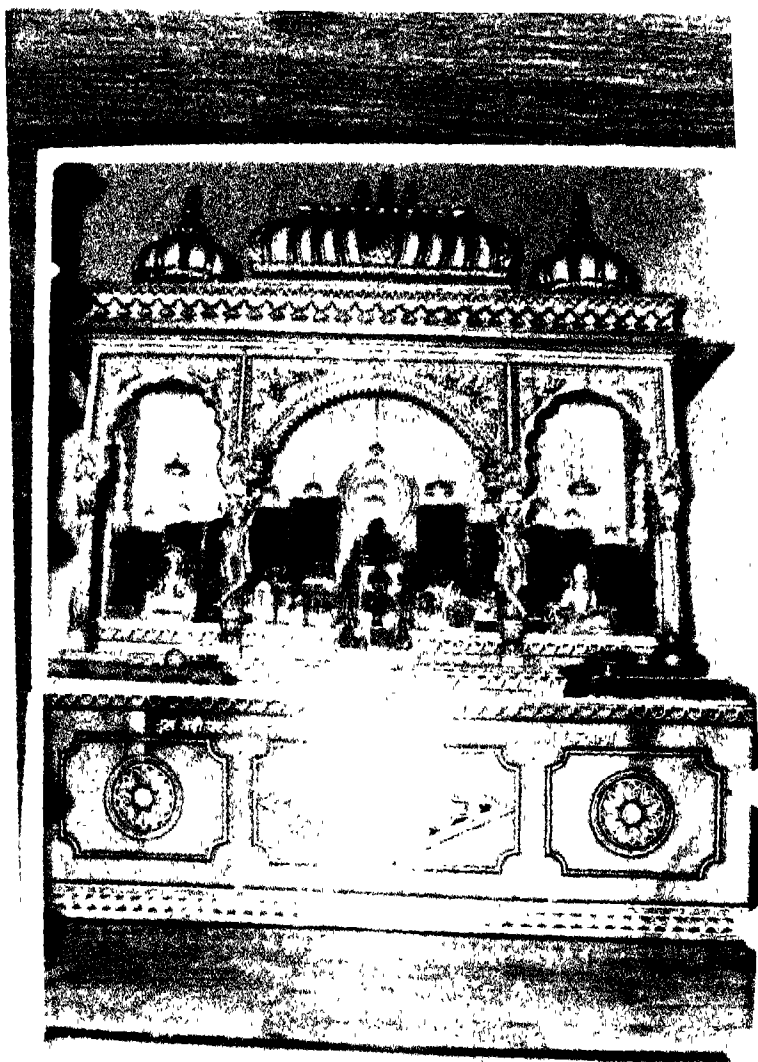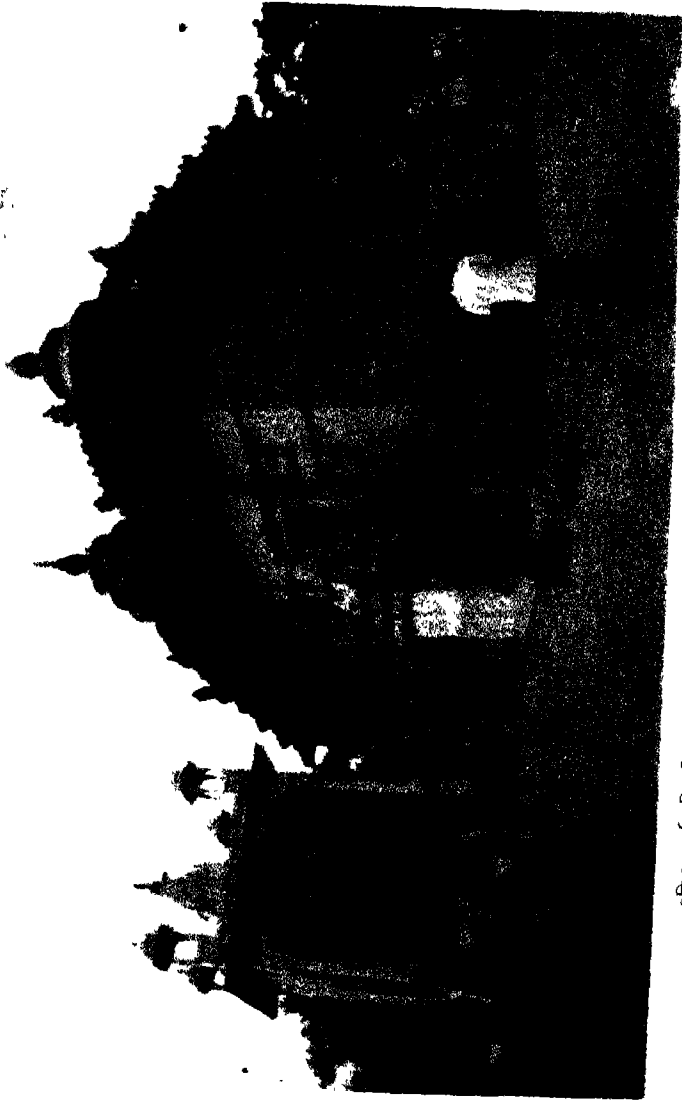
श्री रत्नगिरी जी पहाड पर लाल श्री १००८ श्री आदिनाथ जी मन्दिर, पास मे श्री पार्श्वनाथ जी की खड्गासन प्रतिमा ९ फुट का मन्दिर

श्री गन्धगिरी जी पहाड़ पर मुख्य मन्दिर जी की वेदी का दृश्य भगवान १००८ श्री आदिनाथ जी की प्रतिमा।

श्री मन्दारगिरि जी पुरानी धर्मशाला का दृश्य
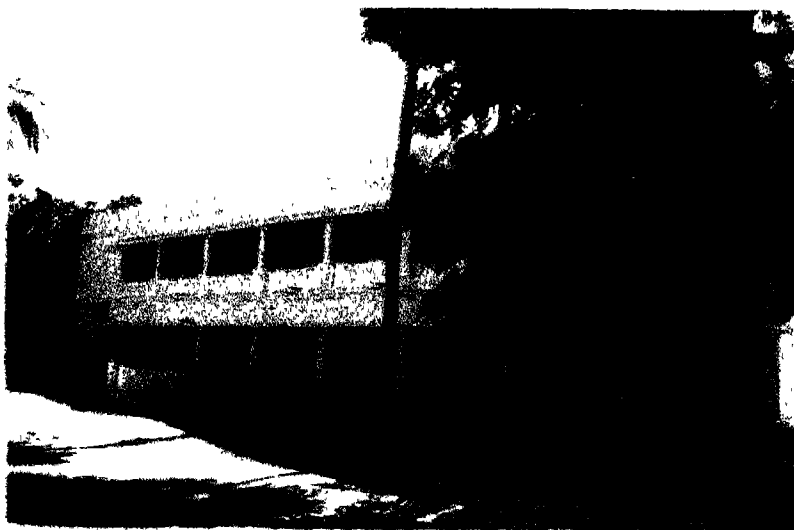
श्री मन्दारगिरि जी धर्मशाला मे नवनिर्मित धर्मशाला का दृश्य
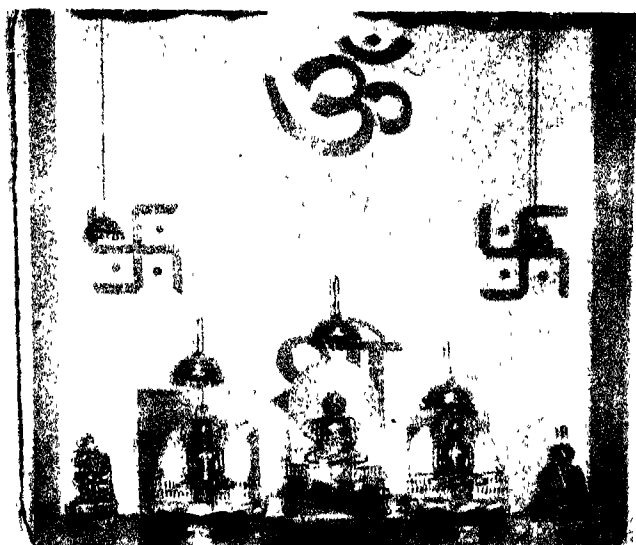
यह चैत्यालय श्री बड़ा मन्दिर जी से करीब ४ किलो मीटर दूर है।
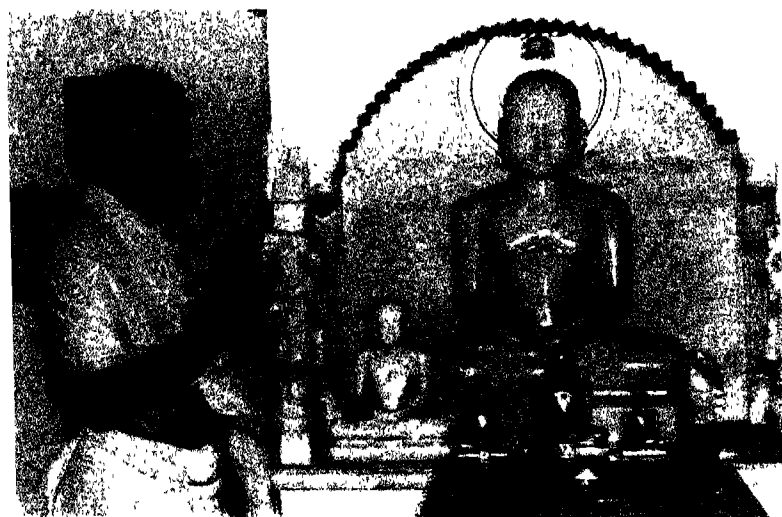
श्री खन्डगिरी जी की धर्मशाला के चैत्यालय में भगवान १००८ श्री शान्तिनाथ जी की प्रतिमा।

ओर से वहन किया जा रहा है। इन युवकों के नाम हैं—अचिन्त मांझी, प्रकाश लायक, पवित्र मांझी, रविन्द्रनाथ मांझी, विपुल मांझी, संजय मांझी।

सराक (जैन) सिलाई केन्द्र

वर्द्धमान जिले की 30 बालिकाएं इस त्रैमासिक सिलाई प्रशिक्षण में भाग ले रही हैं। प्रशिक्षित अध्यापिका द्वारा यहां प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। युवतियों के नाम हैं—आछड़ा ग्राम की रश्मि मांझी, मिटू मांझी, शांता मांझी, रक्षा मांझी, लतिका मण्डल, नन्दना मांझी, रुपाली मांझी, मितू मांझी, टुम्पा मांझी, संध्या मांझी, श्यामली मांझी, सोमा मांझी, लतिका मांझी, चैताली मांझी, ज्योत्स्ना मांझी; हरिनाडीह की अर्पणा मांझी, चित्रा मांझी, रूपाली मण्डल, सीमा मांझी, नीतू सिंह; जामुडिया की अर्पिता मांझी, मिताली मांझी; सालनपुर की काकोली मांझी, स्नेहलता मांझी, सोबिता मांझी, मिनाती मांझी।

अभी इस जिले में और विकास करना है। यह तो प्रारम्भिक चरण है। यदि इधर और धन की व्यवस्था हो जाए तो निश्चित रूप से बालक-बालिकाएं स्वावलम्बी बनकर आजीविका के लिए किसी के आश्रित नहीं रहेंगे। इनके संस्कार आत्माभिमान के ही हैं। हमें इन्हें सुरक्षित रखने में योगदान देना है।

यहां सर्वेक्षणोपरान्त यह अनुभव किया गया कि—

इस क्षेत्र में जैन साहित्य जो बंगाली भाषा में हो उसकी तत्काल आवश्यकता है। धार्मिक शिक्षण शिविरों का भी अधिक संख्या में दीर्घावधि तक आयोजन होना चाहिए। भिन्न-भिन्न आयु के लिए मानसिक स्तर एवं उनकी अभिरुचि के अनुरूप पाठ्यक्रम किया जाना अपेक्षित है। सम्पूर्ण क्षेत्र मांसाहारी होने से समस्या अत्यधिक गंभीर है। यहां के सामाजिक जीवन को पुनः शाकाहारी संस्कृति की ओर मोड़ने के लिए हृदय परिवर्तन आवश्यक है। प्रशिक्षण केन्द्र ऐसे होने चाहिएं जो सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों का भी स्थायी हल ढूंढ सकें। जैनत्व के संस्कार जागृत कर सकें यहां संस्कार शिविर लगाने होंगे। सर्वसाधारण का मानसिक विकास करना होगा ताकि उनका दृष्टिकोण संतुलित बनाकर समाज के निर्माण में उनके योगदान में वृद्धि की जा सके। पूज्य उपाध्याय श्री जी की प्रेरणा से ही जब से बंगला भाषा में 'सराक संहिता' बुलेटिन का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, व्यापक जनजागरण हुआ है। यहां एक व्यापक नीति बनाकर तत्काल प्रभावी उपायों पर विचार करने और कार्यक्रम का पुनर्गठन करके कुछ योजनाएं चलाई गई हैं।

यह सत्य है कि वैशाली और विदेह से प्रारम्भ होकर मगध, कौशल, तक्षशिला और सौराष्ट्र, कलिंग, उड़ीसा, बंग तक श्रमण धर्म फैला और इसे अंतिम तीर्थंकर

भगवान् महावीर ने छठी सदी ई. पू. में सुव्यस्थित रूप देकर देशव्यापी बना दिया। साथ ही उत्तर और दक्षिण भारत के विभिन्न राजवंशों तथा तत्कालीन समाज को प्रभावित किया और अपने आन्तरिक गुणों के कारण समस्त देश में आज भी अपना अस्तित्व उसी प्रकार सुरक्षित रखे हुए हैं। इस क्षेत्र में सराकों की अवस्थिति स्पष्ट परिलक्षित करती है कि यहां जैनत्व के संस्कार प्राणियों के हृदय में गहरे तक प्रवेश कर गए थे। तभी तो हजारों वर्षों के अनेक राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक उत्थान-पतन इन्हें इनके संस्कारों से दूर नहीं कर पाए।

इसके अतिरिक्त यहां के सराकों ने अपने प्रान्त को गुफाओं, मन्दिरों, मूर्तियों, चित्रों एवं ललित कलाओं के माध्यम से न केवल लोक का नैतिक व आध्यात्मिक स्तर उठाने का प्रयास किया है अपितु देश के विभिन्न भागों को अपने सौन्दर्य से सजाया है। अपने क्षेत्र को वर्द्धमान और मानभूम जैसे नाम देकर उन्होंने जैन धर्म और इसकी संस्कृति की लोकप्रियता को अमर कर दिया।

प्राचीन मानभूम जिले का भौगोलिक क्षेत्र वर्तमान दक्षिण बिहार के पूर्वी भाग एवं बंगाल प्रान्त के पश्चिमी भाग जो वर्तमान बिहार एवं बंगाल के सीमावर्ती क्षेत्र कहलाते हैं अर्थात् बंगाल प्रान्त के पुरुलिया, मेदिनीपुर जिला, बिहार प्रान्त के धनबाद एवं बोकारो जिला जिसके मध्य से दामोदर, स्वर्णरेखा एवं कंसावती नदी बहती हैं, वे सब स्थान मूल जैन सराकों का निवास था। इसी स्थान में रहते हुए प्राचीन जैन सराकों को तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ एवं भगवान् महावीर के दर्शन हुए थे और इन तीर्थंकरों के प्रवचनों से सराक गण आज तक श्रावक बने हुए हैं। डॉ. उपेन्द्र नाथ ठाकुर (बोध गया) कहते हैं–

यह मानभूम जिला किसी समय जैनधर्म का महान केन्द्र था। जैन पुरातत्व के जितने अवशेष यहां प्राप्त हुए हैं संभवतः भारत के किसी भी स्थान में अभी तक इतने नहीं मिले हैं। प्राचीन काल में बंगाल अथवा बिहार से उड़ीसा जाने के लिए मानभूम होकर ही लोगों को जाना पड़ता था।

उड़ीसा का प्रसिद्ध सम्राट खारवेल गया स्थित बराबर पहाड़ियों तक आया था और मानभूम के माध्यम से ही बिहार और उड़ीसा के बीच उस समय सम्पर्क स्थापित था। मानभूम से इतनी प्रचुर मात्रा में जैन अवशेषों की प्राप्ति के पीछे यह भी एक कारण हो सकता है। ह्वेनसांग के अनुसार–यहां के बारभूम परगना के 'बड़ा बाजार' नामक स्थान तक भगवान् महावीर आए थे। बलरामपुर, बोराम, चंदनक्यारी, पाकबीरा, बुधपुर, दारिका, चर्रा, हुल्मी, देवली, भवानीपुर, अनई, कटरासगढ़, चेचगांवगढ़ आदि अनेक स्थानों पर जैन अवशेष भरे पड़े हैं।

पश्चिम बंगाल का ही मान बाजार एरिया निम्न प्रकार है–इसमें सराकों के

निम्न ग्राम हैं—बसन्तपुर, डीलटेड़ा, बोब, रांगमेटा, खड़िकबाड़ा शासनगढ़, बसंतपुर, डोंगोड़ी, कुडली, झसगाड़ी, चंदनपुर, लुसड़ी, डकनगढ़, सोमेड़ी, खालोबोला, कुलबनी, बासुडी, मोहनपुना, किस्टोर, पाथरकांदा, घाटनीबड़ा, मोकूआड़ी, पियलसोल, मूलाड़ी आदि। इन ग्रामों में पुनः जागृति की आवश्यकता है।

कर्नल डाल्टन ने लिखा है—मैंने इस जिले में दो भिन्न प्रकार के स्थापत्यों के ध्वंशावशेष देखे उनमें जो प्राचीन हैं उनके विषय में कहा जाता है कि ये सराकों द्वारा निर्मित हैं—इसमें कोई सन्देह भी नहीं है कि वे उन प्रथम आर्य औपनिवेशियों द्वारा निर्मित थे जिन्हें 'सेराय', 'सेराव' सराक या श्रावक कहा जाता है। लगता है सराकों ने अपनी बस्तियां नदियों के किनारे स्थापित की थीं। शायद इसीलिए उनके मन्दिर के ध्वंशावशेष दामोदर, कंसाई व अन्य नदियों के किनारे ही पाए जाते हैं। कंसाई नदी की तटभूमि पुराकीर्ति का एक समृद्ध क्षेत्र है। मैंने वहां की मूर्तियां देखी हैं और इस विषय में आश्वस्त भी हूं कि ये सब पशु लांछन सिंह वाली जैन तीर्थंकरों की ही मूर्तियां हैं।

मानभूम के भी कई जिलों में सराक लोग निवास करते हैं। मि. कूपलैण्ड ने सन् 1911 में मानभूम गजेटियर प्रकाशित किया था। उसमें उन्होंने सराकों के बारे में लिखा है—

"इस जिले में एक विशेष जाति के लोग रहते हैं जिन्हें सराक कहते हैं। इनकी संख्या बहुत है। ये लोग मूलतः जैन हैं। अनुश्रुतियों के अनुसार ये और भूमिज एक ही जाति की सन्तान हैं। ये लोग भूमिजों के साथ हेल-मेल से रहते हैं। सराक सदा से शान्तिप्रिय जाति रही है। यह जाति इस जिले में ईसा से पांच-छः शताब्दी पूर्व से रहती आई है। पाकवीर में एक बड़ी मूर्ति भीरमर अथवा चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी की है जो इस जाति के लिए आराध्य देन है।" प्रो. सर विल्सन ने लिखा है—महावीर स्वामी साधु दशा में वज्रभूमि और शुभ्रभूमि के देशों में आए थे जहां भूमिजों ने उन पर उपसर्ग किए थे। किन्तु इन उपसर्गों का उन्होंने कुछ ख्याल नहीं किया।

कर्नल डेल्टन का विचार है कि महावीर तीर्थंकर के लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं था। यह भी असंभव नहीं लगता कि जहां-जहां महावीर गए हैं, वहां-वहां लोगों ने मन्दिर बनवा दिए हों तथा उनका उपदेश सुनकर उनके विरोधी भूमिज उनके अनुयायी हो गए हों अथवा ऐसा हो कि वे वहां गए हों जहां जैन पहले से ही (शिखर जी के आसपास) बसे हुए थे।

कर्नल डेल्टन ने बंगाल एशियाटिक सोसायटी जर्नल अंक 35 सन् 1868 में सराकों के अहिंसा प्रेम और उनकी शान्तिप्रियता के सम्बन्ध में एक लेख लिखा था जिसका आशय इस प्रकार है—

मानभूम में प्राचीन कला के अनेक चिह्न प्राप्त होते हैं जो सर्वाधिक प्राचीन हैं और जैसा कि यहां के लोग कहते हैं। ये वास्तव में उन लोगों के हैं जिस जाति के लोगों को सिराव, सिराफ या सरावक कहते हैं। जो शायद भारत के इस भाग में सबसे प्राचीन निवासी थे। सिंहभूम के पूर्वीय भागों में भी सराकों की प्राचीन भूमि प्रसिद्ध है। ये नदियों के तट पर बसे और हम उनके खण्डित मन्दिर दामोदर, कंसाई तथा अन्य नदियों के तट पर पाते हैं। ये लोग जीव हिंसा से घृणा करते हैं और ये सूर्योदय से पूर्व भोजन नहीं करते। ये पार्श्वनाथ की पूजा करते हैं। छापड़ा गांव के लोग बहुत ही प्रतिष्ठित और बुद्धिमान प्रतीत होते हैं। वे स्वयं को श्रावक कहते थे तथा वे इस बात का गर्व करते थे कि इस ब्रिटिश राज्य में उनमें से किसी को अब तक कोई फौजदारी अपराध का दण्ड नहीं मिला है।

इधर के सराक इस बात को विश्वासपूर्वक कहते हैं कि वे पहले अग्रवाल थे, पार्श्वनाथ की पूजा करते थे और सरयू नदी के तटवर्ती देश में रहते थे। सरयू गाजीपुर के पास जहां गंगा मिलती है वहां वे व्यापार और सर्राफा का धन्धा करते थे।

विशेष उल्लेखनीय यह है कि देश के इस भाग के सराकों की सेवा ब्राह्मण करते हैं जो कहीं-कहीं पुजारी का काम करने से निम्न माने जाते हैं।

मानभूम जिले में अनेक स्थान ऐसे हैं जहां सराक मिलते हैं अथवा प्राचीन जैन मन्दिरों के अवशेष हैं। बलरामपुर में बैजनाथ के मन्दिर जैसा एक मन्दिर है, यह पुराने जैन मन्दिर को तोड़कर बनाया गया है। इसमें अभी तक नग्न मूर्तियां अंकित हैं। बोरम में तीन जैन मन्दिर हैं जो जीर्ण दशा में खड़े हैं। इनमें जो ईंटें प्रयुक्त हुई हैं वे बारह इंच से लेकर अठारह इंच तक लम्बी और दो इंच मोटी हैं। पुरुलिया से उत्तर-पूर्व में 6 किमी. दूर छर्रा गांव है। यहां गांव में जैन मूर्तियां पड़ी हुई हैं। कुछ मन्दिरों के अवशेष पड़े हुए हैं। आसपास के सरोवर सराकों द्वारा बनाए हुए हैं। स्वर्णरिखा नदी के किनारे डलमा या दयापुर डलमी नगर में जैन मन्दिरों के अवशेष मिलते हैं। डलमा से 15 किमी. उत्तर-पश्चिम में देवली गांव के करण वृक्ष के नीचे मन्दिरों के चिह्न विद्यमान हैं। एक मूर्ति अरहनाथ भगवान् की तीन फुट की है। सिर के दोनों ओर छः-छः तीर्थंकर प्रतिमाएं बनी हुई हैं। संभवतः यहां पांच मन्दिर थे, जिनमें दो अभी मौजूद हैं। ईचागढ़ के पास देवलटांड़ में जैन चिह्न मिलते हैं। कतरासगढ़ के पास दामोदर नदी के दोनों तटों पर चेचगांवगढ़ और वैलेंजा में प्राचीन भग्न मन्दिर हैं। यहां दोनों तटों पर लगभग 20 भग्न जैन मन्दिर विद्यमान हैं। पराभूम परगने के एक गांव पवनपुर में बहुत से जैन मन्दिरों के चिह्न मिलते हैं।

पाश्चात्य विद्वानों ने भी इन प्राचीन अवशेषों को देखकर स्वीकार किया है कि सराक जैन हैं। सन् 1868 में 'जियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' नामक पुस्तक में प्रो. मी. बाल कुछ प्रमाणों के आधार पर लिखते हैं–

According to the Vansuprubh Le Khra the chronicle of the single dynesty of Porhat, Saraks entered and settled in Kolhan before 7th Century A.D. But is generally belived that Saraks had been in possession of Kolhan in about the 14th century and 15th centuries A.D. from which time their temples were extent in the former district of Manbhum. There Jain temples or shrines were very likely built by the people of the area in honour of the Saint had visited this area in either 6th or 5th century B.C. He convertedmany people.

तटस्थ भाव से हम अवलोकन करें तो निर्विवाद रूप से कह सकते हैं कि समाज को अतिशीघ्र ही सजग होना चाहिए। हमारे ये सराक बन्धु हैं, इनकी सुरक्षा और विकास हेतु किए गए प्रयास कोई दान या भिक्षा नहीं हैं अपितु इस मूल मन्त्र को हृदयंगम करना चाहिए, यह तो एक प्रकार का निवेश है उस क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने का। इनकी रक्षा करना समाज, जैनत्व, श्रमण संस्कृति व श्रावकाचार की रक्षा करना है। यह कर्तव्य नहीं, नितान्त अनिवार्य आवश्यकता भी है। आइए कम से कम एक सराक परिवार को बसाएं, एक गांव को संवारें, एक क्षेत्र को संभालें और उसे समृद्ध व श्री सम्पन्न बनायें।

हमारा अद्यतन अनुभव यही सिखाता, बताता है कि पारस्परिक सहयोग एवं सामाजिक संतुलन के साथ साधर्मी बन्धुओं के साथ वत्सलता एवं देव शास्त्र गुरु के प्रति आत्मिक समर्पण से ही हमने आज तक स्वयं को, अपने धर्म को एवं संस्कृति को जीवित रखा है। आज सामाजिक क्रान्ति की भी आवश्यकता है व मानसिक क्रान्ति की भी। यह क्रान्ति भी कहीं बाहर से नहीं स्वयं हमारे अन्तरंग से ही आनी चाहिए और आएगी भी। हर श्रावक सच्चे अर्थों में सराक बनेगा। वह मन के खेत में स्नेह के बीज बोयेगा और अधिक से अधिक देखभाल व सावधानी करेगा। स्वार्थ भावनाओं को दूर भगाकर मन के खेत की सुरक्षा करेगा और उसमें समर्पण की फसल बोयेगा। भौतिकता की चमक-दमक के विद्युत बल्बों पर निर्भर न रहकर प्रेम के दीप से 'सनातन प्रकाश' पर निर्भर रहेगा। उसका तन और मन प्रत्येक दशा में अपने बिछुड़े भाइयों को हृदय से लगाने में रहेगा। इस प्रकार ही सराक विकास की ओर सही कदम बढ़ेंगे।

JAIN ANTIQUITIES IN MANBHUM

It is now almost forgotten that the district of Manbhum in Chotanagpur Division of Bihar had once been a great centre of Jainism. Probably in no other district in India could be found more ancient Jain antiquities lying in neglect than in Manbhum. Manbhum was the district through which one had to pass while going from Bengal or Bihar to Utkal or Orissa

It will be remembered that Jainism as a creed had once a very great hold on Orissa. The antiquities in Khandagiri Caves in Orissa are unique specimens of Jain antiquities. The famous Jain King Kharavela of Utkal or Orissa came upto Barabar hills in Gaya where he had left his impress. Manbhum was the via media through which the contacts between Bihar and Orissa were maintained. This may be one of the reasons why there are so many Jain antiquities scattered all over the district of Manbhum.

Hiuen Tsang, the Chinese traveller in India in the 7th century A.D., mentions that he came across a province which he called "Safa". General Cunningham mentioned that Bara Bazar of the Barabhum Pargana in Manbhum district was the headquarters of this "Safa" province. Mr. Hibert, however, identifies Dalmi, which is near Patkum as the capital of "Safa" province. There are some ancient remains which are clearly of Jain origin at Dalmi hills. Srawakas or lay Jains in this part of the district was a great factor at one time The Srawakas occupied important areas in Manbhum district and were predecessors to the Bhumij population in Manbhum. They were mostly engaged in some sort of trade. The district of Manbhum was very important for the inter-district and inter-province trade routes connecting Banaras, Jagarnathpuri and Tamralipta, an important port in Bengal. Even now there are a large number of Jains scattered all over the district of Manbhum. For our purposes we have included the present sub-district of Dhanbad as a part of Manbhum. There is no doubt that Dhanbad will very soon attain the status of a full district.

Tradition ascribes to Lord Mahavira having visited the province of "Safa" when he was on tour for the spread of his cult. It is said that the aboriginals who were in an overwhelming majority in the Safa province were not very keen to listen to or follow Mahavira and that he was even molested by them. But undaunted, Lord Mahavira went about preaching his cult and ultimately his sense of sobriety and saintliness touched the heart of the tribal population and many were converted to Jainism.

Balrampur, commonly known as Palma Balrampur, a village about four miles from Purulia, is on the bank of river Kasai. There is a temple at Balrampur in which there are a number of Jain images some of which are clearly of the Jain *Tirthankars*. Some of the images have the Jain *Chinhas* and are apparently quite old. An inscription on a stone fixed to a pillar was found at this village. The inscription was removed several years back by an agency commonly ascribed to be a Settlement Officer and now could be seen fixed by the roadside within the Court compound.

At Boram, a big village situated four miles south from Jaipur railway station, there are three temples in ruin which are said to be constructed by the Srawakas or the lay Jains. These three temples are identical in design. These temples have Jain images and were originally Jain shrines. To the south about a mile away from Boram there is a shrine where there are images in nudity. This by itself is a clear proof that the images are Jain in origin. The shrine is now taken to be a Hindu temple

Chandankiari, another village a few miles away from Purulia, the headquarters of Manbhum district, is the place where a large number of Jain antiquities were accidentally found. The collection in Patna Museum of the images of the Jain *Tirthankars* that were found in Chandankiari makes one of the finest collections of Jain antiquities in India. Most of these images have been identified by the clear *Chinhas* or special emblems of the *Tirthankars*. Some of the figures are exquisite from the artistic point of view. The workmanship is delicate and superb. They are all of the 11th century A. D. There are two other villages within five miles of Chandankiari, namely, Kumhri and Kumardaga, where also there are some old Jain images.

At both these villages inscriptions have been found one of which is said to have been removed by a local gentleman.

Among the other old Jain remains in Manbhum district, particular mention need be made about the Jain temples and sculptures at the small village of Pakbira, twenty miles north-east of Bara Bazar or 32 miles by Purulia-Puncha road in Manbhum (Purulia) district. They had attracted the attention of the Archaeological Deptt J.D. Beglar in the Archaeological Survey of India, Vol. VIII, mentions about the remains at Pakbira as follows:

"Here are numerous temples and sculptures, principally Jaina; the principal ones are collected within a long shed, which occupies the site of a large temple, of which the foundations still exist; the principal object of attention here is a colossal naked figure, with the lotus as symbol on the pedestal; the figure is 7.5 ft. high; near it, and along the walls are ranged numerous others, two small ones with the bull symbol, one smaller with the lotus, a votive *chaity* a sculptured on four sides, the symbols of the figures on the four sides being a lion, an antelope, a bull, and what appears to be a lamb; over each principal human figure on the chaitya is represented a duck or a goose, holding a garland; there is, besides this, a second votive *chaitya*, and there may be others within that I could not see, the temple, which enshrined the colossal figure, must have faced west; it was very large, containing the full complement of preliminary chambers and hall in front of the sanctum." ....

"To the north of this stands a line of four stone temples, three still standing, one broken; these are of the usual single-cell pattern, and the doorway is not cut up into two portions; these then, as well as the brick one just noticed were single-cell temples, but at some subsequent period *mandaps* were added to them, they have, however, all got broken, leaving the facades of the temples complete, so that not only is it evident that they were simply added on afterwards, but it is rather evident that they were not even bounded into the walls of the original temples; the junctions, where any exist, are quite plain; all these temples face north.

North of this is another, but irregular, line of temples, five in

number; of these, two are of stone and three of brick, the latter all ruined; of the stone ones, one is standing.

North of this is another line of four temples, three of stone and one of brick, all in ruins "

Besides these temples there are also some mounds which may be the remains of either big temples or may be the remains of stupas. Jain tradition is also clearly visible in the remains of a few big tanks and in their vicinity a few more mounds. It is a pity that the temples and the scattered antiquities have been allowed to decay. Excavations may have revealed an important phase of Jain culture.

A mela is held at Pakbira in the month of Chaitra where animal sacrifices used to be held Since the last few years animal sacrifices are not being offered owing to persuasion by the Jains. An attempt is being made by some of the leading Jains of Purulia and Ranchi to build a temple at Pakbira and to preserve the Jain antiquities. Inspite of vandalism due to neglect for many years there are still some finely preserved images. There are now three temples in ruins and about 20 images lying collected at three places. The temples are buried and the *Shikhars* (tops) of the temples are to be seen. A number of images are also lying half-buried. One of the images is 5 cubits high and of Shri Bahubalji. Unfortunately this image of Shri Bahubalji has developed a crack. This image is worshipped at the present by the villagers as Bhaironath. There are arrangements to give a bath to the image of Shri Bahubalji. The image is now well besmeared with oil and vermillion owing to the worship by the Hindus as Bhaironath. A number of the images lying scattered are in *Khadgasan* pose. The images also iinclude Parsvanath, Mahavirji, Padmavati and Rishavdev. The images are apparently ancient and an opinion has been hazarded that they may be 2,000 years old. Carvings are superb and most of the images are still intact.

Apparently Pakbira was a very important place at one time. Several smaller villages near about Pakbira, although they have separate names, are commonly grouped under the name of Pakbira. At some of these smaller villages there are exquisitely carved stone door jambs or pillars. In the neighbouring village of Pankha there are four images which have been damaged. One of them is that of Shri

Rishavdev with 24 *Tirthankars* on the sides. There is another rare specimen at this village. On a stone slab a tree of the height of 2 cubits has been carved with a child sitting at the top of the tree. Under the tree there are figures indicating father and mother and the mother is with a baby The figure depicting a father has got the sacred thread. Near them stand seven persons. It is difficult to come to a correct appraisal of this specimen but probably it indicates the birth of some *Tirthankar*.

In the neighbouring village of Budhpur there are a number of images which are worshipped once annually in the course of a year. Some of these images are Jain specimens. Some of the images have been removed by individuals.

At another small village Darika, three miles to south-west of the ruins at Chechgaongarh there are also a number of old ruins, tanks, mounds and cells whcih are clearly of Jain origin. Beglar had noticed here a Jain statue in black basalt He mentions "at the first village beyond Chandankiari is a statue of one of the Jain hierarchs in black basalt, he is represented seated cross-legged in the usual fashion, and on his pedestal is the bull symbol. It is on the banks of a large, now dry, tank near the old road from Midnapur to Banaras, which passes through Chas and Para."

At Chharra, about four miles from Purulia, the district headquarters of Manbhum, there are some ruins of old temples. Some of the temples are clearly Jain in origin. There are numerous votive chaityas with mutilated figures, of the Jain hierarchs. It is said that a number of smaller relics have been removed from this area when Chharra had a military colony in the Second Great War.

The writer noticed clear images of Kunthanatha, Chandraprabhu, Dhanendra-Padmavati, Rishabhdeva and Mahavira at this village. At Dharmasthan, a place of worship, a number of broken images of various *Tirthankaras* and some fine specimens of head were found. At Chharrah there used to be five stone and one brick temples. Out of them only two stone temples are in existence now but without any images. The stones of the broken temples, as is common in this part of the country, have been largely used by the villagers in building up their houses. In the neighbouring village

Bhangrah two broken pieces of an image were found and the third piece was brought out from among a heap of old bricks and pieced up. The image was found to be a fine specimen of Rishabhdeva.

The next important group of Jain shrines in ruins are found at Dulmi, twentyfive miles west of Bara Bazar. Dulmi is a small village on the banks of Subarnarekha river. There are numerous mounds, some of stone and others of bricks. The Jain temples are all exclusively at the extreme north end of what was probably the old city according to Beglar Dulmi is an ancient place.

Beglar was convinced that this area was the seat of Jain ascendancy at one time and that the Jain influence was succeeded by Hinduism. He mentions "Some of the sculpture is clearly Jain, and it is not impossible but on the contrary probable, that the others regarding which there can be any doubt are also Jain; there must accordingly have been a large Jain establishment here in the ninth and tenth centuries, succeeded, say, about the eleventh century, by Hinduism." (Report of Tour through the Bengal Province, Archaeological Survey of India, Vol. VIII, 1878). The fusion of the two creeds that this area saw is borne out by some orthodox Hindu antiquities as well. This is very unfortunate that the Jain images at this place have almost all disappeared.

A few miles from Dulmi is the small village of Deoli. There is a group of old temples at Deoli and they all appear to have been Jain. In the sanctum of the largest temple there is *in situ* a Jain figure known as Arhanath. Hindu eclecticism has claimed the figure as one of the Hindu pantheon and the figure is now worshipped by the Hindus as well. The statue is three feet high hand on a pedestal. The figure of an antelope sculptured on the pedestal and two rows of three naked figures each over the head cut on each side make out their clear Jain origin. The main temple which is now in ruins consists of a sanctum, *antarala*, and a *mahamandapa*. There are a number of small temples by the side of the main temple. Under a tree within the distance of half a mile there is a Jain figure in nudity with the serpent-hood above the head. Research and exploration in this area are bound to bring out more relics.

When Beglar visited Suissa, a village near Deoli, he found

under a *bar* (banyan) tree a collection of statues. He speaks of the statues as follows :

"The sculptures collected under the tree are Jain and Brahmanical; the principal are known by the names below :

Monsa, a naked Jain figure with the snake symbol.

Siva, a naked Jain figure with the bull symbol.

Siva, a votiva chaitya with four naked figures on the four sides, evidently Jain.

Sankhachakra, a figure of Vishnu Chaturbhuj.

Parvati, a female seated on a lion.

Besides these, there are two small Jain figures. . . . . a female under a tree which I take to represent Maru Devi under the sal tree; another female under a tree, with five Buddhist or Jain figures seated round her head on branches of the tree; on each side are four rows of two each of elephant and horse-faced men. Bunches of flowers and fruit hang round the head of the female figure." (Vol.VIII, Arc Surv. of India). Now there is an enclosure and there are four temples at four corners and one temple in the middle. The temple in the middle is very big and has fine images. This temple, undoubtedly, is very ancient. It is a tragedy that neglect has encouraged vandalism and some of the figures Beglar saw do not exist at the site now.

It is also to be noted that a large number of inscriptions are lying scattered in different parts of the district of Manbhum. It is recently that a concerted attempt is being made through a historical society at Purulia to collect these inscriptions and to have them properly deciphered There are inscriptions found at village Karcha, Bhawanipur, Palma, Anai, Bauridih, Kumhri. Kumardaga, Chaliana, Simagunda and Jaida, all in Manbhum Sadar Some of these inscriptions, particularly at villages Karcha, Bhawanipur, Palma, Anai and Bauridih have probably references to Jainism as there are many Jain antiquities found at the places where inscriptions were detected. The largest inscription is at Simagunda near Nimidih Railway Station and contains six lines.

There are several other villages which were not noticed by Beglar but which evidently had exclusive Jain images when Beglar travelled through the district. Some of these Jain antiquities are still

to be seen although there has been a lot of vandalism on them. One of the most important of such villages is Karcha about six miles from Purulia. There are a large number of Jain statues and five ancient mounds, the excavation of which is likely to yield fruitful results. At Bhawanipur which is about one mile to the east of Karcha village an inscription has been found on the pedestal of an undoubtedly Jain *Tirthankar* Rishavnath.

This village Bhawanipur, about 8 miles east of Purulia, was apparently a centre of Jainism in the past. The clear image of Rishavnath has 24 *Tirthankars* engraved on the sides and there are also the usual figures of *Chamaris, Incensors* and *Yakshis.* By the side of this image under a tree the writer also saw another small image of Chakreshwari Devi. Under another tree nearby in the same village of Bhawanipur there is a Jain figure of a person on an animal which looks like a *Makar* (crocodile). The seated person has a sword in one hand and a bell in the other. The animal in this figure is taken by some as a dog but there is no place of a *Kukurbahan* image (where the dog is the mode of conveyance). Under the same tree there is also an image of Padmavati and Dhanendra. Apparently the image has been torn from its environments. The image of Padmavati and Dhanendra is now taken to be Hara-Parvati.

Another such village is Anai about three miles from Karcha, on the river Kasai. Nearabout Anai village there are other ruins of brick built old temples some with broken images and some without any. Many of the images that had been observed in these Jain temples 30 years back have disappeared by now. The village of Bauridih near Ladurka is on Purulia-Hura road at a distance of 11 miles. It has recently yielded to the efforts of Purulia Historical Society five Jain images three of which are of Rishavnath, Chandraprabhu and Parsvanath respectively as made out from the *Chinhas*. The two other images are of the 24th *Tirthankar* Mahavira. Peculiarly enough in this village an inscription on a piece of stone has been used in the masonry work within the ring of a well. This clearly shows that the stone slabs containing images and inscriptions were open to free vandalism in the hands of unscrupulous public. The influence of the Pala period is apparent on some of the relics.

It may further be noted that a peculiar feature that has been personally observed in all these villages is that there was apparently a confluence of several religious creeds in this area. Side by side of the Jain antiquities we have clear specimens of orthodox Hindu antiquity, Mahayana Buddhistic antiquities and traces of Vaishnavism. It almost appears that the area was very eclectic and went on accepting one religious creed after another. It may be mentioned here that at village Deorghata near Boram about 18 miles from Purulia a series of images in well preserved condition have been recently found. They are mostly Buddhist images and it is likely that further investigation and exploration may yield Jain images as well as a number of Jain antiquities have been found within a mile of this village. It is a very significant fact that even the most casual observer while going along Purulia-Hura road (21 miles) will be seeing Jain images lying scattered in almost every village on this road. The Jain images are usually lying neglected under some trees or on the verandahs of houses and many of them are being worshipped by the Hindus as some member of the Hindu pantheon. Some of the images have been removed by local inhabitants of Purulia and other towns in Bihar and West Bengal. Many a traveller, particularly motorists while passing are said to have taken away a number of small images. Some of the *Pujaries* (priests) or the local people have also gone to the length of selling the images for the paltry sum of Rs. 5/- or so. It is a sad reflection on human character that such images should be subjected to rapacious vandalism or commercialisation. In the course of his tour in the area the writer came to know that nearabout Ladhurka, a big village on Purulia-Hura road, several antiquities had recently been found by a casual digging of a place by the road side for the performance of a Pujah and these have been removed by some persons.

Katrasgarh which is now so very important for collieries was once the seat of Jain culture. Within half a mile to the south of Katrasgarh railway station on both the sides of the river Damodar there are a number of neglected ancient Jain images. Some of them have disappeared according to local information. To the south of the river there is a big Jain statue in nudity and a number of smaller

statues. There are a number of temples, about 16 in number, and some are analogous to Jain shrines. There is also an inscription in one of these temples and two lines of it have been deciphered. One line refers to the protection of the Srawakas and the other mentions that the temples were built by the Jains.

At Chechgaongarh in Dhanbad on the banks of the river Damodar there are a number of ruins and temples. Near to, and east of, the largest temple at a ledge of rock on the west bank of the rivulet there are two lines of inscription and the first line mentions *Chichitagara* and the second line mentions *Srayaki Rachhabansidra*. Beglar visited this area also and in his report holds positively "there were Jain or Srawaki temples here; the carved architrave representing seated a figure with the halo is therefore probably a relic of the Jain temple." It is, however, peculiar that the largest temple in this area is a Saivic temple. This temple appears to have been a later addition and a little east to the great temple are the ruins of the second largest temple in the place. The temples are profusedly ornamented with sculptures. Jain influence on the sculpture is not absent. That this area was at some time or other under Jain influence is also shown by the find of some Jain statues in the neighbouring villages of Bilonja. When Beglar visited Bilonja in 1872-73 he found one naked Jain statue said to have been taken from the ruins of Chechgaongarh.

Strangely enough Manbhum is a district where there are Jain antiquities in abundance lying exposed and neglected. The more one enquires the more relics come to one's knowledge. The little known village Pabanpur in Barabhum Pargana was obviously an important Jain centre in olden times. There are a number of ruined temples and broken antiquities. Some of these temples have exquisite carvings and have the impress of Pala influence. On all sides of the temple there are damaged images of the *Tirthankars*. Another small village Par at a distance of four miles from Anara Railway Station has also certain Jain antiquities but there has not been any exploration of the area. Some of the antiquities of this area had been sent to Calcutta Museum and are preserved there. One of them is a 2 ft. high image of Shanti Nathji in *Khadgasan*. This is slightly damaged.

Probably because the Jain images many of which are still unbroken are lying exposed under trees or on sites which were once temples very little attention has been paid to them. The cluster of images that the writer saw at various parts of the district in neglected spots remind one as to what a commotion would have been made had they been discovered as a result of a digging. As no State protection has been given they have been freely utilised on the walls of private houses or temples. Manbhum offers a rich field for research into the evolution of Jainism in this area, its relationship with orthodox Hinduism, Saivism and Vaishnavism. A number of inscriptions on the pedestals of some of the images have been found. They have not yet been properly deciphered or studied. A proper study of the inscriptions and the images supported by some excavations in well identified area of Jain culture will no doubt throw a good deal of light on the history of culture in this part of the country extending over two thousand years.

A few words on the Jain relics in Chotanagpur districts may be made. One of the objects of this brochure is to invite the attention of the historians, the archaeologists, the lay public and particularly the Jains to the many partially-forgotten Jain relics in the State of Bihar. The Shikharji temple at Parasnath hill in Hazaribagh district and the temples at Pawapuri and Rajgir in Patna District are quite well-known. But some of the relics and particularly those in Chotanagpur have been almost forgotten. Even in the List of the Ancient Monuments in the Chotanagpur Division published by authority in 1896 one does not find reference to many of the important Jain antiquities in Chotanagpur. Kuluha hill has been dismissed with only the following sentences and there is absolutely no reference to the influence of Jainism in the relics noticed :

> "The inscriptions date to between the eighth and twelfth centuries; they appear to be almost exclusively Buddhist, but are in very bad order. The sculptures date to about the same period, but are both Brahmanical and Buddhist. The place is little known, difficult of access, and has not been thoroughly examined; a proper examination is necessary."

Regarding the state of preservation and suggestions for conservation the only remark is "being destroyed by weather"and

there is no suggestion that the ruins should be conserved. The Jain temples at Parasnath have, however, received a little more elaborate reference in this book. It was mentioned :

> "The special sanctity of Parasnath Hill, which yearly attracts about ten thousand pilgrims from distant parts of India, arises from the fact that it was the scene of Nirvana of no less than ten* of the twenty-four deified saints who are the objects of Jain worship. From the last of these Parsva or Parsvanath, the hill originally called Samet Sikhar has derived its second and better known name of Parasnath.
>
> The temple, the idol in which bears the oldest date of consecration, although the edifice does not exhibit the greatest signs of age, is a handsome building of brick, freshly chunamed and white-washed every year. A Sanscrit inscription at the foot of the images in it announces the year of their being placed in the shrine, viz., A.D. 1768."

The relics in Manbhum and Singhbhum districts have received rather scant attention in this Government publication. Regarding the ruins at Dalmi or at Palma there is no mention that they are Jain in origin. It is rather unfortunate that regarding the temple ruins of Palma there should be no reference to the Jain origin although it was mentioned "in different places are sculptures of perfectly nude male figures standing on pedestals and on canopies but with Egyptian head dresses, the arms hanging down spread by their sides, the hands turned in and touching the body near the knees." Regarding the remnants at Deoli, Suissa and Pakbira it was briefly mentioned that they were of Jain origin but not for the temple ruins at Boram. Regarding the temples at Chharra it was vaguely mentioned that "some of the temples were Jain or Buddhist, as numerous votive chaityas with mutilated figures, either of Buddha or of one of the Jain hierarchs, lie in the village. But it appears from the remains of sculptures lying about, that the greater number were Brahmanical, and principally Vaishnavic. The only tradition regarding them, is that

---

*The Parsvanath hill is the seat of Nirvana of 20 *Tirthankars* and not 10 *Tirthankars*.-P. C. R. C.

they and some large tanks in the vicinity were constructed by the Sravaks, here called Saraks."

While pointing out that the informations regarding the Jain shrines and relics in the List of Ancient Monuments in the Chotanagpur Division published by the Government in 1896 are extremely meagre and somewhat misleading one cannot blame the persons responsible for drawing up this report. Jain antiquities had been neglected for centuries before 1857 and one can understand why inspite of the references in Buchanan's travels or in Beglar's accounts there should be such lack of information.

The story of Jainism in the districts of Chotanagpur whether in Manbhum or in Singhbhum or any other parts has an interesting background. There is no doubt that the geographical position of Manbhum and Singhbhum districts being on the route from Bihar to Orissa there was an impetus to the spread of Jainism Royal support was also partially responsible for the spread of Jainism in this area. King Bimbisar, Kharavela, the lines of Rashtrakutas and Chandelas who had ruled this part appear to have been at least sympathetic if they were not active supporters of Jainism. There is another theory that among the Brahmins living in Manbhum there is a group who call themselves Pachhima Brahmins and these Pachhima Brahmins were described as belonging to the clan of Vardhaman Mahavira These Brahmins who claim for themselves the privilege of being the earliest of the Aryan stock settling in this part might also have encouraged the spread of this creed with the patronage of kings or the governors of the sympathetic lines of kings.

All this explains the spread of Jainism in Chotanagpur after Mahavira's personal attempts to preach his creed here. The reasons for the decline of Jainism in Chotanagpur and particularly the reasons for the destruction of the Jain temples and images have to be looked into. For centuries there were practically no Jains in this area. This is a useful line for research and should be pursued by some one who should be able to trace the evolution and the ultimate blending of the various creeds of the period in the districts of Chotanagpur and particularly in Manbhum. It is surmised that the Chola soldiers on their way to the expedition under Rajendra Chola

Deva and on their return back after defeating Mahipala of Bengal nearabout 1023 A.D. had destroyed the Jain temples and images in Manbhum district. The Pandeyas were fanatic iconoclasts. The rise of Lingayat Saivism in this area also contributed to the decline of Jainism in Chotanagpur. The decliine was almost complete when in the 13th century A.D. a number of ancient Rajput clans came to the Manbhum district and carved out their principalities here. The important landlords like Kashipur, Patkum etc. are their lines. With them came various other phases of religion, inter-clash and fusion of religious ideas and after sometime we get the advent of the Tantric Mahayana Saivism Soon after came a time during the latter part of the Mughal period for various reasons which need not be discussed here when most of the religions all over India almost lost their individual identity and mingled into a broad-based Hindu religion which embraced all sects and almost assimilated the various groups of theists and atheists Jainism was almost taken into the Hindu fold and the Jain *Tirthankars'* images came to be freely worshipped as Bhaironath, Hara-Parvati (the image of Dhanendra and Padmavatthi) etc Later the Vaisnava school male headway in Manbhum and Singhbhum districts. Mahaprabhu Shiva Ram Goswami of Arraha (Adra) and his contemporary Trilochan Goswami from the south spread Vaisnavism on the religiously fertile soil of Manbhum and were able to convert the great Panchkotraj, the premier chief in the district, from Shaktaism to Vaisnavism some years before the great movement of 1857 These are some of the probable reasons why the ancient relics of Jainism in Chotanagpur, some of them thousands of years old, are now lying neglected in different parts The reasons that have been particularly mentioned about Manbhum district also apply to a great extent to the districts of Hazaribagh and Singhbhum in Chotanagpur. But, nevertheless, these are some tentative suggestions which could be usefully followed up by the Research scholar.

उड़ीसा में उपाध्याय श्री का मंगल प्रवचन

बन्धुओ ! आज आपके संस्कारों को देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ हूं। ये आपके पूर्वजों द्वारा दिए गए संस्कारों का ही प्रतिफल है कि विरोधी परिस्थिति एवं विपरीत वातावरण में भी आपने जैनत्व को, अपनी संस्कृति को सुरक्षित रखा है। हमें उस सच्चाई को कभी भूलना नहीं चाहिए कि अच्छे संस्कार कभी बुरा परिणाम नहीं ला सकते। अनाज के बीज से कभी बबूल का पौधा नहीं होगा। धरती कैसी ही खराब हो, फलों के बीज से कांटों की खेती नहीं हो सकती है और धरती कितनी ही अच्छी हो, बबूल के बीज से अनाज के अंकुर पैदा नहीं होंगे।

श्रद्धा के एवं गौरव के पात्र हैं आपके पूर्वज--जिन्होंने धर्म-प्रेम के लिए प्राणों का बलिदान तो देना स्वीकार किया, पर आचरण का बलिदान देना स्वीकार नहीं किया। आपके पूर्वजों का प्रेम राणा प्रताप से कम नहीं, जिन्होंने अरावली की सूखी घाटियों में भूखे-नंगे जीवन बिता दिया, किन्तु अकबर की आधीनता स्वीकार नहीं की। उनका त्याग भामाशाह से कम नहीं जिन्होंने देशहित के लिए अपनी सारी सम्पदा अर्पित कर दी। आज आपको स्वयं अपने अन्तरंग में उसी गौरव को जागृत करना है। अभी आप रास्ता नहीं भूले हैं। सही रास्ते पर चल रहे हैं। बस, सावधानी और विवेक की आवश्यकता है; स्वयं को पहचानने की आवश्यकता है; आत्मविश्वास की आवश्यकता है।

जीवन का युद्ध प्रतिक्षण चलता रहता है। सफलता के लिए सफलता पर विश्वास करना आवश्यक है, नहीं तो प्रयत्न किया ही नहीं जाएगा। स्वयं पर श्रद्धा करें, अपने कुलदेवता पर श्रद्धा रखें और पहचानें कि आपके कुलदेवता का जीवन-चरित्र कैसा था, वे आपके कुलदेवता कैसे बने ? यहां मुझे आप में से कइयों ने बताया कि आपके गोत्र नाग, नागेश, जिगनेश हैं। भगवान पार्श्वनाथ का चिह्न नाग था। उन्होंने नाग-नागिन के जीवन को भी उर्ध्वगामी बना दिया था। वे क्षमाशील थे, करुणाशील थे। उन्होंने जीवन में अहिंसा और अपरिग्रह को स्थान दिया था। आपको इसी अहिंसा प्रेमी के अनुयायी होने पर गर्व व गौरव करना है, उनके बताये हुए मार्ग पर चलना है।

आपका प्रान्त ऐतिहासिक है, कलापूर्ण है। पूरे विश्व में उड़ीसा में सम्राट खारवेल जो जैन राजा था, की बनाई हुई गुफाएं अद्वितीय हैं। अनेकों मन्दिरों के

अवशेष यहां यही कह रहे हैं कि समुचित देख-रेख व संरक्षण का अभाव रहा है। अब आपको अपनी संस्कृति का प्रहरी बनना है। अपने विस्मृत जैनत्व को जागृत करना है तथा भगवान पार्श्वनाथ को प्रतिदिन स्मरण करके, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करनी है कि उन्होंने आपको सच्चा मानव बनाये रखा—हिंसा से, अनेक पापों से दूर रखा।

प्रत्येक के लिए जीवन ही उसकी बहुमूल्य निधि होती है। व्यक्ति को जीवन एक बार ही मिलता है, अतः उसे इस ढंग से व्यतीत करना चाहिए कि विगत जीवन के ऊपर लज्जा न हो, भविष्य के लिए आशा हो।

उड़ीसा में जैनत्व का पर्याप्त प्रभाव था जिसके साक्षी यहां से प्राप्त प्रतिमाएं, मन्दिर हैं। आज आपके क्षेत्र की दुर्दशा हो रही है। आपको इसे संभालना है। यहां का पुरातत्व वैभव अतुलनीय है, इसकी रक्षा करनी है। आप सबको प्रतिज्ञाबद्ध होना चाहिए कि आप सच्चे जैन बनेंगे और उड़ीसा को पुनः जैनत्व की दृष्टि से समृद्धशाली बनाकर अपने पूर्वजों के गौरव की भी रक्षा करेंगे।

आप युवा हैं। युवा वे होते हैं जो बुद्धिमानी से, विवेक का आश्रय लेकर गुण दोष की परीक्षा करते हैं। यथार्थ में समुन्नत वही होता है जो अपने आपको अपने अतीत की उपलब्धियों तथा भविष्यत् की संभावनाओं के साथ जोड़कर रखता है।

कलिंग में जैन-धर्म का प्रभाव (पूर्व इतिवृत्त)

जैन साहित्य में कलिंग का उल्लेख ऋषभदेव के काल से ही प्राप्त होता है। भगवान ऋषभदेव ने देश को जिन 52 जनपदों में विभक्त किया था, उनमें से एक जनपद कलिंग नामक भी था। ऋषभदेव ने अपने एक पुत्र को यहां का राज्य दिया था। भगवान ऋषभदेव, पार्श्वनाथ और भगवान महावीर का विहार जिन देशों में हुआ था, उनमें कलिंग भी था। भगवान पार्श्वनाथ का विहार तो अंग, बंग, कलिंग, मगध और मध्य देशों में विशेष रूप से हुआ था। अतः इन देशों में उनका प्रभाव बहुत अधिक था और अनके अनुयायियों की संख्या लाखों में थी।

हरिषेण कथाकोष में मुनि गजकुमार के जीवन की अन्तिम घटना का कलिंग देश से सम्बन्धित होने का उल्लेख है।

तदुपरान्त भगवान पार्श्वनाथ का इस क्षेत्र में विहार हुआ। भगवान पार्श्वनाथ के पश्चात् कलिंग में जैन-धर्म के व्यापक प्रचार के सिलसिले में महाराज करकण्डु का नाम आता है। करकण्डु कलिंग के सम्राट थे। दन्तिपुर उनकी राजधानी थी। वे जैन-धर्म के कट्टर अनुयायी थे। उनका राज्य समस्त अंग, बंग, कलिंग, चेर, चोल, पाण्ड्य, आन्ध्र आदि प्रदेशों में फैला हुआ था। उन्होंने चेर, चोल और पाण्ड्य राजाओं को अपने चरणों में झुकाया। लेकिन जब सम्राट करकण्डु को ज्ञात हुआ कि उन राजाओं के मुकुटों में जिनेन्द्र भगवान का चित्र लगा है तो सम्राट ने उन्हें गले से लगा लिया और इस अविनय की क्षमा मांगी। मार्ग में उन्होंने तेरपुर में दो लयण (मुफा-मन्दिर) भी बनवाये।

उत्तराध्ययन सूत्र (अध्याय 18 गाथा 45-46) के अनुसार जब द्विमुख पांचाल के नेमि विदेह के और नग्नजित् गान्धार के शासक थे, उस समय कलिंग पर करकण्डु का शासन था। ये चारों ही नरेश जैन थे और वृद्धावस्था आने पर इन चारों ने ही अपने पुत्रों को राज्य देकर जैन मुनि-दीक्षा ले ली थी।

हरिवंश पुराण में राजा जितशत्रु का वर्णन मिलता है। जितशत्रु से महाराज सिद्धार्थ की छोटी बहिन यशोदा का विवाह हुआ था। जितशत्रु के पूर्व-पुरुषों में हरिवंश का प्रतापी राजा जरत्कुमार था। कलिंग राजा की पुत्री का विवाह जरत्कुमार के साथ हुआ था और कलिंग का राज्य जरत्कुमार को प्राप्त हो गया था। जरत्कुमार का पुत्र वसुध्वज, उसका पुत्र सुबसु, उसका पुत्र भीमवर्मा हुआ। उसके वंश में

अनेक राजा हुए। उसी वंश में कपिष्ट नाम का राजा हुआ। उसने अजातशत्रु, उसके शत्रुसैन, उसके जितरि के जितशत्रु नामक पुत्र हुआ। जब भगवान महावीर का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था, तब यह कुण्डपुर आया था। महाराज सिद्धार्थ ने इन्द्रतुल्य पराक्रम को धारण करने वाले इस परमचित्र का अच्छा सत्कार किया था। जब भगवान की अवस्था विवाह के योग्य हुई, तब यह अपनी पुत्री यशोदा को लेकर पुनः आया। वह अपनी पुत्री का विवाह सम्बन्ध महावीर के साथ करना चाहता था किन्तु ऐसा न हो सका, महावीर घर द्वार छोड़कर तप करने चले गए। तब जितशत्रु भी दीक्षा लेकर तप करने लगा। अन्त में मुनि जितशत्रु को केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

भगवान महावीर के पश्चात् उनके गणधर सुधर्माचार्य अपने पांच सौ शिष्यों के साथ इस प्रान्त में पधारे। उस समय उण्ड्र प्रान्त के धर्मपुर नगर का राजा यम न्यायपूर्वक प्रजा का पालन करता था। उसको एक रानी धनवती से गदर्भ नामक पुत्र और कोर्णिका नामक पुत्री उत्पन्न हुई। अन्य रानियों से उनके पांच सौ पुत्र थे। वे अत्यन्त धार्मिक थे और संसार से उदासीन रहते थे। एक बार सुधर्माचार्य पांच सौ शिष्यों सहित नगर के बाहर उद्यान में पधारे। नगर के सब लोग आचार्य महाराज के दर्शनों के लिए गये। उन्हें जाता देखकर राजा भी गया किन्तु अपने पाण्डित्य के अभिमान में वह मुनियों की निन्दा करता हुआ गया। मुनि-निन्दा का परिणाम यह हुआ कि तीव्र अशुभ कर्म उदय से उसकी बुद्धि नष्ट हो गयी। राजा को अपनी मूर्खता पर बड़ा दुःख हुआ और वह अपने पापों का प्रायश्चित करने लगा। उसने मुनिराज का उपदेश सुना और प्रभावित होकर अपने पांच सौ पुत्रों के साथ मुनिदीक्षा ले ली। दीक्षा के बाद निरन्तर स्वाध्याय करते रहने के फलस्वरूप सभी मुनियों ने विद्वत्ता प्राप्त कर ली। किन्तु यम मुनि को णमोकार मंत्र का उच्चारण तक करना नहीं आता था। उन्होंने घोर तपस्या करना प्रारम्भ कर दिया। फलतः उन्हें अल्पकाल में ही सातों ऋद्धियां मिल गयीं। एक बार वे धर्मपुर नगर के पास कुमारी पर्वत पर पांच सौ मुनियों के साथ पधारे। वहां सल्लेखना द्वारा समाधिमरण हो गया और वे स्वर्गों में महर्द्धिक देव हुए।

इस घटना से स्पष्ट हो जाता है कि महावीर भगवान के काल में और उनके पश्चात्वर्ती काल में भी कलिंग में जैनधर्म का वयापक प्रभाव था।

फ्रेंच विद्वान गेरिनाट का कहना है कि :

"There can not longer be any doubt that Parsava was a historical personage. According to the Jain tradition he must have lived a hundred years and died 250 years before Mahavira. His period of activity, therefore, corresponds to the 8th Century B. C.

The parents of Mahavira were followers of religion of Parsava the age we live in, there have appeared 24 prophets of jainism. They were ordinary called *Tirthankrs* with the 23rd Parsavnath we enter into the region of History of reality."

(Introduction of his Ersay on Jain Bibliography.)

जैनों के अनुसार अनेक तीर्थंकरों ने प्रत्येक युग में बारम्बर जैनधर्म का उद्योत किया है। (Hem V. V. 50-51)

भौगोलिक परिस्थितियों एवं राजनैतिक कारणों ने इस प्रान्त के इतिहास और विशेषता को निश्चित करने में काफी प्रभाव डाला है। इस लम्बे-चौड़े प्रदेश की सदैव ही एक अलग सत्ता रही। कलिंग के रूप में यह प्रान्त सदैव विश्व भर में चर्चित रहा यहां बहुत कुछ ऐतिहासिक घटा है। इस विस्तृत प्रदेश में एक सजीव और मिली-जुली सभ्यता फली-फूली, जिसमें विस्तार और प्रगति की काफी संभावना थी और जिसमें सुदृढ़ सांस्कृतिक एकत्व बराबर बना रहा। पुरातत्व तीर्थ एवं कला की दृष्टि से जब भी वर्गीकरण किया जाता है, बंगाल, बिहार, उड़ीसा का नाम एक साथ ही आता है। और यह भी सुखद संयोग है कि 'सराक' कहने वाले श्रावक भी इन्हीं तीनों प्रान्तों में हैं। मध्यकाल में इन प्रान्तों में बहुत मन्दिरों का निर्माण हुआ था; पुरातत्त्वावशेष अपनी कहानी स्वयं बता रहे हैं। सम्राट खारवेल के प्रयासों के फलस्वरूप उड़ीसा के अतिरिक्त छोटा नागपुर के आस-पास प्राचीन समय में ही जैन-धर्म और जैन-दर्शन का पर्याप्त प्रचार एवं प्रसार हुआ था। फलतः 8-9वीं शती तक इधर जैनधर्मानुयायियों की स्थिति बनी हुई थी। 11वीं शती से यहां जैनधर्म का ह्रास आरम्भ हुआ। राजनैतिक स्थिति की उलट-फेर के कारण जैनमन्दिरों का ध्वंस किया गया।

जैन धर्मावलम्बियों पर अत्याचार हुए, जिसमें वे विघटित हो गए। जैन यात्रियों का आना-जाना भी कम हो गया और इन प्रान्तों से जैनधर्म जैसे सदा के लिए निर्वासित हो गया। जो लोग यहां रह गए, वे इधर-उधर छितरा गए। समाज की मुख्य धारा से कट जाने के कारण शेष जैन समाज इन्हें भूल गया और ये शेष समाज के साथ-साथ स्वयं को। इस क्षेत्र के ये विशिष्ट जन जिन्हें हम सराक कह रहे हैं, विशेष तथ्य यह है कि निर्वासित जनों के लिए जहां यह कहा जाता है, 'बुभुक्षति किंम् न करोति पापम्'—ये पाप कार्यों से सर्वथा विलग रहे। अभावों के मध्य रहकर भी सर्वाधिक सुरक्षा की अपने संस्कारों की, सामाजिक मान्यताओं की, रीति-रिवाजों की। और सत्य यह कि आज उनकी वही दृढ़ता ही इन्हें पुनः शेष समाज से जोड़ भी सकी है।

प्राचीन कलिंग का भौगोलिक क्षेत्र

उत्तर में उड़ीसा से लेकर दक्षिण में आन्ध्र या गोदावरी के मुहाने तक फैले हुए भू-भाग को कलिंग जनपद कहा जा सकता है। प्राचीन काल में कलिंग जैन-धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा है। बंग और कलिंग (उड़ीसा) दोनों में बिहार के समान किसी तीर्थंकर का कोई कल्याणक नहीं हुआ, किन्तु तीर्थंकरों का विहार कलिंग में बराबर हुआ। सत्य है कि अंग, बंग, कलिंग और मगध व्रात्य श्रमणों के केन्द्र थे। तीर्थंकरों के सतत् विहार से इन प्रदेशों में जैनधर्म के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार हुआ। अंग और बंग के समान कलिंग में भी श्री ऋषभदेव जी, श्री पार्श्वनाथजी और श्री महावीर स्वामी का विहार हुआ था।

डा. नागेन्द्र नाथ बसु के अनुसार, श्रीपार्श्वनाथ के काल में मयूरभंज में कुसुम्ब नामक क्षत्रियों का राज्य था। यह राज्यवंश श्रीपार्श्वनाथ जी का अनुयायी था। उन्होंने लिखा है--"भगवान पार्श्वनाथ ने अंग, बंग और कलिंग में जैनधर्म का प्रचार किया था। धर्म प्रचार के लिए वे ताम्रलिप्ति बन्दरगाह से कलिंग में गये। उस समय मयूरभंज में कुसुम्ब नामक क्षत्रिय का राज्य था और वहां राजवंश भगवान पार्श्वनाथ द्वारा प्रचारित धर्म से प्रभावित था।"

(जैन क्षेत्र समाज : डा. नागेन्द्र नाथ बसु द्वारा की गई समालोचना का अंश)

राजशेखर ने काव्य कीमांसा में दक्षिण और पूर्व के सम्मिलित भूप्रदेश को कलिंग माना है। पाणिनि ने भी कलिंग जनपद का उल्लेख किया है।

प्राचीन काल में अपनी सुरक्षित भौगोलिक स्थिति एवं उपजाऊ भूमि के कारण कलिंगवासी अत्यन्त सम्पन्न और सुखी थे। इसके पृष्ठ भाग में अभेद्य पर्वत वन-प्रदेश था। उत्तर में गंगा तथा ब्रह्मपुत्र की उपजाऊ घाटियां थीं। दक्षिण में गोदावरी-कृष्णा का दोआब था। पूर्व में हिन्द महासागर में सुरक्षित बंगाल की खाड़ी थी। विन्ध्य पर्वतमालाओं और समुद्र के मध्य यह प्रदेश एक प्रकार से उत्तरापथ और दक्षिणापथ का प्रवेश द्वार और सजग प्रहरी रहा। अपनी इस भौगोलिक स्थिति के कारण इस प्रदेश ने उत्तर और दक्षिण की सांस्कृतिक थाती के आदान-प्रदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। प्रकृति ने सुन्दर जलवायु, आवश्यक वर्षा, अनेक नदियों आदि के रूप में इसे अपना कोष खुले हाथों से लुटाया है।

प्रकृति ने ही इस प्राचीन कलिंग को तीन भागों में विभाजित कर दिया। पहला भाग मैदानी है। यह दामोदर नदी के पश्चिमी किनारे से प्रारम्भ होता है।

इस भाग में मयूरभंज, केंझोंसर और अंगुल के पर्वतीय भू-भाग तथा

रूपनारायन, हल्दी, सुवर्णरेखा, वैतरणी, ब्राह्मणी आदि नदियां सम्मिलित हैं। दूसरा भाग महानदी के दायें तट से प्रारम्भ होता है। इसमें महानदी और गोदावरी के बीच की पर्वतश्रेणियां सम्मिलित हैं, जो समुद्र तट तक चली गयी हैं। इस भाग में ऋषिकुल्या नदी बहती है और इस प्रदेश को दो समान भागों में विभाजित करती हैं। महेन्द्रगिरि के दक्षिण में लोगुलिया नदी के किनारे-किनारे मैदानी भाग हैं। यही इसका तीसरा भाग है। इसी के तट पर कलिंग की प्राचीन राजधानी कलिंग नगर बसा हुआ था।

डा. अमरचन्द्र जैन अर्ली **हिस्ट्री ऑफ उड़ीसा** पृ.-16 पर लिखते हैं–

"इस प्रदेश में उड़िया भाषा बोली जाती है। इसका विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ। इसकी विशेषता यह है कि जो लिखा जाता है, वैसा ही उच्चारण होता है। ईसा की तीसरी शताब्दी तक इस प्रदेश के ऊपर प्राकृत भाषा का प्रभाव रहा। इसके पश्चात् उड़िया भाषा का निखार और विकास प्रारम्भ हुआ। मगध और उड़ीसा में भाषागत एकरूपता का कारण सीमाओं का सामीप्य ही है।"

'आवश्यक सूत्र' में लिखा है कि भगवान महावीर ने तोषल में अपने धर्म का प्रचार किया था। तोषल नरेश महावीर के पिता सिद्धार्थ के बन्धु थे। तोषल नरेश ने भगवान महावीर को अपने राज्य में धर्म-प्रचार के लिए आमन्त्रित किया था।

उनके उपदेशों से प्रभावित होकर तोषल नरेश ने कुमारी पर्वत पर भगवान से मुनि-दीक्षा ली और तपस्या करके मुक्ति प्राप्त की। उनके निर्वाण लाभ के कारण कुमारी पर्वत निर्वाण क्षेत्र बन गया है। संभवतः कलिंग (उड़ीसा) में कुमारी पर्वत (खण्डगिरि-उदयगिरि) ही एकमात्र निर्वाण क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई तीर्थ वहां नहीं है।

भगवान महावीर द्वारा प्रचारित धर्म कलिंग में शताब्दियों तक बना रहा। यह धर्म वहां का राष्ट्रधर्म बन गया था। जब महापद्मनन्द कलिंग को पराजित करके 'कलिंग जिन' प्रतिमा को अपने साथ पाटलिपुत्र ले गया, तो समस्त कलिंग शोक सागर में डूब गया। कलिंग जिन की प्रतिमा उनके राष्ट्रदेवता की प्रतिमा थी। वह सम्पूर्ण कलिंगवासियों की आराध्य प्रतिमा थी। इस घटना के प्रायः तीन सौ वर्ष पश्चात् खारवेल ने मगध से इसका बदला लिया। उसने मगध सम्राट वृहिस्तिमित्र को करारी मात दी और कलिंग जिन प्रतिमा को वह अपने साथ ले आया। यह आदिनाथ भगवान की प्रतिमा थी। कलिंगवासी अपने आराध्य को पाकर बहुत प्रसन्न हुए और सम्पूर्ण राष्ट्र ने राष्ट्रीय उत्सव मनाया। खारवेल ने इस अतिशय सम्पन्न मूर्ति को लाकर बड़े उत्सव के साथ विराजमान किया था और इस घटना की स्मृति में उन्होंने एक विजय-स्तम्भ भी बनवाया था।

उड़ीसा नरेश सम्राट खारवेल

खण्डगिरि-उदयगिरि की गुफाएं, जिनकी कुल संख्या 117 है, ई.पू. शताब्दी के अन्तिम चरण में बनी थीं। इनमें से कुछ गुफाएं बाद की भी हैं। इन गुफाओं में उदयगिरि की हाथी गुफा में सम्राट खारवेल द्वारा उत्कीर्ण प्राकृत भाषा का 17 पंक्तियों का एक लेख है। सम्राट अशोक के स्तम्भ-लेखों के पश्चात् यही लेख ऐतिहासिक महत्व का है। इसमें कलिंग सम्राट खारवेल के बाल्यकाल एवं उनके राज्य के 13 वर्षों का व्यवस्थित वर्णन है। खारवेल ने अपने राज्य के द्वितीय वर्ष में सातकर्णी को पराजित किया। फिर कृष्णा नदी के तट पर स्थित अशोक नगर पर अधिकार किया। चतुर्थ वर्ष में विन्ध्याचल में बसे हुए अरकड़पुर के विद्याधरों को जीतकर रथिक और भोजक लोगों को अपने आधीन किया। वे आठवें वर्ष में मगध पर आक्रमण करके गोरथगिरि तक पहुँच गये। गोरथगिरि और राजगृह के घेरे की बात सुनते ही यवनराज देमित्रियस अपनी सेना सहित मथुरा छोड़कर भाग गया। दसवें वर्ष में उत्तरापथ को जीता। ग्यारहवें वर्ष में वह दक्षिण की ओर गया और 113 वर्ष से राज्य के लिए खतरा बने त्रामिल और द्रामिल के राज्य संघ को नष्ट कर दिया। युद्धों की दृष्टि से बारहवां वर्ष था।

इसी वर्ष खारवेल के प्रताप का लोहा मानकर दक्षिण के पाण्ड्य नरेश ने उसका स्वागत-सत्कार किया और हाथी, घोड़े, रत्न, जवाहरात आदि बहुमूल्य भेंटें अर्पित कीं।

इन द्वादशवर्षीय विजयों से वह वास्तव में भारत का सम्राट बन गया। वह अपने को धर्मराज भी कहता था। परन्तु उसने कभी अशोक अथवा अकबर के समान धार्मिक नेता बनने का प्रयत्न नहीं किया। उसके राज्य में सभी को अपने धर्म, विश्वास और मान्यता को मानने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी।

अपने राजत्वकाल के अल्पकाल में ही इस अहिंसक धर्मप्रभावक राजा ने प्रजानन के अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किये। धार्मिक दृष्टि से उसका योगदान जैन धर्म के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। कहते हैं, वर्तमान जगन्नाथ पुरी का मंदिर भी राजा खारवेल द्वारा बनवाया हुआ जैन मंदिर ही है। उसने इहलौकिक जीवन को भी यशस्वी बनाया और पारलौकिक प्रयोग में अपने जीवन का शेष समय बिताया।

वसुदेवहिण्डी (पृ.-111) ओघनियुक्ति भाष्य (पृ.-30), ओघनियुक्ति टीका

(पृ.-119) आवश्यक चूर्णि, बृहत्कल्प भाष्य व्यवहार भाष्य से ज्ञात होता है कि कलिंग (उड़ीसा) के राजा खारवेल के अंग मगध से जिन प्रतिमा वापिस लाकर यहां स्थापित की थी। कलिंग की राजधानी कंचनपुर (भुवनेश्वर) थी। यह नगर एक व्यापारिक केन्द्र था और व्यापारी लंका तक जाते थे। कंचनपुर जैन साधुओं का विहार-स्थल था।

इसके अतिरिक्त कलिंग में पुरी (जगन्नाथपुरी) जैनों का खास केन्द्र था। श्रावकों के यहां अनेक घर थे। बज्रस्वामी ने यहां उत्तरापथ से होकर माहेसरी (महिष्मती) के लिए विहार किया था। उस समय यहां का राजा बौद्धधर्मानुयायी था। बौद्धों का यहां जोर था। पुरी व्यापार का एक बड़ा केन्द्र था और यहां जलमार्ग से माल आता-जाता था। कलिंग का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्थान तोसलि था। यहां महावीर ने विहार किया था। तोसलि में एक सुन्दर जिन प्रतिमा थी, जिसकी देख-रेख तोसलिक नामक राजा किया करता था।

खारवेल के राज्यकाल में कलिंग जनपद की बहुत समृद्धि हुई। खारवेल ने अपने प्रबल पराक्रम द्वारा उत्तरापथ से पाण्ड्य देश तक अपनी विजय वैजयन्ती फहराई थी। वह एक वर्ष विजय के लिए निकलता था। दूसरे वर्ष महल बनवाता था, दान देता था तथा प्रजा के हितार्थ कार्य करता था। इस प्रकार कलिंग की प्राचीन समृद्धि का परिज्ञान होता है। आदिपुराण तथा अन्य कथा सम्बन्धी साहित्य से भी कलिंग की समृद्धि एवं धार्मिक आस्था का परिज्ञान होता है। इस श्रेणी के साहित्य से यह भी ध्वनित होता है कि नवम् दशम शतक में कलिंग में बौद्ध और वैदिक प्रभाव व्याप्त हो चुका था।

खारवेल ने लगभग 172 वर्ष ईसा पूर्व, अपने राज्य काल के 13वें वर्ष में जैन साधुओं की एक सभा बुलवाई थी। इस सभा की जानकारी का एकमात्र स्त्रोत हाथी गुफा का अभिलेख ही है। यह सभा विजयचक्र नामक प्रशासकीय खण्ड में कुमारी पर्वत, पर जो उदयगिरि का प्राचीन नाम था, आयोजित की गई थी। इसमें सभी दिशाओं से आये 3500 साधुओं ने भाग लिया था। पर्वत के ऊपर अरहंत की निषिधा के समीप का प्राग्भार सभा-स्थल था। यह प्राग्भार रानी सिन्धुकला द्वारा निर्मित निषिधा से सटा हुआ था। रानी की निषिधा मंचपुरी गुफा की ऊपरी मंजिल रही प्रतीत होती है, जो कि हाथी गुफा के समीप दक्षिण पूर्व को स्थित है। कुछ दशक पूर्व की पुरातात्विक खुदाई से हाथीगुम्फा की छत पर एक पूजा गृह के अवशेष भी प्रकाश में आए हैं, जो सम्भवतः अरहन्त निषिधा के प्रतीक हैं। इस प्रकार मंचपुरी और हाथी गुफा के बीच के स्थल को सभा स्थल चिह्नित किया जा सकता है। सभा मण्डप के सम्मुख एक वैदूर्य मण्डित चौकोर स्तम्भ स्थापित किया

गया था। यह मानस्तम्भ का प्रतिरूप रहा प्रतीत होता है। सभा मण्डप की रचना समवशरण के अनुरूप की गई प्रतीत होती है। इस सभा में द्वादशांग की वाचना की गई थी। साहित्य में 'वाचना' का प्रयोग ऐसी सभाओं के लिए भी किया गया है। हाथी गुफा के शिलालेख नं-15 के अनुसार इस सभा की पुष्टि होती है–

।। सकत समण सुविहितानं च सव दिसानं अननं तपसि इसिन संघियनं अरहत निसीदिया समीपे पाभारे बराकार समुथापिताहि अनेक योजना हिताहि पनतिं साहि सत सहसेहि सिलाहि सिनर्थ थानि च चेतियानि च काराप्यति।।

उड़ीसा में जैन पुरातत्व

कलिंग में जिस समय खारवेल का उदय हुआ था, उस समय वहां जैनधर्म समुन्नत अवस्था में विद्यमान था। खारवेल को वंशानुक्रम से विरासत में जैनधर्म प्राप्त हुआ था। उसे जैन धर्म प्राप्त करने के लिए प्रयास नहीं करना पड़ा था अर्थात् उसे अनायास मिल गया था। इसीलिए सही अर्थों में जैन-धर्म उसके लिए अमूल्य था और उसने उसकी रक्षा भी अमूल्य निधि के रूप में की थी। वह, उसकी रानियां और कुमार जैन-धर्म का प्रचार तीव्रगति से हुआ।

हाथी गुफा का शिलालेख खारवेल की देख-रेख में लिखा गया था। खारवेल के जीवन से परिचित होने का साधन इसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है। यदि और कोई प्रमाण रहे भी हों तो लगता है, कलिंग और दक्षिण भारत में जैनधर्म के विरुद्ध जो शैव और वैष्णव क्रान्ति भयानक वेग से उठी, उसमें वे सब प्रमाण समाप्त हो गये। इस क्रान्ति के फलस्वरूप अनेक जैन मन्दिरों पर दूसरों ने अधिकार करके अपना बना लिया। अनेक तीर्थकर मूर्तियां जैनेतर देवताओं का रूप धारण करके देवायतनों में विराजमान कर दी गई हैं किन्तु आश्चर्य है कि खण्डगिरि और उदयगिरि की ये गुफाएं सुरक्षित रहीं।

उदाहरणार्थ, मयूरभंज के बालासर नगर से दक्षिण पूर्व में स्थित भीमपुर ग्राम में एक वृक्ष के नीचे भगवान महावीर की 2 मूर्तियां रखी हुई हैं, जिनको वहां के लोग दुर्गा देवी आदि कहकर पूजते हैं। यह मूर्ति जमीन खोदने पर मिली थी। दूसरी नग्न प्रतिमा को गांव के लोग ठकुरानी कहकर पूजते हैं।

भीमपुर के पास स्थित एक ग्राम का नाम वर्द्धमानपुर है, वहां भी जैन प्रभाव के चिह्न पाये जाते हैं ये सब चिह्न स्पष्ट साक्षी हैं कि उड़िसा में जैनधर्म उन्नतिशील अवस्था में था।

जैन मन्दिरों, कलाकृतियों, प्रतिमाओं के ध्वंसावशेषों की जो युवा सम्पदा आज की उड़ीसा में विद्यमान है, वह महत्त्वपूर्ण होने के साथ-साथ विस्मयकारी भी है। यहां आयुधशालाओं और मन्दिरों का अद्भुत संगम है, वह इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। व्यक्तिगत रूप से बनवायी हुई खारवेल की जैन गुफाएं हमारी अमूल्य निधियां हैं। उड़ीसा के अनेक मन्दिर, जिन पर आज अजैनों का अधिकार है, जैन-धर्म के शिल्प और वास्तुकला के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यहां स्थान-स्थान पर पुरातत्व

का बिखरा कोष संरक्षण और शोध की प्रतीक्षा में मूक क्रन्दन कर रहा है, जिससे इतिहास व संस्कृति की अनेक विलुप्त कड़ियां संजोयी जा सकें।

यह स्वाभाविक जिज्ञासा का विषय है कि उड़ीसा में इतना विपुल कला वैभव किन परिस्थितियों में एवं किन संस्कृति संरक्षक श्रावकों के हाथों पल्लवित हुआ। ईसा पूर्व की ललित कलायें अपने स्थापत्य एवं प्रतिमाकाल के इतिहास में विशेष महत्व की हैं। इतिहास साक्ष्य है कि कि बिहार और उड़ीसा के बीच सशक्त सम्पर्क था। पुरी और कटक में जो प्राचीन जैन मूर्तियां हैं, उनका अनुमानित काल ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियां हैं। कुछ मूर्तियां आठवीं-नवीं शताब्दी की भी हैं। उड़ीसा के अतसपुर, मयूरभंज, अयोध्या, नीलगिरि स्थानों पर ईसा पूर्व शताब्दी तक की मूर्तियां उपलब्ध होती हैं। ये मूर्तियां जहां बिखरी पड़ी हैं, वहां जैन मन्दिरों के चिह्न भी मिलते हैं, अतः असंदिग्ध रूप से ये मन्दिर भी इसी काल के थे।

भुवनेश्वर के राजकीय संग्रहालय में भी पाषण और धातु की कुछ जैन मूर्तियां सुरक्षित हैं। ये प्रायः सभी मूर्ति आठवीं शताब्दी तक की मानी गयी हैं।

सत्य यह है भुवनेश्वर, कटक, पुरी के स्थलों पर जैन-धर्म का प्रभाव स्पष्ट दिखता है—चाहे वह मूर्तिकला हो, वास्तुकला, साहित्य या जनजीवन ही क्यों न हो। रंगिया तांती जनजीवन की प्रमुख ऊर्जा है, जहां से चिन्तन का संचार होता है। इनके धार्मिक उत्सव एवं सामाजिक कार्यक्रम स्वयं ही निकष हैं जो इन्हें सम्पूर्ण प्रादेशिक सोच-समझ, आचार-विचार से पृथक किए रही है।

उड़ीसा के भुवनेश्वर की गुफाओं में भी जैन चित्र अंकित हैं। चित्रों के सौन्दर्य और भावाभिव्यंजना अद्भुत है। भित्ति-चित्रों की परम्परा जैनों में बहुत समय तक चलती रही। इन चित्रों में बाह्य आकर्षण, प्रकृति का सादृश्य, उसकी रमणीयता, कम्पन और नैसर्गिक प्रवाह वर्तमान है।

भण्डारकर का पूर्व इतिहास : (सन् 1896 के पृष्ठ के 59 के अनुसार) 8वीं से 11वीं शती तक दक्षिण में जैनी बहुत प्रभावशाली थे। यहां के शिलालेख के अक्षर उस समय के अक्षरों से मिलते हैं। लेकिन यह स्पष्ट ज्ञात नहीं होता कि किस प्रकार जैनियों ने अपना अधिकार खोया। परन्तु यह मालूम होता है कि वैष्णवों की उन्नति होने से जैनियों का प्रभाव घटा। ताड़पत्रों के लेखों से प्रगट है कि ब्राह्मण चारणों की प्रेरणा से गंगराजा ने जैनियों को बहुत सताया।

एम. एम. चक्रवर्ती के सन् 1902 में गुफाओं पर लिखे आलेख में लिखा है—'अंग्रेजी राज्य में कटक के जैन परिवारों ने खण्डगिरि के ऊपर एक मन्दिर बनवाया तथा बारहभुजा और त्रिशुल गुफा के बरामदों को दुरुस्त कराया और इन दोनों गुफाओं के सामने एक छोटा मन्दिर बनवाया।'

उड़ीसा का सराक क्षेत्र पुरातत्त्व की दृष्टि से अभावग्रस्त क्षेत्र नहीं है। किसी प्रदेश को समृद्ध बनाने वाले जितने तत्व होते हैं, वे उसके पास बहुतायत में हैं। संस्कृति के विभिन्न पक्षों की इस क्षेत्र के पास एक भव्य विरासत है और उसकी सामर्थ्य संस्कृति की दिशा में बहुत बड़ी है--बस संस्कृति को संरक्षित रखने वाले आयतनों की आवश्यकता है। इन उपकरणों से वंचित रहने का अभाव पूरा हो सकता है। यदि यहां के निवासियों की जीवन-शक्ति व सांस्कृतिक सामर्थ्य जागृत हो जाए तो यह कार्य असाध्य नहीं है। नया भविष्य बनाने के लिए आज आगे बढ़ना है। वस्तुतः यह अपना ही दोष एवं शिथिलता रही कि अपने सम्मुख अपनी संस्कृति का ह्रास देखा। आज समय परिवर्तित हो रहा है। इस प्रान्त के नागरिकों का स्वाभिमान जग विख्यात है। इस क्षेत्र की संस्कृति और परम्परा पर प्रत्येक अहिंसा प्रेमी को गर्व है। यही तो वह क्षेत्र है, जहां साम्राज्यवादी अशोक महान् भिक्षुवत् बन गया था।

उड़ीसा में जैन-धर्म के प्रभाव के विषय में इतिहासविद् कहते हैं कि भगवान पार्श्वनाथ से अर्थात ईसा पूर्व आठवीं शताब्दी से खारवेल के समय तक अर्थात् ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी तक (सात सौ वर्षों तक) कलिंग जैन धर्म का प्रभाव अक्षुण्ण रहा। हाथी गुफा के शिलालेख के अनुसार खारवेल और उनके परिवार ने अपने राज्य के तेरहवें वर्ष में कुमारी पर्वत पर जैन साधुओं के ध्यानादि के लिए गुफाओं का निर्माण कराया और वहां सभी दिशाओं के विद्वानों और तपस्वी साधुओं का सम्मलेन किया।

खारवेल के शासक के बहुत पहले से ही जैनधर्म कलिंग का राष्ट्र-धर्म था।

डा. काशी प्रसाद जायसवाल आदि कुछ इतिहासकारों का मत है कि शकों के आक्रमण के पहले उज्जयिनी में जिस गर्दभिल्ल के चौदह वर्ष के राज्य का जैन अनुश्रुति और पुराणों में उल्लेख है, वह खारवेल का कोई वंशज था। हिन्दू पुराणों के अनुसार सात गर्दभिल्ल राजाओं ने 72 वर्ष तक राज्य किया।

हजारों मुद्राएं इस प्रान्त के विभिन्न स्थानों से भू-उतखनन में निकली हैं। इन्हें देखकर डा. नवीन कुमार साहु अन्य कई इतिहासकारों ने यह स्थापना की है कि ये राजा मुरुण्ड वंश के थे। ये मुरुण्डवंशी राजा जैन-धर्म के अनुयायी थे। अतः इनके शासनकाल में कलिंग में जैन-धर्म का प्रभाव बना रहा। ग्रीक इतिहासकार टोल्मी के अनुसार, द्वितीय शताब्दी में मुरुण्डवंशी राजा जैनधर्म के अनुयायी थे, अतः इनके शासन काल में जैन-धर्म का प्रभाव बना रहा। इनके राज्य का विस्तार तिरहुत से गंगा नदी के मुहाने तक रहा है। इन मुरुण्ड राजाओं का वर्णन 'सिंहासन द्वात्रिंशिका, वृहत्कल्पतरु, अभिधान राजेन्द्र कोष भाग दो आदि जैन ग्रन्थों में भी
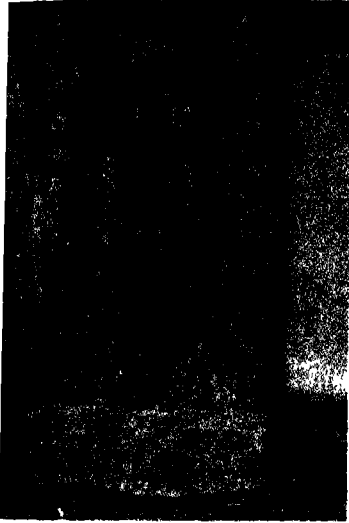
पाकवीरा

पाकवीरा
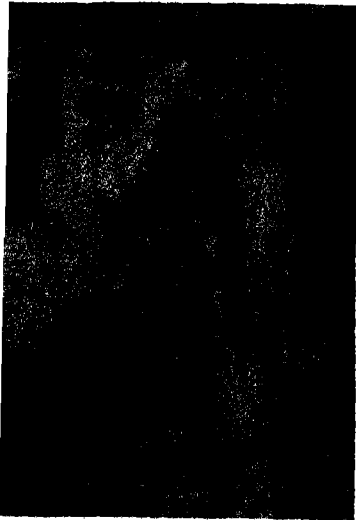
पाकबीरा
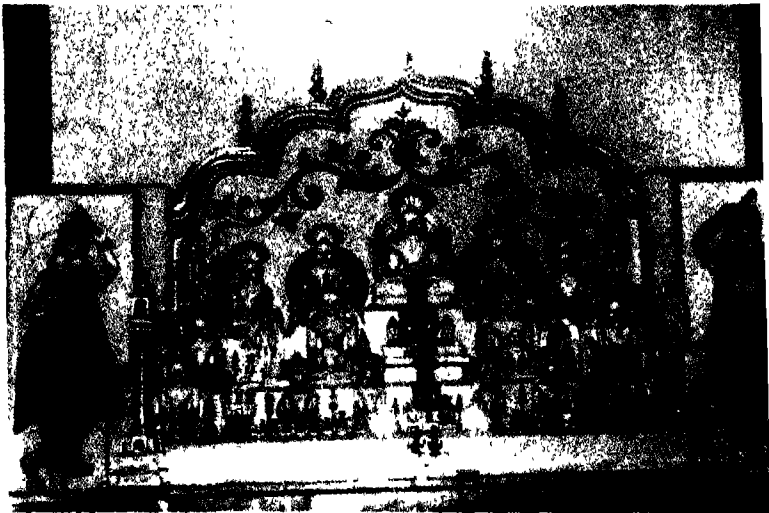
पाकबीरा

बाकबीरा

श्री छोटा मन्दिर जी श्री मूल वेदी इसमें १ ही वेदी है। भगवान १००८ श्री पार्श्वनाथ जी मूल नायक विराजमान हैं। जावलिया पट्टी चौधरी बाजार, कटक
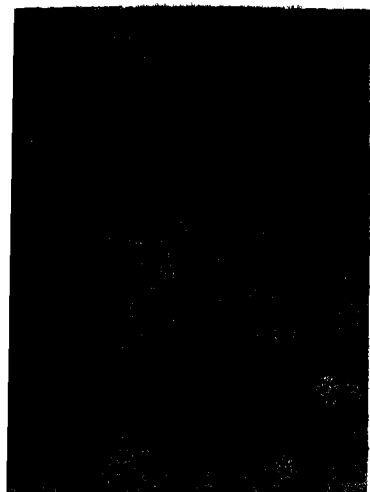
बाकबीरा
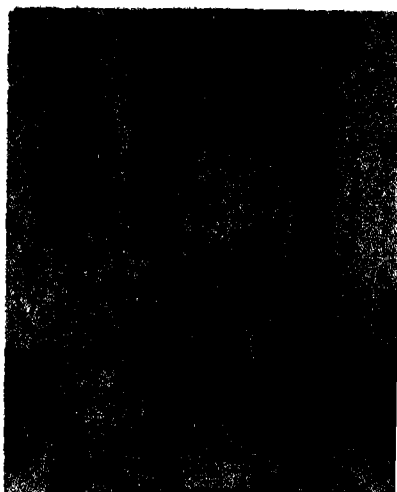
पाकबीरा

पाकबीरा

बाकबीरा

यह गुफा श्री खन्डगिरी जी पहाड़ पर है, इस गुफा का नाम बाराभुजी गुफा है, इस मे २४ तीर्थंकरो की पदमासन प्रतिमा हैं ये सब पहाड़ मे खुदी हुई हैं। इनके नीचे सब की सासन देवियां भी अंकित है।

बाकवीरा

पाकवीरा

चाकबीरा
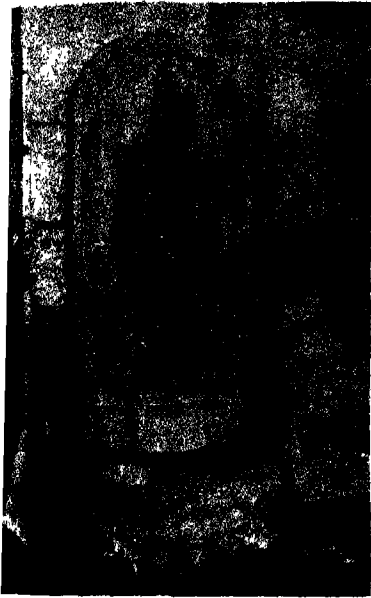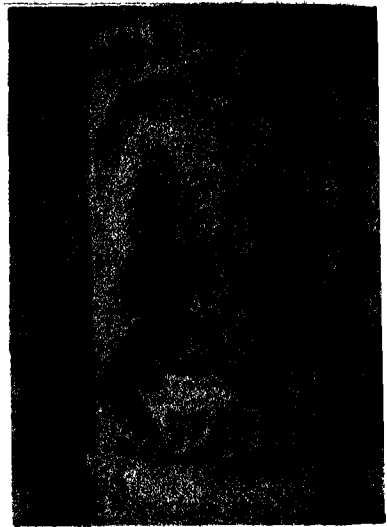
पाकबीरा

पाकवीरा

पाकबीरा

याकवीरा

बाकबीरा

श्री बडा मन्दिर जी की मूल वेदी भगवान १००८ श्री चन्द्र प्रभुजी
की मूल नायक प्रतिमा विराजमान है। चौधरी बाजार, कटक

बाकबीरा
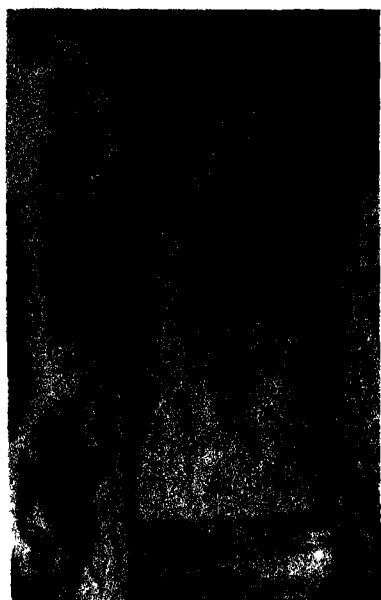
बाकबीरा

पाकबीरा

उपलब्ध होता है। मुरुण्डों के पश्चात यहां गुप्तों का शासन रहा। गुप्तोत्तर काल में कलिंग में गंगवंश, कगोदर, शैलोद्भव वंश, तोषल का भौमवंश, खिलजी का भंज वंश और कौशलोत्कल का सोमवंश, इन राजवंशों का शासन रहा। ये राजवंश प्रायः शाक्त शैव या वैष्णव धर्मानुयायी थे। इस काल में भी खण्डगिरि-उदयगिरि जैन-धर्म के केन्द्र थे। इसी काल में खण्डगिरि की नवमुनि गुफा, बारभुजी गुफा और ललाटेन्दु केसरी गुफा का निर्माण हुआ। उड़ीसा के अनेक स्थानों जैसे आनन्दपुर (दुझर), चोहार (कटक), घुमुसर (गंजाम), नवरंगपुर (कोरापुट) और पुरी की प्राचीन उपत्यका में उत्खनन के फलस्वरूप जैन-धर्म सम्बन्धी बहुमूल्य पुरातत्त्व की सामग्री प्राप्त हुई है, वह सब मध्य युग की है। इससे ऐसा प्रमाणित होता है कि मध्य युग में जैनधर्म का प्रभाव उड़ीसा में अप्रतिहत था।

इसी काल में प्रसिद्ध सोमवंशी राजा प्रद्योत केशरी, जिन्हें ललाटेन्दु केशरी भी कहते हैं, ने शिवभक्त होते हुए भी जैन साधुओं के लिए ललाटेन्दु केशरी गुफा का निर्माण कराया। इसी के शासन-काल में मुनि कुलचन के प्रख्यात शिष्य आचार्य शुभचन्द्र तीर्थयात्रा के लिए खण्डगिरि आये और उन्होंने यहां जैन-धर्म का प्रभाव बढ़ाने का प्रयत्न किया।

प्राचीन इतिवृत्त

गजेटियर (प्रकाशित 1908) में पुरी जिले की भौगोलिक सीमाएं इस प्रकार है–

उत्तर में देशी राज्य बंकी और सथगढ़, पूर्व व उत्तर पूर्व में कटक जिला, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में मद्रास का गंजाम जिला और रामपुर राज्य है। यहां भूमि 1473 वर्गमील है।

इसका इतिवृत्त कुछ इस प्रकार है–

राजा अशोक के विजय के पूर्व उड़ीसा देश कलिंग में शामिल था, अशोक ने 261 वर्ष पूर्व उड़ीसा और कलिंग को अपने राज्य में मिला लिया। अशोक के लेख धौली पहाड़ी पर हैं, कलिंग में दो शिलालेख हैं। अशोक के समय में राज्य के प्रबन्धक तोशाली में रहते थे। यह स्थान शायद वर्तमान भुवनेश्वर से निकट है जो धौली से और खण्डगिरि की प्राचीन गुफाओं से दूर नहीं है। यह सुनिश्चित है कि मौर्य राजाओं के समय में इस जिले में बहुत से जैनी वास करते थे क्योंकि खण्डगिरि और उदयगिरि की पहाड़ियां साधुओं के निवास योग्य गुफाओं से चारों ओर से भरी हुई हैं। इनमें से कुछ गुफाओं पर शिलालेख भी मिले हैं जो ब्राह्मी लिपि में हैं। हाथी गुफा में जो शिलालेख है, उससे भी यह स्पष्ट है। इस लेख में प्रारम्भ में णमोकार मंत्र है।

स्वर्गपुरी की गुफा से स्पष्ट है यह गुफा अर्हंतों की कृपा से देश के राजा की मुख्य पटरानी ने बनवाई थी।

यह लेख यह भी स्पष्ट करता है कि मौर्य राज्य के पतन पर कलिंग देश ने विरोध किया और स्वतन्त्र राज्य हो गया। यह लेख जो सन् ईसा से पूर्व 158 या 153 वर्ष का प्रतीत होता है। राजा खारवेल ने कलिंग देश केवल स्वतन्त्र ही नहीं किया अपितु इस योग्य भी बना दिया कि वह दूसरों पर भी विजय प्राप्त कर सके। पृष्ठ 88 पर लिखा है कि यहां जैन-धर्म बहुत सफलता से फैला हुआ था क्योंकि राजा खारवेल और उसके उत्तराधिकारी जैन-धर्मी थे। मौर्य राज्य के नष्ट होने पर यह जैन-धर्म 11वीं व 12वीं शती तक यहां जारी रहा। अब इस जिले में नहीं है। परन्तु इस धर्म के चिह्न खण्डगिरि और उदयगिरि पर शेष मिलते हैं। ये दोनों पहाड़ियां सन् ईसा से पूर्व तीसरी या चौथी शती में बनी होंगी। इन गुफाओं में

पार्श्वनाथ स्वामी की पूजा श्री महावीर स्वामी की अपेक्षा अधिक प्रचलित मालूम पड़ती है।

यहां प्राचीन श्रावक हैं–पृष्ठ-85

सन् 1908 की जनगणना जिसका वर्णन गेट साहब ने किया है, इस जाति के विषय में लिखा है–सराक 'श्रावक' शब्द से निकलता है। श्रावक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ 'सुनने वाले' है।

जैनियों में यह शब्द उन गृहस्थियों के लिए दिया जाता है जो यातियों से भिन्न हैं तथा जो लौकिक व्यापार करते हैं। श्रावक लोग अब भी पाये जाते हैं–समय बीतने से यहां के सराक लोगों ने आजीविका के लिए कपड़ा बुनने का व्यवसाय अपनाया। इस उड़ीसा के श्रावकों का यही व्यवसाय है। ये लोग बहुधा सराक तांती के नाम से कहे जाते हैं।

उड़ीसा में इनकी विशेष बस्ती निम्न चार स्थानों पर हैं–

1. टाइगारिया राज्य में,
2. बरम्बा राज्य में,
3. कटक के बंकी थाने में,
4. पुरी के पिगली थाने में।

जैन शास्त्रों में कलिंग देश में जैन-धर्म के अस्तित्व की बातें पाई जाती हैं, इसलिए यह उड़ीसा देश श्री पार्श्वनाथ स्वामी के समय में भी जैन-धर्म के प्रभाव से व्याप्त था। यही कारण है कि खण्डगिरि कि गुफाओं में श्री पार्श्वनाथ स्वामी की मुख्यता पाई जाती है। यहां जैनाचार्य और जैन साधुओं का श्रावकों का बराबर प्रचार रहा है। ऐसा नहीं कि राजा चन्द्रगुप्त के समय में ही यहां जैन धर्म प्रारम्भ हुआ हो–यहां जो प्राचीन जैन मूर्तियां हैं, उन सबसे दिगम्बर जैन-धर्म के प्रचार की पुष्टि होती है। इस उड़ीसा प्रान्त में श्री ऋषभदेव की मूर्तियां भी बहुत मिलती हैं।

उड़िया की रंगिया (सराक) जाति

रंगिया जाति की विशेषताएं अथवा इनके लक्षण स्वतः सिद्ध करते हैं कि ये जैन आचारसंहिता के पोषक रहे हैं। इनके आचरण ही इनके संस्कारशील होने के ज्वलन्त प्रमाण हैं--

यही जाति पुरी-कटक-बरहमपुर-गंजाम जिलों में लाखों की संख्या में है। कलिंग युद्ध के समय के जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार भी हम देखें तो अशोक के आक्रमण-काल में कलिंग की कुल जनसंख्या 75 लाख थी। दो वर्ष तक यहां युद्ध चला था। अशोक ने अपने शिलालेख नं. 13 में स्वीकार किया है कि कलिंग युद्ध में एक लाख व्यक्ति मारे गये, डेढ़ लाख बन्दी बनाये गये और बाद में इससे कई गुना मरे।

इतिहासकारों ने यह भी निष्कर्ष निकाला है कि कलिंग के जिस राजा के साथ अशोक ने युद्ध किया था, निश्चय ही वह एक जैन राजा था। अशोक ने अपने 13वें अनुशासन में यह भी स्वीकार किया है कि कलिंग युद्ध में श्रमण और ब्राह्मण उभय सम्प्रदाय के लोगों ने दुःख उठाये थे। अशोक ने जिनको श्रमण कहा है, वे वस्तुतः जैन ही थे।

आज उड़ीसा के जिन जनपदों/ग्रामों में उत्खनन के फलस्वरूप पुरातत्व सम्बन्धी सामग्री प्रचुरता से मिली हैं, ये सब स्थान वही हैं जहाँ जैन राजाओं की राजधानी का कार्य क्षेत्र रहा है।

इस प्रान्त में सराकों की दो जातियां हैं- एक रंगून तांती दूसरी सराक तांती। रंगूनी तांती के लोग आचरण में अधिक दृढ़ हैं। इसे रंगिया भी कहते हैं। चूंकि ये अधिकतर कपड़ा रंगने का कार्य करके आजीविका चलाते हैं, अतः रंगिया कहलाते हैं।

उड़ीसा प्रान्त की रंगिया (पूर्व जैन) जाति की विशेषताएं--

1. यह जाति पुरी-कटक-बरहमपुर, गंजाम आदि अनेक जिलों में लाखों की संख्या में है। इसका मुख्य कारण यही है कि उड़ीसा प्रान्त को सौभाग्य से जैन-धर्म संरक्षक राजा मिलते रहे हैं।

2. श्री खण्डगिरि-उदयगिरि की यात्रा वर्ष में एक बार अवश्य करते हैं।

3. कपड़ा बुनने का काम करते हैं, धागा भी रंगते हैं, रंग का पानी सन्ध्या के बाद पात्र में नहीं छोड़ते, उसे मिट्टी में मिला देते हैं।

4. जल छान कर पीते हैं, प्रत्येक कार्य में छना जल प्रयोग में लाते हैं।

5. रात्रि भोजन कुछ नहीं करते।

6. प्याज, लहसुन, मांस, मछली का प्रयोग नहीं करते, शुद्ध शाकाहारी हैं।

7. अपनी जाति में ही शादी-विवाह करते हैं।

8. विधवा विवाह नहीं करते हैं।

9. बाजारों में, होटलों में भोजन नहीं करते, अपने घर का ही बना भोजन करते हैं।

10. समस्त झगड़े आपस में ही सुलझा लेते हैं, मुकदमा आदि नहीं करते हैं।

11. तीर्थयात्राएं खण्डगिरि-उदयगिरि, काशी, पुरी की करते हैं।

12. रंगीन गेरुआ वस्त्र पहनते हैं।

13. 10 और 13 दिन का सूतक-पाठ मानते हैं।

14. मासिक धर्म की शुद्धि 5 दिन की मानते हैं; स्त्रियां 5 दिन बाद भोजन बनाती हैं।

15. 'पाणिपात्र' साधुओं के उपासक हैं, उन्हें भोजन कराकर प्रसन्न होते हैं।

16. पशु पालक हैं।

17. पंचायत प्रथा के उपासक हैं; उसके विधान को मानने वाले हैं।

18. गुरुभक्त हैं, ब्राह्मणों के हाथ का भोजन नहीं करते है, उन्हें खिलाते हैं।

19. लड़कों के समान लड़कियों को भी पढ़ाते हैं।

20. सत्संग के इच्छुक हैं, विद्वानों का सम्मान करते हैं।

21. उड़िया भाषी हैं। उड़िया भाषा में जैन साहित्य चाहते हैं।

22. नग्न गुरु को वह 'अलक' कहते हैं। यह गुरु अर्द्ध लंगोट बांधते हैं, मोर का पंखा, नारियल का कमण्डल रखते हैं। एक बार ही भोजन, पानी, दवा आदि लेते हैं।

23. कार्तिक वदी 15 (अमावस्या) को दीपक जलाकर आपस में लड्डू बांटते हैं। उसे मुक्ति दिवस या ज्ञानप्राप्ति दिवस कहते हैं।

इन विशेषताओं से स्पष्ट परिलक्षित है कि ये रंगिया जाति पूर्व की जैन जाति है। इनके गुरु 'अलक' हमारे 'ऐलक' वत् ही हैं। 'पाणिपात्र आहारी' हमारे निर्ग्रन्थ साधुओं को ही कहा गया है। 'अलक' साधुओं के हाथ में मयूर पिच्छी व

कमण्डल हमारे साधुओं के ही शौच-संयम के उपकरणवत् हैं। चौका-शुद्धि व आचार-विचार श्रावकाचार की ही धारा से अनुस्यूत हैं। कार्तिक वदी अमावस्या को निर्वाण दिवस व ज्ञान दिवस दोनों ही कहा जा सकता है। भगवान महावीर को निर्वाण प्राप्ति एवं गौतम गणाधार को ज्ञान-प्राप्ति हुई थी। जैन इस दिन को इसी रूप में मनाते हैं, दीप जलाते हैं, लड्डू चढ़ाते हैं।

गोत्र—यहां की जाति के गोत्र काशीनाग, जिगनेश, साहू, काश्यप, वागेश्वर, श्री कृष्ण आदि हैं।

टाइटिल—ये अपने नाम के साथ साहू, नायक, पात्र, महापात्र, साथरा, बेहरा, दास, राउत आदि लिखते हैं। वर्तमान सर्वेक्षण रिपोर्ट में कटक आदि जिलों के लगभग 25 ग्रामों का सर्वेक्षण कराया गया। पूज्य उपाध्याय श्री जी की प्रेरणा से उड़ीसा गए हुए युवकों ने उत्साहपूर्वक बताया कि सभी ग्रामों में उनको अपनत्व मिला तथा ग्रामवासी प्रसन्न हैं। वहां कुछ पूर्वजों को अभिज्ञात है कि वे जैनत्व के पोषक रहे हैं। वे कहते हैं कि साधुओं के विहार आदि न होने से एवं इस क्षेत्र में मन्दिर न होने से वर्तमान पीढ़ी में धर्म के प्रति शिथिलता आई है। वे भूलते जा रहे हैं कि वे पूर्व में जैन थे।

इसी प्रकार नोमागढ़ के 25, गंजाम के 22, पुरी के 29, खुर्धा के 26 तथा निकटवर्ती सराक क्षेत्रों के 84 ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया। यहां कुल घर 5304 में 38,504 की जनसंख्या है (सम्पूर्ण विवरण पृष्ठ सर्वेक्षण तालिका में संलग्न है)।

उड़ीसा के तीन जिलों की सर्वेक्षण रिपोर्ट यह प्रमाणित करती है कि सराक क्षेत्र कितना व्यापक है, उसका विस्तार कितना गम्भीर है, उसकी समस्याएं कितनी जटिल हैं। उसको पुनः प्रतिष्ठापित कर समाज की मूल धारा से सम्पृक्त करने में कितने अध्यवसाय और सावधानी की आवश्यकता है। यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यह कार्य टीम भावना से हो तो शीघ्र ही हो जाएगा। यदि सराकों को अपने जैनधर्म से पुनः प्रेम हो गया तो यह न केवल जैन जगत की नवीन प्रतिष्ठा करने में समर्थ होगा, अपितु उन्हें और समस्त समाज को अतीत गौरव का सम्यक् ज्ञान कराएगा। उन्हें उनके स्वरूप, वर्तमान क्षमताओं एवं स्थायी मूल्यों का अहसास करायेगा तथा उनकी परम्परा के भविष्य को सुरक्षित कर प्रशस्त बनायेगा। इतिहास के निर्माण, सर्वाधिक कला विकास में, राजनीत्ति में पर्याप्त प्रभुत्व में जैनों की महत्वपूर्ण देनों का तथा उनके अस्तित्व के औचित्य का सही मूल्याकंन तभी हो सकेगा। अतएव सराकोद्धार का यह महान कार्य केवल जैनों की ही दृष्टि से आवश्यक नहीं है, अपितु भारतीय एवं विश्व इतिहास की दृष्टि से भी परमावश्यक है।

सराक समस्या के समाधान हेतु जैनत्व में अभिरुचि रखने वाले विद्वानों, पुरातत्वविदों, समाजशास्त्रियों, इतिहासविदों का पूर्ण समर्पण, श्रम, समय और सहिष्णुता चाहिए। इस समस्या के अनेक पहलू हैं यथा सामग्री की सतत एवं अध्यवसायपूर्वक खोज, उसका एक भी करण, सम्यक् विश्लेषण सावधानीपूर्वक जांच-पड़ताल एवं तुलनात्मक परीक्षण, प्रमाणसिद्ध तथ्यावली का सुनियोजित वर्गीकरण, तदनन्तर उसके आधार पर सराकों का हृदय परिवर्तन तथा शेष समाज में सराकों के प्रति आस्था एवं समर्पण का जागरण। इनमें से प्रत्येक पहलू के भी अपने-अपने पहलू हैं। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र के पूर्वाग्रहों, रूढ़ विश्वासों और कभी-कभी अज्ञानता अथवा प्रमादजन्य उपेक्षा या उदासीनता के निमित्त से बन गई धारणाओं का निरसन करना भी पर्याप्त दुष्कर है। स्वयं जैनों की अपनी साम्प्रदायिक मनोवृत्ति, दिगम्बर-श्वेताम्बर मतभेद, विचारों, विश्वासों और मतभेदों का मुकाबला करना भी कम कष्टसाध्य नहीं है। आवश्यकता है सराक जाति के इतिहास पर समुचित शोध की।

प्रत्येक जाति का अपना कुछ न कुछ इतिहास है, जो कुछ भी वर्तमान है वह अपने सम्पूर्ण अतीत का ही परिणाम है—पूर्व में वर्तमान के बीज विद्यमान थे। उन सबका विकसित रूप ही वर्तमान है। अतएव वर्तमान स्वरूप को समझने के लिए उसके अतीत का ज्ञान एवं मूल्यांकन अनिवार्यतः आवश्यक है। उसके इतिहास की सम्यक् जानकारी द्वारा उसके वर्तमान स्वरूप एवं स्थिति को समझकर ही उसके भविष्य का निर्माण भली भांति किया जा सकता है। बिना उसकी क्षमताओं, आचार-विचार, सामाजिक मान्यताओं, अन्तर्निहित शक्तियों एवं भावनाओं, उसकी आशाओं और आकांक्षाओं की जानकारी के अभाव में समुचित प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण के अभाव में वर्तमान एवं भावी अस्तित्व का औचित्य खतरे में रहता है।

यूनानी इतिहासकार कहते हैं—इतिहास निर्जीव, नीरस घटनावली या काल-क्रमणिका मात्र न होकर समाज और उसकी संस्थाओं, आचार-विचारों एवं प्रवृत्तियों के स्वरूप तथा विकास की अन्तरझांकी का यथार्थ दस्तावेज होता है। इतिहास के न्यायालय में किसी व्यक्ति, जाति या राष्ट्र का मूल्यांकन उसकी यौद्धिक विजयों, शक्ति या विस्तार वैभव अथवा आर्थिक समृद्धियों, विश्व की सफलताओं के आधार पर नहीं होता, वरन, उनके कार्यकलापों द्वारा होता है, जो उन्होंने मानव मस्तिष्क, बुद्धि और ज्ञान के विकास के हित में किए हैं, मानव जाति को सुखी बनाने के उद्देश्य से किये हैं, उनकी मानवीय क्षमताओं को प्रस्फुटित एवं चरितार्थ करने के लिए किए हैं और भावी संतति के हृदयों को आशान्वित करने, उनके मार्ग को प्रशस्त बनाने और मानवी सभ्यता की प्रगति को वेगवान बनाने के लिए किए

हैं। अस्तुः जाति विशेष का इतिहास उसका सम्पूर्ण अतीत जीवन चरित्र होता है, जिसमें उसकी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक, कलात्मक धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्राप्ति का सर्वतोन्मुखी सांगोपांग चित्रण होता है। काल के पथ पर उत्तरोत्तर उग्रसर होते हुए उसने जो ऊंच-नीच देखे हैं, जो-जो मोड़ लिए हैं, विश्व की सुख-शान्ति और मानव के उन्नयन में जो कुछ योगदान दिये हैं—उन सबके निष्पक्ष, संवेदनशील, क्रमिक विवरण इतिहास प्रदान करता है और यह ऐतिहासिक विवेचन विश्लेषणात्मक भी होता है और संश्लेषणात्मक भी।

पूज्य उपाध्याय श्री का उड़ीसा में प्रवेश

जून '92 से जनवरी '93 तक पूज्य उपाध्याय श्री के चरण जैसे जैन संस्कृति के नये क्षितिज के निर्माण हेतु बढ़ चले। युगान्तरकारी उनकी करुणा अब सार्वभौम हो गई। धर्म की सत्य परिभाषा का उद्घाटन सन्त की सही व्यापकता एवं विराटता प्रयोग से ही अधिक स्पष्ट होती है—जिनका जीवन दर्शन ही कठोर साधना का मुखापेक्षी है, ऐसे दिगम्बर साधु को सुख-सुविधा का तो मोह होता नहीं। राजप्रासाद हो या श्मशान, महानगर हो या ग्राम—सब समान हैं उनके लिए—अतः सम्पूर्ण समाज की अंतरंग चेतना के प्रतिनिधि रूप, बाधाओं से जूझते हुए उस धर्मपरायण कर्मस्थली पर पहुंचे, जहां एक मौन संवेदना को स्वर चाहिए थे, जहां गिरते अवशेषों को पुनर्निर्माण चाहिए और जहां चाहिए पथभ्रमितों को एक सही, सीधा-सपाट उनका पुराना विस्मृत गौरव पंथ ! उनका विहार समस्त प्राणीमात्र के लिए सदैव कल्याण कर रहा ही है। पूर्वजनित संस्कारों से किसी-किसी को अपूर्व ही लाभ मिल जाता है—ऐसा ही कुछ हुआ सराक बन्धुओं के साथ—वही सराक बन्धु, जिन्हें हम भूल चुके हैं और वे हमें—तथा साथ ही अपनी संस्कृति के नाम को। संस्कार है कि उसी आचरण का पालन कर रहे हैं पर सराक बनकर, श्रावक बनकर नहीं। उन्हें यह स्मरण नहीं रहा है कि श्रावक का अपभ्रंश रूप है 'सराक'। पर जैसे कि सर्वविदित है, पूज्यवर के व्यक्तित्व ही में एक सांस्कृतिक गरिमा है। उनकी चेतना जीवन्त है, उनकी व्यापकता में असीम सृष्टि और असीम युग सर्वात्म हो जाता है। उसके बौद्धिक संतुलन ने स्पष्टतया जाना और देखा कि सराकों के उद्धार से ही समग्र जैनत्व का उद्धार संभव है। ये पुरातन गरिमा के जीवन्त अवशेष हैं। इनके माध्यम से ही धार्मिक एवं सांस्कृतिक गौरव पुनर्जीवित होकर इन प्रान्तों को पुनः इनके तीर्थंकरों के जन्म, तप और विहार का स्मरण करायेगा तथा इन्हें पुनः अपने गौरवमयी इतिवृत्त का स्मरण होगा।

सही बात है, यथार्थ की दृष्टि जितनी गहरी और पैनी होगी, आदर्श की क्रान्ति उतनी ही प्रखर और आकर्षक होगी। जो जीवन को जितनी दृढ़ता से पकड़ेगा, आस्था में ग्रहण करेगा, वह उतनी ही दृढ़ता से, उतने ही विश्वास से जीवन के यथार्थ को कह पाएगा और आदर्शों को स्पर्श कर पाएगा।

उपाध्याय श्री का वात्सल्य इस क्षेत्र के सूनेपन, सांस्कृतिक बिखराव, धर्म-

विमुखता के मूल कारण को जानना चाहता था। उन्होंने जागरूक और पुरुषार्थी होकर स्वयं अपनी दृष्टि से सब देखा, परखा; सराकों को देख-देख कर उनका दर्द, उनकी धर्मानुरागी करुणा बूंद-बूंद इकट्ठा होकर भरती गई। गया एवं रांची के दो वर्षों प्रवास सम्पन्न होने के अनन्तर आपका विहार अन्ततः हो ही गया, उड़ीसा की ओर—बंगाल विहार को जब चरण रज पवित्र कर चुकी थी तो भला उड़ीसा अछूता कैसे रहता है ? इन तीनों प्रान्तों ने उत्स और अवसाद, उत्थान और पतन प्रायः देखा ही एक साथ है, इसीलिए यहां तो पूज्य प्रवर का विहार होना ही था। रांची से राउरकेला होते हुए श्री गुरुदेव ने खण्डगिरि, उदयगिरि की ओर विहार किया। रांची के युवक विशेषतः सराक युवकों ने तो जैसे अपनी इस पीढ़ी को सर्वदा इस कलंक से बचा लिया कि एक दिगम्बर साधु के विहार में इन्होंने उपेक्षा रखी। इनके पूर्वजों ने भगवान महावीर और पार्श्वनाथ के विहार में क्या साथ दिया होगा ! अब तो स्थिति विचित्र थी। सराकों को साथ चलता देख उनके अन्य मित्र, परिचित विस्मित और चकित थे कि क्या ये जैन हैं ? पर सत्य तो सत्य है, समय की गहरी पर्तों में दब जाने पर भी कुन्दन तो कुन्दन ही होता है। आपका यह विहार जनसमूह के लिए अत्यधिक प्रभावक रहा—जहां आपके चरण-युगल पड़े, वहां के समाज द्वारा आपका भव्य स्वागत किया गया और आपने अपने प्रवचनों से सबको लाभान्वित किया। उड़ीसा में हजारों की भीड़ ने आपको जिस शैली में साष्टांग नमस्कार किया, वह शब्दातीत है। एक दिगम्बर साधु की कठोर चर्या के विषय में परिचय प्राप्त कर जो हृदय में आदर था, वह तो दृष्टिगत हुआ ही, पर सराक क्षेत्र के पुरजनों ने भी पीछे-पीछे चलकर पुनः श्रावक धर्मध्वजा को अपने हाथों में लेकर पूज्य श्री के सपने को साकारता का आश्वासन देकर स्वयं को पुनः धर्ममार्ग पर आरूढ़ कर लिया।

सत्य यह है, हर मानव एक थाती, एक विरासत, एक मिशन लिये हुए धरती पर आता है। उससे पूर्व कई पीढ़ियां उतर चुकी होती हैं। वे सब अपनी अपूर्व आकांक्षाएं उसे सौंपती हैं, वंश बल देकर आशीर्वाद देती हैं—जाओ, आगे बढ़ो और एक नया इतिहास लिखो।

पूज्य श्री ने भी पूर्व साधुओं से यही ऊर्जा लेकर अपनी नवोन्मेष प्रतिभा से मानवोद्धार का संकल्प लिया। उनका यह संकल्प समानता, मानवता, सहिष्णुता और संस्कृति संरक्षण का संकल्प है।

उड़ीसा में प्राप्त जैन प्रतीक

प्रतीक योजना के अन्तर्गत विविध-प्रतीकों का सर्वप्रथम स्पष्ट अंकन खण्डगिरि-उदयगिरि की विभिन्न गुफाओं में मिलता है। इन प्रतीकों में वर्धमंगल, स्वस्तिक, नन्दिपद और चैत्यवृक्ष इन चार प्रतीकों का प्रयोग दायीं गुफा के शिलालेख में मिलता है। इस शिलालेख में वामपार्श्व में दो और दाहिनी ओर दो चिह्न हैं। जय-विजय गुफा में सिरदल पर दो पुरुष और दो स्त्रियां सिद्धार्थ वृक्ष की पूजा करते हुए अंकित हैं। स्त्रियां पात्र में पूजा का द्रव्य लिये हुए हैं। एक पुरुष बद्धांजलि खड़ा है तथा दूसरा पुरुष माल्यार्पण कर रहा है। इस वृक्ष को कुछ लोगों ने भ्रमवश पीपल का वृक्ष मान लिया है, जो कि वस्तुतः सिद्धार्थ वृक्ष है।

अनन्त गुफा के द्वार के सिरदल पर तीन फणवाली सर्प-युगल मूर्ति अंकित है। पार्श्वनाथ का प्रतीक चिह्न सर्प है। धरणेन्द्र और पद्मावती उनके सेवक यक्ष-यक्षिणी हैं, जो नागकुमार जाति के इन्द्र-इन्द्राणी हैं। पार्श्वनाथ के साथ कलिंग का सम्बन्ध रहा है, इस तथ्य की पुष्टि शिल्पी ने सर्पयुगल अंकित करके कर दी है। सर जान मार्शल के मतानुसार, गुफा स्थापत्य की दृष्टि से यह गुफा संसार में प्रथम है। यह ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी की है।

मूर्तियों के पादपीठ पर धर्मचक्र का अंकन जैनकला का अपना वैशिष्ट्य है। तीर्थंकरों के विहार के समय धर्मचक्र आगे-आगे चलता है। इस धर्मचक्र के कारण ही तीर्थंकर धर्मचक्री कहलाते हैं। तीर्थंकर केवल ज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् दिव्यध्वनि द्वारा जो धर्मोपदेश देते हैं, शास्त्रीय भाषा के धर्मचक्र-प्रवर्तन कहा जाता है। इसीलिए प्रारम्भ से ही प्रायः सभी जैन मूर्तियों के सिंहासन पीठ पर मध्य में या दोनों ओर धर्मचक्र रहता है।

जैन ग्रन्थों में सभी तीर्थंकरों का अलग-अलग जन्म-चिह्न बताया है। जैन मूर्तियों के पादपीठ पर वह चिह्न अंकित रहता है। गुप्तकाल से तो इसका प्रचलन काफी बढ़ गया था, किन्तु इससे पूर्ववर्ती मूर्तियों के ऊपर चिह्न अंकित करने की आम प्रथा नहीं थी। खण्डगिरि-उदयगिरि गुफाओं के वेदिका स्तम्भों और सिरदलों पर अकेले चिह्न का भी अंकन मिलता है।

उड़ीसा के अयोध्या, नीलगिरि, अतसपुर, मयूरभंज आदि स्थानों पर ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी तक की मूर्तियां उपलब्ध होती हैं। ये मूर्तियां जहां बिखरी पड़ी हैं,

वहां जैन मन्दिरों के चिह्न भी मिलते हैं। अतः असंदिग्ध रूप से ये मन्दिर भी इसी काल के थे। भुवनेश्वर से 6 किमी. दूर खण्डगिरि-उदयगिरि की गुफाएं हैं। इन गुफाओं की प्रसिद्धि हाथी गुफा के शिलालेख के कारण अत्यधिक हुई है। इसके अतिरिक्त इनका अपना ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व भी है। इनमें से कुछ गुफाएं भगवान महावीर के काल में थीं। कुछ गुफाओं का निर्माण कलिंग सम्राट खारवेल और उसके परिवार के सदस्यों ने कराया था। खारवेल का काल ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाता है। इस प्रकार इनमें से कई गुफाओं को बने हुए 2000 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इन गुफाओं के अतिरिक्त शेष गुफाएं 10वीं शताब्दी तक निर्मित होती रहीं। ये गुफाएं प्रायः जैन मुनियों के ध्यानादि के निमित्त बनायी गई थीं। खण्डगिरि की पहाड़ी प्राचीन काल में कुमारी पर्वत कहलाती थी। यहां पर भगवान महावीर का समवशरण आया था। उस समय कलिंग नरेश जितशत्रु और उनकी पुत्री यशोदा ने भगवान के चरणों में संयम धारण किया था तथा जितशत्रु मुनि ने केवल ज्ञान प्राप्त करके यहीं से निर्वाण प्राप्त किया था। इस प्रकार यह तीर्थभूमि सिद्धक्षेत्र भी है। इसी पर्वत पर सम्राट खारवेल ने जैन मुनियों और विद्वानों का सम्मलेन बुलाया था।

यहां दिगम्बर जैन धर्मशाला है, जहां ठहरने की अच्छी सुविधा है। धर्मशाला से इन पहाड़ियों की ओर चलने पर बायीं ओर खण्डगिरि और दायीं ओर उदयगिरि की पहाड़ी है। खण्डगिरि के ऊपर चार दिगम्बर जैन मन्दिर और कुल 15 गुफाएं हैं। इनमें से 6 गुफाओं में जैन मूर्तियां हैं। इनमें से कुछ मूर्तियां गुफा के निर्माण के समय ही बनाई गई थीं, कुछ बाद में भी बनाई गईं। सभी गुफाओं के बाहर एक पत्थर पर गुफा का नम्बर और नाम लिखा हुआ है, इससे इन्हें देखने में सुविधा रहती है।

इसी प्रकार उदयगिरि पर्वत पर कुल 18 गुफाएं हैं। इस पहाड़ी के ऊपर किसी गुफा में कोई मूर्ति नहीं है। इन गुफाओं में प्रथम रानी गुफा सबसे बड़ी है। इसके सिरदलों आदि पर विभिन्न पौराणिक दृश्य उत्कीर्ण हैं। गणेश गुफा में भी तोरणों के मध्य भाग में कुछ दृश्य उत्कीर्ण हैं। कई गुफाओं में शिलालेख भी अंकित हैं।

कटक

कटक उत्कल या उड़ीसा प्रदेश की प्राचीन राजधानी है। यह हावड़ा जंक्शन से पुरी को जाने वाली रेल लाइन पर 409 किमी. दूर है। स्टेशन से लगभग 5 किमी. चौधरी बाजार में जैन भवन है, इसके पृष्ठ भाग में प्राचीन चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर है। इसी बाजार में मन्दिर से थोड़ी दूर पर दिगम्बर जैन चैत्यालय है।

मन्दिर का शिखर बहुत सुन्दर है। इस मन्दिर में कुछ मूर्तियां बहुत प्राचीन हैं। अनुमान किया जाता है ये दसवीं शताब्दी की हैं। अधिकांश प्राचीन मूर्तियां खण्डगिरि से लाई गई हैं। कटक में 49 ग्राम सराकों के घर हैं (सर्वेक्षण रिपोर्ट संलग्न है)।

पुरी

उदयगिरि से भुवनेश्वर जाकर पुरी (जगन्नाथपुरी) जा सकते हैं। भुवनेश्वर से पुरी 62 किमी. दूर है। सड़क और रेल मार्ग है।

यह हिन्दुओं का सुप्रसिद्ध धाम है। 51 शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ है। इसके मुख्य मन्दिर को निज मन्दिर कहा जाता है। निज मन्दिर के दक्षिण द्वार के बाहर दीवाल में भगवान ऋषभनाथ की एक फुट ऊंची मूर्ति विराजमान है। मन्दिर के पण्डों की आम धारणा है कि इस मन्दिर का निर्माण महाराज खारवेल ने 'कलिंग जिन' की मूर्ति को विराजमान करने के लिए बनवाया था।

इतिहास ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में कलिंग में 'कलिंग जिन' नामक एक प्रतिमा थी। नन्दवंश के प्रतापी सम्राट महापद्मनन्द ने जब कलिंग को पराजित किया तो वह इस मूर्ति को अपने साथ ले गया था। यह मूर्ति तीर्थंकर ऋषभदेव की थी। नन्दराज के तीन सौ वर्ष पश्चात् खारवेल ने मगध पर आक्रमण किया, वृहसतिमित्र को हराया और वह उस 'कलिंग जिन' प्रतिमा को अपने साथ वापिस लाया। इस मूर्ति का उत्सव उसने कुमारी पर्वत पर मनाया, फिर इस मूर्ति के लिए उसने विशाल जिनालय बनवाया। पुरी का मन्दिर खारवेल द्वारा निर्मित वही जैन मन्दिर तथा जगन्नाथ की मूर्ति वही 'कलिंग जिन' प्रतिमा है, ऐसा लोगों का विश्वास है।

आर्कीलोजिकल सर्वे श्री नगेन्द्र नाथ बसु द्वारा प्रकाशित सन् 1911 में मयूरभंज जिले में भी जैन धर्म की प्राचीनता एवं पुरातत्व सम्बन्धी अनेक प्रमाण मिलते हैं।

इसकी भौगोलिक सीमाएं निम्न प्रकार हैं--

उत्तर में सिंहभूम, दक्षिण में कटक, पूर्व में वालासा मिदनापुर, पश्चिम में बोनाई और क्योन्सर राज्य। इसकी राजधानी वारीपदा थी। सन् 1918 में महाराज पूर्णचन्द्र भंजदेव यहां राज्य करते थे।

यहां कुछ जैनत्व की दृष्टि से उल्लेखनीय स्थल हैं--

बरसई के पास कोसली के खण्डित स्थानों में श्री पार्श्वनाथ की मूर्ति मिली है जिसके दोनों तरफ 4 मूर्तियां हैं--2 पद्मासन, 2 खड्गासन। मूर्ति को देखने से प्रगट होता है कि यह बहुत प्राचीन समय की है, जब मयूरभंज में कुसुम्ब क्षत्रियों

का राज्य था। यह मूर्ति इस बात का प्रमाण देती है कि 2000 वर्ष पहले इस स्थान पर जैन धर्म का प्रभाव था।

नीलगिरि में पुण्डाल स्थान में सोननदी के रेती में एक बड़ी पार्श्वनाथ की मूर्ति मिली है—यह 4 फुट 6 इंच ऊंची, 2 फुट 8 इंच चौड़ी है। यह प्राचीन कला का उत्कृष्ट नमूना है।

वारियदा में बड़ा जगन्नाथ का मन्दिर है, उसमें श्री पार्श्वनाथ की एक पद्मासन सुन्दर मूर्ति देखी जाती है।

जैसे पार्श्वनाथ की यहां मान्यता थी वैसे श्री वर्द्धमान स्वामी भी इस मयूरभंज में पूजे जाते थे। इसके प्रमाण निम्न हैं—

1. बाजसाई से 3 मील रानीबन्ध गांव में श्री महावीर स्वामी की पूजा के प्रमाण अब भी मिलते हैं।

2. बालसर नगर में दक्षिण-पूर्व 12 किमी. भीमपुर ग्राम है। यहां बहुत-सी प्राचीन मूर्तियां पाई गई हैं जो वर्द्धमान स्वामी की प्रतीत होती हैं।

10-12 वर्ष हुए, भीमपुर में एक सरोवर को खोदते हुए एक बहुत ही सुन्दर श्री महावीर स्वामी जी की मूर्ति जमीन के नीचे से मिली है—इसकी ऊंचाई 5 फुट है—इसके दोनों तरफ 24 तीर्थंकरों की छोटी-छोटी मूर्तियां हैं। राजा बैकुण्ठनाम डे बहादुर ने इस मूर्ति को अपने महल के बाग में विराजमान किया था।

भीमपुर के पास वर्द्धमानपुर है, वहां भी जैन प्रभाव के चिह्न पाये जाते हैं, जैनियों की उन्नति के समय में भी ये नगर भीमपुर और वर्द्धमानपुर के नाम से जाने जाते थे।

कटक से उत्तर-पूर्व 35 किमी. कुशमण्डल परगने में भादेश्वर ग्राम में जमीन खोदने से बहुत ही अमूल्य और उपयोगी प्राचीन पदार्थ मिले थे, जिनसे प्रमाणित होता है कि यहां प्राचीन समय में जैनों का अच्छा प्रभुत्व था तथा यह जैनियों का उन्नतशील समय था। उड़ीसा में जहां-जहां प्राचीन जैन पुरातत्व सामग्री मिली है, उनमें से ये उत्कृष्ट नमूने हैं। तीर्थंकरों, गणधरों, पूर्वधारियों, श्रावक और श्राविकाओं की मूर्तियां हैं—इनमें जैन तीर्थंकरों की खड्गासन तथा पद्मासन ध्यानाकार मूर्तियां नग्न हैं। यह एक बहुत सुन्दर पाषाण प्रतिमा है और 2 से 6 फुट ऊंची है।

सन् 1922-23 में बहुत-सी जैन मूर्तियां किचिंग में तथा आदिपुर के पास दूसरे स्थानों से मिली हैं। आदिपुर मयूरभंज की प्राचीन राजधानी थी।

पृष्ठ 242 में यह उल्लेख भी है कि इस मयूरभंज राज्य की स्थापना 1300 वर्ष हुए एक जयसिंह ने की थी, जो राजपूताना के जैपुर राजा का सम्बन्धी था। उसके सबसे बड़े पुत्र का नाम आदिसिंह था। इन नामों से तथा यहां के मन्दिरों से इस राजा का जैनधर्मी होना प्रतीत होता है।

सराक सम्मेलन

परमपूज्य प्रातः स्मरणीय सराकोद्धारक उपाध्याय 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित 'सराक सम्मेलन' की सूची—

स्थान	जिला	प्रान्त	मुख्य अतिथि के नाम	तारीख
1. हजारीबाग	हजारीबाग	बिहार	राय. श्री हरकचन्द जी पाण्ड्या	03-05-92
2. रांची	रांची	"	"	24-05-92
3. बुण्डु	"	"	"	17-02-93
4. नौढी	"	"	श्री ए.सी. साहब, एस.पी साहब (रांची)	05-04-93
5. तड़ाई	"	"	साहू श्री अशोक कुमार जी जैन	05-09-93
6. साड़म	बोकारो	"	श्री उम्मेदमल जी पाण्ड्या	13-11-94
7. पुरुलिया	पुरुलिया	पं. बंगाल	राय. श्री हरकचन्द जी पाण्ड्या	21-12-94
8. मिहिजाम	दुमका	बिहार	श्री कमल कुमार जी जैन (पाटोदी)	11-12-94
9. सरिया	गिरिडीह	"	राय. श्री हरकचन्द जी पाण्ड्या	22-12-94
10. खतौली (उपाध्याय श्री की प्रेरणा से)	मेरठ	उ. प्र.		13-02-95
11. मेरठ	मेरठ	उ. प्र.		13-02-95
12. सहारनपुर	सहारनपुर	"		05-05-95
13. बड़ागांव	मेरठ	"	श्री कुमार मंगलम्	05-11-95

धार्मिक शिक्षण शिविर

वात्सल्यपुंज उपाध्याय 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज के आर्शीवाद से प. बंगाल प्रान्त के सराक जैन ग्रामों में आयोजित किए गए धार्मिक शिक्षण शिविर की सूची

(पश्चिम बंगाल प्रान्त)

ग्राम	जिला	ग्राम	जिला
1. गौरांगडीह	पुरुलिया	8. राधामाधवपुर	पुरुलिया
2. तालाजोड़ी	"	9. धनीयार डांगा	"
3. राजड़ा	"	10. बनबेड़िया	"
4. मुड़लू	"	11. मकुला	"
5. बोदामा	"	12. पोलमा	"
6. लालडीह	"	13. सनेड़ा	"
7. मेट्यालशहर	"		

धार्मिक पाठशाला

गौरवपुंज उपाध्याय 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से वर्द्धमान, बांकुड़ा एवं पुरुलिया जिले के निम्न सराक जैन ग्रामों में 'धार्मिक पाठशालाएं' खोली गईं—

(पश्चिम बंगाल प्रान्त)

जिला पुरुलिया

1. बोदमा	5. इन्द्रबील	9. गोविन्दपुर	13. कासीवेड़िया
2. लालपुर	6. राजड़ा	10. बनबहिरा	14. चौताला
3. गौरांगडीह	7. मुड़लू	11. धनीयारडांगा	15. पोलमा
4. तालाजोड़ी	8. राधामाधवपुर	12. मेट्यालशहर	16. मनोग्राम

जिला वर्द्धमान

1. ईटापाड़ा 2. रोशना 3. दासक्यारी

जिला बांकुड़ा में 20 पाठशालाएं चलाई जा रही हैं।

(बिहार प्रान्त)

जिला—रांची—सिंहभूम जिले की पाठशालाओं के ग्रामों के नाम—

रांची जिला—1. चोकाहातु, 2. नौढ़ी, 3. पांगुरा, 4. बेड़ाडीह

सिंहभूम जिला—1. देवलटांड, 2. नवाडीह, 3. रूगड़ी, 4. आगसिया।

पुस्तक वितरण

पश्चिम बंगाल प्रान्त के वर्द्धमान जिले में 9 ग्रामों के 36 विद्यार्थियों को तथा पुरुलिया जिले में 13 ग्रामों के 87 विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम की पुस्तकें वितरित की गईं।

बिहार प्रान्त के रांची जिला के चोकाहातु ग्राम के 6 विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम की पुस्तकें वितरित की गईं।

छात्रवृत्ति

बिहार एवं बंगाल प्रान्त के 15 विद्यार्थियों को 'छात्रवृत्ति' दी जा रही है।

प्रशिक्षण

पश्चिम बंगाल प्रान्त के पुरुलिया एवं वर्द्धमान जिले के 15 सराक जैन नवयुवकों को ड्राइवरी में, 12 युवकों को टाइपिंग में एवं 2 युवकों को कम्पाउण्डरी में प्रशिक्षण प्राप्त कराया जा रहा है।

सिलाई सेन्टर

पश्चिम बंगाल एवं बिहार प्रान्त के 3 सराक जैन ग्रामों में सिलाई सेन्टर खोला गया है जिसमें लड़कियों को ही विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया जाता है।

अन्यान्य कार्य योजनाएं

पश्चिम बंगाल प्रान्त की 3 विधवा महिलाओं एवं दो गरीब परिवारों को प्रतिमाह आर्थिक सहायता दी जाती है तथा रोग से पीड़ित व्यक्तियों को चिकित्सा हेतु सहायता दी जा रही है।

पहले से निर्मित मन्दिरों की सूची

बिहार प्रान्त—

जिला सिंहभूम—1. देवलटांड, 2. आगसिया, 3. नवाडीह।

जिला रांची—1. चोकाहातु, 2. तड़ाई।

नवचेतना प्रदायक उपाध्याय 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज के आशीर्वाद से निम्नलिखित ग्रामों में मूर्तियां विराजमान की गईं—

1. पांगुरा, 2. तमाड़, 3. नौढ़ी, 4. चिपड़ी, 5. हुरुण्डीह।

पश्चिम बंगाल प्रान्त के वर्द्धमान जिला के पुचड़ा ग्राम में जैन मन्दिर एवं हाईस्कूल निर्माण कराया गया है।

नवनिर्मित चैत्यालय

पश्चिम बंगाल प्रान्त, जिला—पुरुलिया

राजड़ा तथा बोदमा ग्राम में चैत्यालय नवनिर्मित किए गए।

सेन्टर तथा पत्रिका

पश्चिम बंगाल प्रान्त—जिला वर्द्धमान के रूपनारायणपुर ग्राम में सराक क्षेत्र के उत्थान कार्य के लिए एक सेन्टर खोला गया है। जहां से प्रत्येक माह बंगला भाषा में 'सराक संहति' नाम से पत्रिका निकाली जाती है। यह पत्रिका जनवरी माह सन् 1995 से प्रकाशित की जा रही है। सम्पादक श्री दिवाकर जी सराक जैन (रूपनारायणपुर) हैं। दूसरी पत्रिका हिन्दी भाषा में 'सराक ज्योति' नाम से निकाली जा रही है, जिसके कुछ अंक 'सराक बुलेटिन ग्राम' से निकाले गए थे। सम्पादक डॉ. श्री सुशील कुमार जी जैन (M.B.B.S.) हैं। यह पत्रिका नवम्बर 1994 से उत्तर प्रदेश प्रान्त के कुरावली मैनपुरी स्थान से आरम्भ की गई है। प. बंगाल प्रान्त के जिला पुरुलिया में राजड़ा एवं रघुनाथपुर में सेन्टर खोले जा रहे हैं।

यात्रा विवरण

जन-जन की आस्था के केन्द्र परम पूज्य उपाध्याय 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज की प्रेरणा से सराक बन्धुओं को निम्न तीर्थ स्थानों की यात्रा करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ—

1. **श्रवणबेलगोला**—महामस्तकाभिषेक के समय 14-12-93 से 21-12-93 तक बंगाल एवं बिहार प्रान्त के 57 व्यक्तियों ने तीर्थयात्रा की।

2. श्री सम्मेदशिखर जी—बंगाल एवं बिहार प्रान्त के लगभग 100 सराक बन्धुओं ने आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज के जन्म जयन्ती समारोह के समय सन् 1994 को पेटरवार से यात्रा की।

3. मेरठ (पंचकल्याणक प्रतिष्ठा के समय), बंगाल एवं बिहार प्रान्त के लगभग 50 सराक बन्धुओं ने हस्तिनापुर, बरनावा, बहलना आदि क्षेत्रों के दर्शन किए, दिनांक 10-2-95 से 12-2-95 तक।

4. बड़ागांव में आयोजित धार्मिक प्रशिक्षण शिविर तथ सराक सम्मेलन में आए हुए बंगाल-बिहार प्रान्त के लगभग 60 सराक बन्धुओं ने हस्तिनापुर, बरनावा, बहलना तथा तिजारा जी के दर्शन किए, दिनांक 4-11-95 तथा 7-11-95।

5. बंगाल-बिहार प्रान्त के कुछ शिविर छात्रों ने राजगृही, गुणावा जी, पावापुर जी, पटना, सिंहपुरी, चन्द्रपुरी, प्रभागिरी, कौशाम्बी, शिखरजी आदि क्षेत्रों के दर्शन किए। उपाध्याय श्री के बिहार प्रान्त से उत्तर प्रदेश की ओर विहार के समय सन् 1995 को।

6. साड़म (बाकारो)—धार्मिक शिविर के समय बांकुड़ा जिला के लगभग 39 छात्र-छात्राएं (दिनांक 13-8-95 को) एवं पुरुलिया-वर्द्धमान जिले के 44 छात्र-छात्राओं ने श्री सम्मेदशिखर जी की यात्रा की (दिनांक 27-8-95 को)।

बाहर के विद्यालयों में

बिहार प्रान्त—रांची जिले के 4 ग्रामों की 3 छात्राएं आरा बालिका उच्च विद्यालय में एवं 2 छात्र श्री वर्द्धमान कॉलेज पावापुर जी में पढ़ रहे हैं। कॉलेज में पढ़ने वाले छात्रों का 1993 में नामांकन कराया गया है, तथा छात्राओं को 1995 फरवरी माह में प्रवेश दिलाया था।

बांकू (रांची) समाज मिशन स्कूल में 10 लड़के चोकाहातु (रांची) के पढ़ रहे हैं, इन लड़कों का वर्ष 1995 सितम्बर माह में नामांकन कराया गया है।

चिकित्सा कैम्प

(बिहार प्रान्त) जिला—रांची के रांगामाटी एवं नौढ़ी स्थान में उपाध्याय श्री के तड़ाई (सराक ग्राम) चातुर्मास के समय 1993 को निःशुल्क चिकित्सा कैम्प लगाया गया।

वर्ष 1994—पेटरवार (बोकारो) चातुर्मास के समय पेटरवार के नेत्र चिकित्सा कैम्प को सराक क्षेत्र के ग्रामों में भेजकर नेत्र जांच करने के साथ-साथ चश्मा एवं निःशुल्क औषधि दी गई तथा ऑपरेशन करने योग्य व्यक्ति को पेटरवार लाकर ऑपरेशन किया गया।

मन्दिर जीर्णोद्धार

बिहार प्रान्त के 3 पुराने मन्दिरों (आमसिया, तड़ाई, नवाडीह) का जीर्णोद्धार कार्य सम्पन्न हुआ। देवलटांड़ के जिन मन्दिर का कार्य चालू है, चोकाहातु का भी शीघ्र चालू होने वाला है। अभी तक इन कार्यों में लगभग दो लाख रुपये व्यय हो चुका है।

सराक जैन क्षेत्र में कार्यरत

बंगाल एवं बिहार प्रान्त के विभिन्न कार्य योजनाओं एवं शिक्षण शिविर के कार्यों को सफल बनाने हेतु निम्नलिखित सराक जैन युवा संकल्पी कार्यरत हैं–सूची निम्न प्रकार है–

नाम	उम्र	योग्यता	ग्राम	जिला
1. श्री सृष्टिधर सराक जैन	21	बी.ए.	चोकाहातु	रांची
2. श्री आनन्द कुमार जैन	42	एम. पास	जीड़रा	बांकुड़ा
3. श्री गौरांग जैन	20	जे.ए.	चोकाहातु	रांची
4. श्री किरीटोभूषण जैन	26	एम. पास	”	”
5. श्री जितेन्द्र जैन	21	नन.एम.	राजड़ा	पुरुलिया
6. श्री राजेन्द्र नाथ जैन	24	आई.ए.	देवलटांड़	सिंहभूम
7. श्री सूरजमल जैन	26	आई.ए.	चोकाहातु	रांची
8. श्री सजल कुमार जैन	20	बी.ए.	आछड़ा	वर्धमान
9. श्री कांचन कुमार जैन	22	बी.ए. पास	”	”

सराक सम्बन्धी साहित्य

पूर्व प्रकाशित

पुस्तकों के नाम	लेखक
1. सराक हृदय	स्व. बाबूलाल जी जमादार
2. जैन संस्कृति के विस्तृत प्रतीक	”
3. श्रावक दर्शन या सराक दर्शन	”
4. सराक के बीच	”
5. प्राच्य जैन सराक शोध कार्य	”

प्रेस में

1. सराक जैन क्षेत्रों का सर्वेक्षण समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ. कस्तूर चन्द जी कासलीवाल जयपुर
2. मानभूम और वर्द्धमान में श्री वर्द्धमान	डॉ. नीलम जी जैन (सहारनपुर)
3. सराकों के मध्य भगवान महावीर	”
4. सराक ज्ञानाञ्जलि काव्य	श्री निहाल चन्द्र सिंघई चंद्रेश ललितपुर

5. स्याद्वाद बाल शिक्षा बंगला में — भाग, प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ

वर्तमान में प्रकाशित

पुस्तक के नाम	लेखक
1. सराक बन्धुओं के मध्य	उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज —डॉ. कस्तूर चन्द जी, —कासलीवाल (जयपुर)
2. सराक क्षेत्र प्रगति की राह पर	डॉ. नीलम जी जैन (सहारनपुर)
3. हम और हमारे पूर्वज	
4. अहिंसा संदेश	सराक विशेषांक वरिष्ठ पत्रकार श्री रत्नेश कुमार श्री जैन (रांची)

5. श्री पार्श्वनाथ भगवान के कैलेण्डर जिसमें सराकों का परिचय तथा जैन धर्म के मुख्य सिद्धान्त लिखे हैं।
6. णमोकार मंत्र पंचपरमेष्ठी सचित्र कार्ड श्री महावीर स्वामी का कैलेंडर आदि।
7. शिशुबोध पाठमाला (बंगला में)
8. पूजन पाठ (बंगला में) जीतेन्द्र जैन हापुड़
9. बंगला में अण्डे के 100 तथ्य
10. शाकाहार या मांसाहार : फैसला स्वयं करें।

परम पूज्य प्रातःस्मरणीय वात्सल्यरत्न उपाध्याय 108 श्री ज्ञानसागर जी महाराज के सान्निध्य से वर्ष 1993 में
बिहार प्रान्त के सराक जैन ग्रामों में सराक जैन नवयुवकों द्वारा संचालित, धार्मिक शिक्षण शिविर की—
विवरण

स्थान	छात्र-अध्यापक	निवासी	छात्र सं.	शिक्षण शिविर की तिथि
1. रुगड़ी	श्री प्रदीपकुमार मांझी	पांगुरा	24	12-3-93 से
	श्री शरदचन्द्र अधिकारी	गोसाईडीह		21-3-93 तक
2. देवलटांड	श्री जितेन्द्र नाथ मांझी	पांगुरा	53	12 मार्च 93 से
	श्री विजय कुमार मांझी	"		21 मार्च 93 तक
3. पारमडीह	श्री विजय कुमार मांझी	"	26	12 मार्च 93 से
	श्री नरेन्द्र नाथ मांझी	"		21 मार्च 93 तक
4. नौढ़ी	श्री जितेन्द्र नाथ मांझी	"	66	27 फरवरी 93 से
	श्री विजय कुमार मांझी	"		6 मार्च 93 तक
5. आगसिया	श्री सत्येन्द्र नाथ मांझी	पांगुरा	43	21 मार्च 93 से
	श्री निखलेश कुमार मांझी	पारमडीह		26 मार्च 93 तक
6. तड़ाई	श्री निर्मल कुमार मांझी	चोकाहातु	74	14 मार्च 93 से
	श्री सृष्टिधर मांझी	"		3 अप्रैल 93 तक
7. चोकाहातु	श्री जगदीश चन्द्र मांझी	पांगुरा	83	13 मार्च 93 से
	श्री गौरांग मांझी	नौढ़ी		21 मार्च 93 तक
	श्री गोपाल चन्द्र मांझी			
8. हुरुण्डीह	श्री प्रेमचन्द मांझी	नौढ़ी	51	12 मार्च 93 से
	श्री जगदीश चन्द्र मांझी	पांगुरा		21 मार्च 93 तक
9. नवाडीह	श्री निखलेश कुमार मांझी	पारमडीह	70	12 मार्च 93 से
	श्री शरद चन्द्र अधिकारी	गोसाईडीह		21 मार्च 93 तक
10. तमाड़	श्री सुरेश चन्द्र मांझी	पांगुरा	54	12 मार्च 93 से
	श्री धनन्जय मांझी	गोसाईडीह		3 अप्रैल 93 तक
11. चिपड़ी	श्री हेमन्त कुमार मांझी	पांगुरा	30	12 मार्च 93 से
	श्री रतनलाल मांझी	"		21 मार्च 93 तक
12. रड़गांव	श्री जगदीश चन्द्र मांझी	"	31	27 मार्च 93 से
	श्री महावीर मांझी	"		3 अप्रैल 93 तक

स्थान	छात्र-अध्यापक	निवासी	छात्र सं.	शिक्षण शिविर की तिथि
13. बेड़ाडीह	श्री प्रदीप कुमार मांझी	”	15	24 मार्च 93 से 3 अप्रैल 93 तक
14. पंडाडीह	श्री गौरांग मांझी	चोकाहातु		30 मार्च 93 से
	श्री इन्द्रजीत मांझी	”	22	4 अप्रैल 93 तक
15. खरसवां	श्री प्रेमचांद मांझी	नौढ़ी	42	7 अप्रैल 93 से
	श्री गौरांग मांझी	”		14 अप्रैल 93 तक
16. हाराडीह	श्री गौरांग मांझी	चोकाहातु	17	7 अप्रैल 93 से 14 अप्रैल 93 तक
17. सारयाद	श्री गोपाल चन्द्र मांझी	तमाड़	24	14 मई 93 से 21 मार्च 93 से
18. गुटूहातु	श्री राजेन्द्र नाथ मांझी	देवलटांड़	27	14 मार्च 93 से 21 मार्च 93 तक
19. बुण्डु	ब्र. मनीष जी जैन ब्र. अनीता जी ब्र. मंजुला जी जैन	संघस्थ उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज	300	7 फरवरी 93 से 16 फरवरी 93 तक
20. पांगुरा	विशेष शिक्षा उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी महाराज के मुखारविन्द से शेष— ब्र. मनीष जी, ब्र. अनीता जी, ब्र. मंजुला जी		50	27 फरवरी 93 से 14 मार्च 93 तक

बिहार प्रान्त के रांची एवं सिंहभूम जिले के प्रथम
शिविर में शिक्षण प्राप्त छात्र-छात्राओं की संख्या 1102

दक्षिणी छोटा नागपुर (बिहार प्रान्त) के सराक जैन ग्रामों की संक्षिप्त रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
			जिला—सिंहभूम			
1. खरसवां	खरसवां	खरसवां	10	43	वत्सराज	गोवर्धन मांझी
2. आगसिया	देवलठांड़	ईचागढ़	30	150	आदिदेव	सूरजमल मांझी
3. रूगड़ी	"	"	35	225	धर्मदेव	राजेन्द्रनाथ मांझी
4. नवाडीह	"	"	104	603	आदिदेव	खेत्रमोहन मांझी
5. देवलटांड़	"	"	32	185	गौतम आ.	श्री मदन मोहन मांझी
6. चिपड़ी	चिपड़ी	"	22	101	आदिदेव	श्री भीष्मदेव मांझी
			233	1307		
			जिला—रांची			
1 तड़ाई	विजयगिरी	तमाड़	26	155	वत्सराज	भोलानाथ मांझी
2. रड़गांव	रड़गांव	"	9	49	धर्मदेव	भृगुराम मंडल
3. हुरुण्डीह	"	"	42	242	वत्सराज	कान्हाई मांझी
4. जजोडीह	परासी	"	3	20	आदिदेव	लखन मांझी
5. मारधान	"	"	1	8	"	
6. चिरुडीह	"	"	1	12	"	
7. परासी	"	"	3	21	"	धनेश्वर मांझी
8. तमाड़	तमाड़	"	86	387	"	भुवनेश्वर मांझी
9. बोधई	मानकीडीह	"	1	7	-	हाड़ीया मांझी
10. नौढ़ी	नौढ़ी	अंड़की	53	385	परासर	सुरेन्द्रनाथ मांझी
11. द्वारसिनी	द्वारसिनी	तमाड़	2	12	आदिदेव	रासबिहारी
12. माझीडीह	तमाड़	"	8	37	परासर	चिंता मांझी
13. खूंटी	खूंटी	खूंटी	14	98	आदिदेव	रमेश चन्द्र मांझी
14. माहिल	माहिल	मुरहू	38	259	"	उमाचरण मांझी
15. मेराल	"	"	26	170	"	लहरू मांझी
16. घाघरा	घाघरा	"	28	180		
17. बिरमकेल	"	"	21	145		
18. हांसा	मुरहू	मुरहू	46	239		राधारमण मांझी
19. दारला	सुन्दारी	"	10	61		मालास मांझी
20. कासमार	कासमार	तोरपा	18	135		
21. डोड़मा	डोड़मा	"	42	258		अभिमन्यु मांझी
22. करला	कासमार	"	7	180		

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
23. पांगुरा	वारेडीह	कुण्डु	56	336	आदिदेव	विशेश्वर मांझी
24. बेड़ाडीह	कांची	"	8	62	"	रमेशचन्द्र मांझी
25. गोसाईडीह	"	"	12	97	-	शशीधर अधिकारी
26. पारमडीह	पारमडीह	"	21	113	"	पीताम्बर मांझी
27. रेलाडीह	"	"	3	20	"	रविन्द्र मांझी
28. गुटूहातु	कांची	"	8	45	"	दुर्गाचरण मांझी
29. बुण्डु	बुण्डु	"	55	380	"	बलराम मांझी
30. अड़ेदारु	लान्दुपडीह	सोनाहातु	1	7	वत्सराज	वृन्दावन मांझी
31. चोकाहातु	चोकाहातु	"	65	350	शान्तिदेव	भीष्मदेव मांझी
32. बारुहातु	"	"	2z	129		घासीराम मांझी
33. पंडाडीह	पंडाडीह	"	18	86		गिरिजानद माझी
34. माझीडीह		"	22	129		घासीराम मांझी
35. सोनाहातु	सोनाहातु	"	7	50		नलिनचन्द्र माझी
36. सारयाद	"	"	15	62	अच्युता	नन्द मांझी
37. हाराडीह	वोरडीह	तमाड़	15	48		पितु माझी
38. पोकला	अनिगड़ा	खूंटी	4	23		बसन्त कुमार मांझी
39. हेसेल	माहिल	मुरहू	2	17		अखिल कु. मांझी
40. गजगांव	मुरहू	"	8	81		
41. सुन्दारी	खूंटी	तोरपा	7	67	आदिदेव	घासीराम मांझी
42. चालमबड़टोला		मुरहू	8	35		
43. कुन्दीबड़टोला		"	9	35		
44. चामराटोला		"	3	15		
45. दामाडीह	सोनाहातु	सोनाहातु	4	28		
46. मुचीडीह	चिरुडीह	तमाड़	1	8	पेलास	गौर मोहन मांझी
47. पिताईडीह	"	"	3	11	परासर	शिष्टीधर मांझी
			862	5291		

जिला—दुमका (संथाल परगना) बिहार प्रान्त
संक्षिप्त रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. वासुकुली	वासुकुली	टोंगरा	6	30	आदिदेव	श्री शिशिर मंडल
2. विलकांदी	विलकांदी	"	14	70	"	श्री नारायण मंडल
3. जमताड़ा	जमताड़ा	रानीश्वर	7	30	"	श्री जितेन्द्र मंडल
4. शादीपुर	शादीपुर	"	3	12	"	श्री तिनकोड़ी मंडल
5. हाइजुड़ीया	कुमिधवा	"	2	10	"	श्री साधन मंडल
6. शिलाजोड़ी	जमताड़ा	"	1	1	"	मो. संध्यारानी
7. वृन्दावनी	वृन्दावनी	टांगरा	2	31	"	श्री प्रभाकर मंडल
8. कुण्डहीत	कुण्डहीत	कुण्डहीत	24	250	"	डॉ. नारायण मंडल
9. पालाजोड़ी	पालाजोड़ी	"	2	12	"	श्री देवाशिष मंडल
10. डुमरा	"	"	30	300	"	श्री अनिल कुमार सराक
11. मांगाहेड़ी	"	"	2	25	"	श्री सुधीर कुमार चौधरी
12. रांगालिया	रांगालिया	रानीश्वर	15	200	"	श्री गौरीपदो मंडल
13. चन्दुरडीह	पालाजोड़ी	कुण्डहीत	7	80	"	श्री महादेव चौधरी
14. गड़जोड़ी	"	"	40	350	"	श्री जयमंडल चौधरी
15. महीसमुड़ा	महीसमुड़ा	नाला	8	65	"	श्री देवदत्त मडल
16. पाथरघाटा	कालीपहाड़ी	"	30	250	"	श्री पूर्णचन्द्र मंडल
17. सालकुण्डा	गेड़िया	विन्दापाथर	27	150	"	श्री प्रफुल्ल सराक
18. आमलाजोड़ी	सीतामढ़ी	नाला	9	70	"	श्री गोपाल माजी
19. जोड़कुड़ी	मोहनबाग	विन्दापाथर	2	12	"	श्री महादेव माजी
20. खुड़ियाम	नगरी	नाला	6	25	"	श्री चितरंजन माजी
21. वासुडीह	"	"	16	150	"	डॉ. विनेश्वर माजी
22. घासनिया	घासनिया	कुण्डहीत	10	60	"	श्री आनंद कुमार सिंह
23. शालदही	तेशजुरिया	नाला	10	150	"	श्री पूर्णेन्द्र माजी
24. मूली	देवजोड़	"	27	275	"	श्री उत्तम कुमार माजी
25. हिरण्यपुर	हिरण्यपुर	"				
26. विन्दापाथर	विन्दापाथर	विन्दापाथर	35	350	"	श्री कमलाकान्त माजी
27. कड़ैया	कड़ैया	नाला	32	350	"	श्री ब्रजेन्द्र कुमार राय
28. जामताड़ा	जामताड़ा	जामताड़ा	5	30	"	श्री सुशील कुमार माजी
29. दुमका	दुमका	दुमका	2	20	"	श्री चारूदत्त मंडल
30. कानगुई	मिहिजाम	मिहिजाम	10	80		
			384	3338		

बिहार प्रान्त

जिला—विरभूम की संक्षिप्त रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. भागाबांध	बोलिहारपुर	मुम्मदबाजार	8	150	ऋषभदेव	नरहरि मंडल
2. बोलिहारपुर	"	"	4	100	आदिदेव	निमाई मंडल
3. खड़गना	खड़गना	रामपुरहाट	12	65	"	अमा ·हृद
			24	315		

जिला—धनबाद

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. बेलुन्जा	वाटविनोर	घास	20	100	आदिदेव	श्री संतोष कुमार सराक
2. बेलुट	"	"	80	500	"	श्री दुर्गादास सराक
3. कुमारडीह	आटडीह	महोदा	50	250	"	श्री महादेव सराक
			150	850		

जिला—बोकारो

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. मोहाल	मोहाल	चन्दनक्यारी	60	400	आदिदेव	श्री निमाई माजी
2. देवग्राम	"	"	14	90	"	श्री नारायण माजी
3. गंधर्वडीह	"	"	15	80	"	श्री भरत माजी
4. उपरबंधी	उपरबंध	"	14	90	"	श्री शंकर माजी
5. कमीटांड़	अमलाबाद	"	15	90	"	श्री रामपदो माजी
6. कालापाथर	"	"	18	90	"	श्री दोलगोविन्द माजी
7. पर्वतपुर	तालगाड़िया	"	20	150	"	श्री शक्तिपदो माजी
8. भोजुडीह	भोजुडीह	"	8	70	"	श्री कान्हाई माजी
9. आसनसोल	मोहाल	"	2	20	"	श्री ब्रह्मानन्द सराक जैन
10. लखीपुर	आमडीहा	"	6	65	"	श्री नारायण माजी
			171	1145		

बंगाल प्रान्त के सराक ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

जिला—बोकारो

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. दोमहानी	दोमहानी	बारावोनी	35	320	आदिदेव	श्री निमाई चन्द्र माजी
2. ईटापाड़ा	रघुनाथचक्र	"	35	350	"	श्री बंशिधर माजी
3. पुचड़ा	केलेजोड़ा	"	60	700	"	श्री अरुण कुमार
4. बोलकुण्डा	सामडीह	सालनपुर	4	68	ऋषभदेव	श्री महादेव माजी
5. छोटकरो	पानुड़ीया	बाराबोनी	30	250	"	श्री नारायण माजी
6. लालगंज	रघुनाथचक्र	"	12	140	"	श्री भवनी माजी
7. लोयकापुर	चुरुलिया	जामुड़िया	1	20	"	" सामापदो माजी
8. कुलटी	कुलटी	कुलटी	3	35	"	"
9. आछड़ा	आछड़ा	सालनपुर	40	250	आदिदेव	"
10. कांकोड़कुन्दा	"	"	8	60	"	श्री धिरेन माजी
11. हरिसाडीह	रूपनारायणपुर	"	15	130	"	श्री सुधीर कुमार माजी
12. रूपनारायणपुर		"	40	360	"	श्री गोपालचन्द्र माजी
13. देन्दुआ	सालनपुर	"	26	152	"	श्री शक्तिपदो माजी
14. सालनपुर	"	"	30	325	"	श्री हराधन माजी
15. खुदीका	"	"	3	34	"	श्री हरिपदो माजी
16. सोबोनपुर	"	कुलटी	2	16	"	श्री बादलचन्द्र माजी
17. खोड़ाबर	जामग्राम	बाराबोनी	2	16	"	श्री बलराम माजी
18. लालबाजार	लालबाजार	कुलटी	32	225	"	श्री चितरंजन माजी
19. काख्या	काख्या	काख्या	6	50	"	श्री सुबोध माजी
20. जामुड़िया	जामुड़िया	जामुड़िया	3	35	"	श्री बंशिधर मंडल
21. सत्ता	गौरांगडीह	बाराबोनी	4	32	"	श्री गुहीराम माजी
22. मदनतोड़	चरगपुर	जामुड़िया	34	269	"	श्री जगबन्धु माजी
23. रूनाकुड़ा	रोसना	बाराबोनी	2	22	"	श्री गोपाल माजी
24. दासक्यारी	गौरांगडीह	"	47	360	"	श्री बैद्यनाथ माजी
25. रोसना	रोसना	"	15	125	"	श्री नरेश चन्द्र माजी
26. पांखुड़िया	पांखुड़िया	"	1	6	"	श्री महादेव माजी
27. शिवपुर	जामुड़िया	"	1	6	"	श्री कान्हाई माजी
			491	11345		

जिला—बांकुड़ा (पश्चिम बंगाल) के सराक ग्राम की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. गंगाजलघाटी	गंगाजलघाटी	गंगाजलघाटी	30	235	आदिदेव	श्री अतुल चन्द्र माजी
2. राजामेला	विसिन्दा	"	103	1008	"	श्री शिवप्रसाद माजी
3. लकखनपुर	बारकुना	सालतोड़ा	50	400	"	श्री कान्हाई लाल माजी
4. खागड़ा	सामपुर	"	45	325	"	श्री फटीक चन्द माजी
5. वारकोना	वारकोना	"	95	550	"	श्री गोनोदेव माजी
6. बोजापाथर	कुलटुका	"	15	75	"	श्री अश्वीनी कुमार माजी
7. छोलाबाईद	केसियाड़ा	"	2	15	"	श्री शिवपदो माजी
8. मौलिकडीह	जी. घाटी	जी. घाटी	20	150	"	श्री जगन्नाथ माजी
9. बालीखुन	विसिन्डा	"	20	140	"	श्री भूतनाथ माजी
10. चुड़री	लक्ष्मणपुर	"	16	110	"	श्री दीजो माजी
11. साहिबडागा	बारकोना	सालतोड़ा	20	200	"	श्री कान्हाई लाल माजी
12. जीड़रा	जोड़हिड़ा	छातना	20	135	"	श्री जयराम माजी
13. मोक्ताबांध	केशियाड़ा	जी. घाटी	65	380	"	श्री त्रिलोचन माजी
14. हांड़ीभांगा	उखड़ाडीह	"	40	280	"	श्री शान्तिनाथ माजी
15. मीलाहिड़	कुलटुका	सालतोड़ा	8	75	"	श्री अश्वीनी कुमार माजी
16. लक्ष्मणपुर	खास	जी. घाटी	41	275	"	श्री गुरुपदो माजी
17. केन्द्रबनी	जी. घाटी	"	24	175	"	श्री सन्तोष माजी
18. भुईफोड़	"	"	15	165	"	श्री शष्टिपदो माजी
19. लेदापलास	सालतोड़ा	सालतोड़ा	105	705	"	श्री सत्यरंजन माजी
20. सीदाबाड़ी	धोबन	"	45	410	"	श्री हाराधन माजी
21. बेड़ियाचोल	सामपुर	"	25	200	"	श्री कालिकिंकर माजी
22. कान्साई	कान्साई	"	60	1100	"	श्री साधुचरण माजी
23. पाटदोहा	सामपुर	"	54	400	"	श्री परेश माजी
24. विनोदडीह	"	"	40	145	"	श्री सुधीर माजी
25. दिगतोड़	सालतोड़ा	"	9	150	"	श्री शान्तिराम माजी
26. ढेकिया	"	"	8	80	"	श्री शक्तिपदो माजी
27. बीसजोड़ा	"	"	10	85	ऋषभदेव	श्री विशेश्वर माजी
28. सालतोड़ा	"	"	3	16	आदिदेव	श्री मुर्लिधर माजी
29. पाबड़ा	पाबड़ा	"	74	400	"	श्री गंगाधर माजी
30. दुपुड़िया	पायरासोल	मेजीया	62	450	"	श्री सुवल माजी
31. पायरासोल	"	"	9	100	"	श्री अश्वीनी माजी
			1133	8934		

जिला—पुरुलिया (पश्चिम बंगाल प्रान्त) के सराक ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. गोसाईडांगा	आड़रा	रघुनाथपुर	21	150	आदिदेव	श्री उत्तम कुमार माजी
2. खाजरा	सेनेड़ा	"	70	575	"	श्री शिवचरण माजी
3. विलतोड़ा	गद्धीवेड़ो	"	4	25	अनंतदेव	श्री रामेश्वर माजी
4. घनियारडांगा	"	"	35	300	"	श्री बरुणचन्द्र माजी
5. गद्धीवेड़ो	"	"	45	500	आदिदेव	श्री सुभाष चन्द्र माजी
6. उपरखाजरा	उपरसांकड़ा	"	17	180	"	श्री बासुदेव माजी
7. सेनेड़ा	सेनेड़ा	"	100	700	"	श्री विश्वनाथ मंडल
8 बनबहिरा	"	"	21	200	"	श्री भवदेव मंडल
9. बागीचा	गद्धिवेड़ो	"	54	430	धर्मदेव	श्री शंकर माजी
10. कालापाथर	"	"	11	58	"	श्री सुदर्शन माजी
11. वंशग्राम	"	"	3	20	आदिदेव	श्री चण्डीरमण माजी
12 आठमाजीडीह	रामकनाली	सातुडी	27	150	"	श्री हरिदास माजी
13. पातरबांध	मुराडी	"	12	120	"	श्री हीरालाल् माजी
14. लछिया	"	रघुनाथपुर	29	200	"	श्री दशरथ माजी
15. वृंदावनपुर	रामकनाली	सातुड़ी	9	60	"	श्री दिलीप कुमार मंडल
16. गोकाग	"	नेतुड़िया	30	300	धर्मदेव	श्री अनिल कुमार मंडल
17. जनार्दनडीह	जर्नादनडीह	"	45	400	"	श्री खांडु मंडल
18. लक्ष्मणपुर	"	रघुनाथपुर	16	140	आदिदेव	श्री चित्तरंजन माजी
19 सिगटांड़	सेनेड़ा	"	26	200	धर्मदेव	श्री जयदेव माजी
20. केलाही	"	"	18	200	आदिदेव	श्री युधिष्ठिर माजी
21. सिमलोन	"	"	6	14	धर्मदेव	श्री जीवन मंडल
22. नुतनडीह	उपरसांकड़ा	"	115	700	आदिदेव	श्री देवेन्द्र नाथ माजी
23. दुरमुठ	नीलडीह	"	63	430	"	श्री सनातन माजी
24. घुटीतोड़ा	"	"	35	155	"	श्री शरद्चन्द्र माजी
25. नाड़ागोड़ा	नाड़ागोड़ा	"	15	80	"	श्री निर्मल कुमार माजी
26. गोविन्दपुर	रख्यतपुर	"	43	350	"	श्री उत्पल कुमार माजी
27. नन्दुड़ा	रघुनाथपुर	"	60	500	"	श्री बलराम माजी
28. एकुन्जा	"	"	51	400	"	श्री जगबन्धु माजी
29. बाथान	नीलडीह	रघुनाथपुर	24	170	"	श्री अजित कुमार मंडल
30. पांचपहाड़ी	गद्धीबेड़ो	"	50	500	"	श्री निमाईचन्द्र मंडल
31. मेटयालशहर	चौरपहाड़ी	"	22	250	"	श्री अतुल चन्द्र माजी

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
32. इन्द्रवील	गौरांगडीह	काशीपुर	5	70	आदिदेव	श्री ऋषिकेश मंडल
33. बोदमा	मालंचा	"	40	350	"	श्री हीरालाल मंडल
34. लालपुर	"	"	20	150	"	श्री परेश माजी
35. महुलकांका	गौरांगडीह	"	14	70	"	श्री अनुपम माजी
36. राधामाधवपुर	मोनीहारा	"	38	300	"	श्री शक्तिपदो माजी
37. मुड़लू	राजड़ा	"	32	150	"	श्री विनोदबिहारी मंडल
38. राजड़ा	"	"	24	250	"	श्री उत्तम माजी
39. तालाजोड़ी	गौरांगडीह	"	35	200	"	श्री प्रफुल्ल मंडल
40. गौरांगडीह	"	"	17	100	"	श्री शंकर मंडल
41. बाबीरडीह	"	"	4	25	सांडिल्य	श्री गुरुचरण माजी
42 बेनियासोल	आद्रा	रघुनाथपुर	11	70	आदिदेव	श्री गोविन्द माजी
43. लायेकडांगा	सेनेड़ा	"	25	200	"	श्री गणेश माजी
44. झापड़ा	झापड़ा	पाड़ा	90	700	अनंतदेव	श्री गिरीधारी सराक
45. लयोड़ा	"	"	8	40	"	श्री मनसराम माजी
46. आसनबनी	फुसराबाईद	"	18	150	आदिदेव	श्री सुशांत माजी
47. फुसराबाईद	"	"	25	200	"	श्री निरेन्द्र कु. माजी
48. बागतबाड़ी	जोड़बेड़ीया	"	36	260	"	श्री उत्तम माजी
49. महुला	चौ. भागाबांध	"	25	180	"	श्री बलराम माजी
50. भागाबांध	"	"	90	1000	"	श्री अर्जुन कु. माजी
51. पोलमा	"	"	28	300	"	श्री सुभाष माजी
52. सांकड़ा	सांकड़ा	"	62	450	'	श्री विमल कु. वैष्णव
53. संवार	अनाड़ा	"	49	450	"	श्री अनिल कु. माजी
54. चौताला	चौ.भागाबांध	"	9	62	"	श्री मधुसूदन मंडल
55. फुलिरडीह	"	"	37	175	धर्मदेव	श्री सुबलचन्द्र माजी
56. बनबेड़िया	"	"	35	250	अनंतदेव	श्री सुधीर माजी
57. कालीबेड़िया	"	रघुनाथपुर	90	890	"	श्री नित्यानन्द माजी
58. मनोग्राम	"	"	35	200	"	श्री भगीरथ माजी
59. सुंदराबांध	चौ.भागाबांध	"	40	400	अनंतदेव	श्री ब्रह्मानन्द माजी
60. बड़दा	नावुग्राम	"	45	400	"	श्री विष्णुदेव मंडल
61. जबड़रा	झापड़ा	पाड़ा	100	900	"	श्री हरिचरण माजी
62. केलाडीडीह	भावंराडीह	"	85	400	"	श्री हाराधन माजी
63. ठाकुरडीह	कालुहार	"	40	300	"	श्री अवनी कुमार माजी
64. धाधकीडीह	उदयपुर	"	100	800	"	श्री निमाईचन्द्र माजी
65. उदयपुर	"	"	22	220	"	श्री भोलानाथ माजी
66. बायानबाड़ी	नदीया	"	38	234	"	श्री बलराम माजी

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
67. सुरुलिया	कालुहार	"	15	80	अनन्तदेव	श्री मदनमोहन माजी
68. भंडारकुली	चितला	"	12	65	आदिदेव	श्री राम माजी
69. चुड़मी	आमदीहा	"	60	500	"	श्री सुनील कुमार माजी
70. कांटाबनी	तेतुलटांड़	"	13	100	"	श्री भूपाल माजी
71. बोहड़ा	बोहड़ा	"	80	700	"	श्री विशेश्वर माजी
72. पुतलिया	"	"	15	112	"	श्री मोहरी माजी
73. तद्ग्राम	"	"	70	500	"	श्री भैरवचन्द्र माजी
74. आमचातोर	"	"	9	100	"	श्री शिवराम माजी
75. खामारमहुल	इछोर	संथालडीह	31	150	"	श्री मदनमोहन माजी
76. खामारगोड़ा	"	"	150	700	"	श्री श्यामापदो माजी
77. उपरदीह	"	"	50	400	"	श्री कालीपदो माजी
78. इछोर	"	"	60	500	"	श्री अनादि माजी
79. बालीचासा	दुबड़ा	"	3	15	"	श्री जलधर माजी
80. परानपुर	रुकनी	रघुनाथपुर	18	92	"	श्री काजलचन्द्र माजी
81. दोड़दा	बहड़ा	पाड़ा	8	72	"	श्री गुरुदयाल मंडल
82. पांचमोहली	शि[illegible]दा	काशीपुर	3	38	"	श्री पतितपावन माजी
83. पुरानाबेड़ो	गद्धीबेड़ो	रघुनाथपुर	12	85	"	श्री अमूल्य माजी
84. कांटालबेड़िया		"	8	52	"	श्री दिगम्बर माजी
85. सड़पधार	रामकनाली	नितुड़िया	5	32	"	श्री फकीरचन्द माजी
86. कांचक्यारी	सांकड़ा	रघुनाथपुर	10	50	"	श्री दशरथ माजी
87. केन्दुलियारडांगा	नीलडीह	"	5	22	"	श्री फकीरचन्द्र माजी
88. हिजोली	थारबेलिया	"	2	20	"	"
			3088	23628		

पश्चिम बंगाल
प्रान्त—जिला—मेदनीपुर (सर्वेक्षण अधूरा है)

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. दीपा	बेनाडीया	केशियाडी	100	600	सांडिल	श्री वृन्दावन पात्र
2. बेनाडीया	बेनाडीया	"	-	-	-	श्री उत्पल कुईला
3. कुलवनी	बेनाडीया	"	150	1500	गौतम	श्री प्रभात जाना
4. डाडरा	उत्तरडयूरकूला	"	110	1000	"	श्री कान्हाई लाल घोष
5. भासराघाट	खास	"	45	300	"	श्री महीन चन्द्र माजी
6. नरसिंहपुर	पुखरीया	"	38	240	काश्यप	श्री सृष्टिधर घोष
7. मूराकोटपुरा	लच्छीपुर	"	50	275	"	श्री देवेन्द्र साहू
8. विष्णुपुर	विष्णपुर	"	50	250	गौतम	श्री बिहारी लाल जातन
9. खड़गपुर	खड़गपुर	खड़गपुर	60	540	खदुआ	श्री मोती लाल जैन
10. बेलदा	बेलदा	बेलदा	25	250	"	श्री पीताम्बर लाल जैन
11. जयपुरा	दांतुन	दांतुन	50	200	गौतम	श्री हीरेन्द्र नाथ माजी
12. बड़ाबाघड़ा	दांतुन	"	300	2000	"	श्री सत्यरजन पात्र
13. कृष्णानगर	-	-	-	-	-	-
14. पानसोड़ा	हलबैलुन	केसियाड़ा	6	40	वक्षराज	श्री सीमान्त कोपड़ी
15. कुंजबाघड़ा	"	"	35	200	कायस्त	श्री अनन्त कोपड़ी
16. बाईचाबाघड़ा	"	"	15	60	"	श्री गोवर्धन गोप
17. एकतापुर	दांतुन	दांतुन	12	60	कुम्भ	श्री सुधीर पड़ियारी
18. बारासुती	"	"	35	200	नागेश्वर	श्री चित्र पात्र
19. मानपाड़ा	"	"	-	-	-	श्री भास्कर पात्र
20. घोदाई	हलबैलुन	"	40	600	कायस्त	श्री मजोहरिदास
21. कुंवरपुर	"	"	18	70	कृष्ण	श्री हरिघोदाई
22. महीषपुर	दांतुन	"	18	82	कायस्त	श्री रामचन्द्र कुईला
23. बलिया	बलिया	"	12	55	गौतम	श्री राखाल घोष
24. कोटपादा	दांतुन	"	12	45	सांडिल	श्री समीर घोष
25. चातुरपाड़ा	"	"	25	130	कृष्ण	श्री राम पाईड़ा
26. जामुआ	"	"	18	90	"	श्री निवासी दास
27. पानीतनीया	"	"	20	120	गौतम	श्री भगवत सागर
28. आंगुवो	"	"	40	200	"	श्री शिशिर दास
29. बोराड	"	"	30	150	सांडिल्य	श्री विपिन घोष
30. कानपुर	दांतुन	दांतुन	9	50	कायस्त	श्री मल्लिक मदन
31. देवली	"	"	25	300	सांडिल्य	श्री बेनुपात्र
32. कालियापाड़ा	"	"	35	190	ब्रह्मऋषि	श्री अशोक जाना

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
33. जामडीह	"	"	22	125	परासर	श्री गोष्ट माकुड़
34. बेलाड़	"	"	32	200	वक्षराज	श्री तारापदो दास
35. बनांचुल	"	"	20	140	परासर	श्री प्रफुल्ल रामा
36. सागयार	"	"	15	90	कृष्ण	श्री मुरली माकुर
37. कुश्चाड़ी	"	"	25	150	गौतम	श्री गुप्ता बाबू
38. हांगला	"	".	30.	200	परासर	श्री शंकर नारायण पाल
39. राजबाड़ी	हलबेलुन	"	25	120	वक्षराज	श्री हीना किंकर पाल
40. दहरपुर	दांतुन	"	22	110	गौतम	श्री बंकीम माइती
41. ताइगढ़	गिररवीरी	नारायणगढ़	11	60	कायस्त	श्री सुधीर घोष
42. गिररवीरी	"	"	18	100	गौतम	श्री शिखरचन्द पात्र
43. भद्रगाड़ी	"	"	15	70	"	श्री मोहन पाल
44. धरमपुर	विष्णुपुर	"	25	150	परासर	श्री कालीघोष
45. पहरासुल	चन्द्रकोण	"	18	90	"	श्री केदारघोष
			1653	12382		

उड़ीसा प्रान्त की अधूरा सर्वेक्षण रिपोर्ट

कटक जिला (उड़ीसा प्रांत) के निकटवर्ती ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. कालापाथर	खास	बेघेश्वर	40	240	नागेश्वर	श्री परमानन्द साहु
2. घलापाचर	कालापाथर	"	60	360	"	श्री गोविन्द राउत
3. गेड़ियापल्ली	खास	"	25	150	"	श्री एंकादसी दास
4. आरिकमा	खास	"	15	90	जिनेश	श्री लक्ष्मण साहु
5. पाराडीह	खास	बेगुनिया	25	170	नागेश्वर	श्री दिजो बेहरा
6. तुलसीपुर	खास	बंकी	50	330	"	श्री नरसिंह राउत
7. बोघेश्वर	"		15	105	"	श्री जम्बेश्वर साहु
8. गोपीनाथपुर	बलभद्रपुर	बड़म्बा	100	650	काश्यप	श्री हरिहर बेहरा
9. बड़म्बा-गोपीनाथपुर	सिंहनायपीठ	"	20	130	नागेश्वर	श्री बसंतकुमार दास
10. रगड़ीपाड़ा	"	"	12	72	नाग	श्री गोकुल चन्द साहु
11. बनमालीपुर	खास	खास	12	80	"	श्री देवराज साहु
12. कानपुर	खास	खास	16	100	नागेश्वर	श्री चैतन्य साहु
13. हरिपुर	कानपुर	कानपुर	6	36	काश्यप	श्री श्रीधर साहु
14. अड़ाइगुण्डी-नरसिंहपुर	खास	खास	40	250	नागेश्वर	श्री गंगाधर बेहरा
15. सागर	"	कानपुर	20	150	"	श्री उधब पात्र
16. गम्बीक	"	"			नाग	श्री प्रफुल्ल वर्धन
17. नयापटना	"	तिगरिया	16	100	नागस्य	श्री कुलपनी पुष्टि
18. कौंकड़ाजोड़ी	"	"	60	360	नागेश्वर	श्री शंकर बेहरा
19. विन्दानिमा	"	"	20	125	नाग	श्री वीर किशोर साहु
20. रघुनाथपुर	परमहंस (बिरीवारी)	कटक	14	100	नागस्य	श्री पतिवास नायक
21. नयापटना	परमहंस	"	3	20	"	श्री लोचन साहु
22. हरिपुर	केशरनगर	कटक	45	280	नाग	श्री कृष्ण साहु
23. बम्बुरी	बिरिबाटी	"	2	15	नागेश्वर	श्री धनेन्द्र साहु
24. समतंगा	टोटापाड़ा	केशरनगर	10	60	काश्यप	श्री उधब साहु
25. जयपुर	खास	तिरतल	40	250	विश्वनाथ	श्री फकीर बेहरा
26. किल्लीपाड़ा	कल्लिमुड़	"	30	200	नागस्य	श्री कार्तिक साहु
27. मनिगंज	टेण्डाकुड़ा	किसननगर	175	1250	जिगनेस	श्री धुलिचरण साहु
28. बेनीरामपुर	"	"	12	75	"	श्री कृष्णचन्द्र साहु

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
29. महावतपुर	"	"	12	75	"	श्री नटवर दास
30. दानपुर	केशरपुर	कटक	5	35	"	श्री शंकर बेहरा
31. साहजपुर	नलीपुर मौ.	"	12	80	काश्यप	श्री भिखारी साहु
32. आम्बोश्वरी	चारिलांगड़	बालिचंद्रपुर			नाग	श्री कार्तिक साहु
33. ललितगिरी	खास	महांगा	2	12	जिनेश	श्री खगेश्वर पुष्टि
34. लाड़का	जारका	जारका				
35. कुण्टपटना	खास	जाजपुर	55	350	नागस्य	श्री बनमाली साहु
36. नरसिंहपुर	नहंगापटना	धर्मशाला	30	210	काश्यप	श्री लखीन्द्र नायक
37. नहंगापटना	खास	"	14	90	नागेश्वर	श्री रंकनिधि बेहरा
38. जलेश्वरपुर	कुण्डपदना	"	20	120	नाग	श्री गोविन्द साहु
39. चांदमोहिनी	"	"	6	40	नागस्य	श्री भिखारी साहु
40. माड़दा	उदयपुर	विन्दापुर	40	250	"	श्री जलधर मंडल
41. गोबिन्दबाटी	बाईसरा	"	25	150	"	श्री दैतारि साहु
42. शंखचिला	खास	कोरे	30	180	नागेश्वर	श्री बाईधर दास
43. खमन	शंखचिला	"	7	45	"	श्री श्रीधर
44. केडमर	खास	खास	40	240	काश्यप	श्री विकल बेहरा
			1351	8670		

नोयागढ़ जिले (उड़ीसा प्रांत) के निकटवर्ती सराक ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. आड़चेर	डिमिशर	गुड़िपोड़ा	20	100	नागेश्वर	श्री वांछानिधि साहु
2. डिमिशर	खास	"	200	1000	जिग्नेश	श्री राजकिशोर साहु
3. गुड़िपोड़ा	"	"	5	25	नाग	श्री हाजारी साहु
4. मजियाखण्ड	गुड़िपोड़ा	"	25	150	नागस्य	श्री देवराज साहु
5. गोपीनाथपुर	दर्पनारायणपुर	"	10	55	नाग	श्री मुचिराम बेहरा
6. बाबुजीनगर	"	"	15	80	नागस्य	श्री रामचन्द्र साहु
7. दर्पनारायणपुर	खास	"	15	85	काश्यप	श्री गुण्डीची नायक
8. कुंयपटना	दर्पनारायणपुर	"	10	60	नाग	श्री रामचन्द्र साहु
9. वीरुड़ा	खास	नोयागड़	25	140	नागेश्वर	श्री वंशीधर साहु
10. पाण्डेरी पटना	वीरुड़ा	"	20	100	नाग	श्री सुदर्शन साहु
11. मर्दराज	"	"	25	130	नागस्य	श्री मदनमोहन साहु
12. बालुगांव	खास	"	20	135	नाग	श्री आनंद साहु
13. जिगिनपाड़ा	नोयागांव	"	10	60	"	श्री भमरदास
14. नोयागड़	खास	"	6	30	नागस्य	श्री गोवर्धन बेहरा
15. कोमण्ड	कोमण्ड	अड़ंगा	14	75	काश्यप	श्री सोमनाथ साहु
16. कुराल	उड़ंगा	अड़ंगा	15	80	नाग	श्री सुदर्शन साहु
17. उदयपुर	कोमण्ड		15	75		श्री देवराज साहु
18. जामुशाही पटना	वारवाटि	फतेगड़	110	580	नागस्य	श्री पुरुषोत्तम साहु
19. कंइफुलिया	खास	"	50	250	नागेश्वर	श्री दासरथी दास
20. कादीया	"	"	10	60		श्री पवित्र मोहन दास
21. बोधि पटना	नरेन्द्रपुर	"	60	340		श्री बनमाली साहु
22. वास पटना	विनोदपाड़ा	"	20	100	नाग	श्री अनादिचरण साहु
23. रासड़	डिंगर	"	30	160	काश्यप	श्री अरिहंत मोल्ला
24. डिंगर	डिंगर	"	10	60	नाग	श्री मागुनिसेनापति
25. सोमपुर	सोमपुर	"	110	550	नागेश्वर	श्री कालुचरण दास
			850	5670		

गंजाम जिले (उड़ीसा प्रांत) के निकटवर्ती सराक ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. जगन्नाथप्रसाद	खास	जगन्नाथ	10	50	कछुआ	श्री दुतिया साहु
2. आम्बपोया	"	प्रसाद	11	55	नागस्य	श्री रामचन्द्र साहु
3. सोरड़	"	"	27	135		श्री विश्वनाथ साहु
4. झाड़भूमि	"	"	16	90	नागेश्वर	श्री धरमनाथ साहु
5. रतनपुर	नाटंगा	"	10	65	"	श्री वांछानिधि साहु
6. उड़ुरा	खास	"	30	160	नाग	श्री अर्जुन साहु
7. भेटनई	"	"	16	80	"	श्री कविराज साहु
8. रंगनीपटना	बेलकुण्ठा	"	32	170	नागस्य	श्री देवराज साहु
9. निमापदर	खास	"	16	90	काश्यप	श्री सीतारम साहु
10. पंचरुपटना	तालसागर	बुगड़ा	16	96		श्री संयासी साहु
11. गोबरा	खास	भंजनगर	35	175	काश्यप	श्री उदयनाथ साहु
12. गांगपुर	"	"	32	170	नाग	श्री मोहन साहु
13. धामुण्डा	"	"	50	280	"	श्री महादेव साहु
14. कुलार	"	"	110	600	"	श्री लिंग साहु
15. गोलिया	"	बुगड़ा	50	260	नागेश्वर	श्री बलराम साहु
16. जिलंडि	"	भंजनगर	47	255	जिगनेश	श्री परशुराम साहु
17. बालिपदर	"	खास	25	275	काश्यप	श्री श्याम साहु
18. कोदड़ा	"	"	12	70	नाग	श्री लालुचरण बेहरा
19. पलसरा	"	"	12	60	काश्यप	श्री पदमचरण साहु
20. रूमागढ़	"	कोदला	5	25	नागेश्वर	श्री राजेन्द्र साहु
21. केंदुबाड़ी	"	"	4	20		श्री भाग्यरथी साहु
22. कनसाही	"	"	5	25	नागेश्वर	श्री कालु साहु
			572	3206		

पुरी जिले (उड़ीसा प्रांत) के निकटवर्ती सराक ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. मोजबेग बड़	वलंगा	वलंगा	110	600		श्री भ्रमर बेहरा
2. मोजवेगसाना पटना	"	"	60	320		श्री ईश्वर पुष्टि
3. तेरहड़	नयागोपालपुर	"	25	130		श्री गिरधारी साहु
4. गोपीनाथपुर	"	"	20	100		श्री वंशीधर साहु
5. वांगुरसापटना	दधिनरासड़	"	45	250		श्री घनश्याम पुष्टि
6. खिरखियापटना	"	"	15	75		श्री गोकुलानन्द बेहरा
7. बालिया	हरिपुर	"	4	25	नाग	श्री पहली नायक
8. आदलाबाद	मुकुंददासपुर	पिपली	25	125	"	"
9. हरिपुर	खास	हरिपुर	10	50	नागेश्वर	श्री आनंद सेनापति
10. बारमन	लक्खी नारायपुर	पिपली	20	100		श्री दक्खी श्याम सेनापति
11. बालकटि	खास	बालिपटना	25	125	काश्यप	श्री पंचुपुष्टि
12. रथीजमा	बालकटि	"			नाग	श्री चक्रधर साहु
13. हीरापुर	"	"	4	20		श्री लखीन्द्र नायक
14. बनमालीपुर	खास	"	40	200	काश्यप	श्री कृष्ण सेनापति
15. कुंदपटना	नयापलाम	"	40	200		श्री राधेश्याम नायक
16. बेदपुर	मेरीपुर	"	25	225		श्री नारायण पुष्टि
17. नागपुर	खास	"	35	200		श्री रामचन्द्र बेहरा
18. निमापाड़ा	"	"	15	80		श्री उच्छन साहु
19. जगन्नाथपुरी	"	"	50	250		"
20. साक्षीगोपाल	"	"	15	75		श्री योगेन्द्र दास
21. मोलिकपटना	सारंगजुड़ी	"	10	50		श्री ठोकदास
22. नयाहाट	जोपन	"	7	35	काश्यप	श्री गोपाल दास
23. नाहमंग	सामड़ापाड़ा	"	40	240		श्री गौरांग साहु
24. खंडितपटना	बलंगा	"	10	50	नागेश्वर	श्री उच्छव सेनापति
25. सहारापाड़ा	खास	बलंगा	6	30	नाग	श्री कुबेर साहु
26. शम्भारती	बलंगा	"	15	75	"	श्री कृपासिन्धदास
27. तेइसपुर	खास	"	15	80	"	श्री गंगाधर साहु
28. रायगढ़पुर	तेइसपुर	"	3	15	नागस्य	श्री मुकुन्द दास
29. रतनपुर	देलांग	"	3	20	नाग	श्री लिंगराज साहु
			692	3745		

जिला टेंकानाक के निकटवर्ती ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. सराक पटना	खास	टेंकानाक	50	300	नागस्य	श्री भीमसेन साहु
2. घलपुर	चंद्रसेखप्रसाद"		10	75	नागेश्वर	श्री फागुनी साहु

जिला जाजपुर के निकटवर्ती ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. कांकुड़कुन्द	सालपाड़ा	जाजपुर	60	360	नागेश्वर	श्री विसम्बर मंडल

जिला केन्द्रपाड़ा के निकटवर्ती ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. चान्दोड़	चान्दोउ	डेराबिशि	10	60	नागेश्वर	श्री बसंत कुमार साहु
2. राउरकेला	खास	खास	40	250	नाग	श्री किशोरी साहू

खुर्दा जिले (उड़ीसा प्रांत) के निकटवर्ती सराक ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. ताराबाई	खास	बलंगा	120	600	नागेश्वर	श्री लिंगराज साहु
2. बाजपुर	"	"	18	100	"	श्री कैलास चन्द्र पुष्टि
3. मइधरपाड़ा	"	"	15	75	नाग	श्री धुपचरण पुष्टि
4. कलराफर	हज	"	10	60	पराशर	श्री बनमाली साहु
5. कनसाही	निराकारपुर	"	3	15	नागस्य	श्री गौरांग साहु
6. कृष्णपुर	जकिया	"	9	50		
7. कंडुरी	रतामाटी	"	10	55		
8. भरतपुर	खास	खण्डगिरि	90	500	नागेश्वर	श्री जिनाथसाहु
9. डेल्टा	"	"	60	300	"	श्री भुवनेश्वर साहु
10. डुमडुमा हाउसिंगबोर्ड	योद्पुर	रघुनाथपुर	75	450		श्री रामहरि बेहरा
11. यूनिट नं. 6	सूर्यनगर नं-7	भुवनेश्वर	30	150		श्री सूर्यनारायण साहु
12. नयापल्ली	खास	खण्डगिरि	50	250	"	श्री अर्जुन साहु

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
13. शास्त्रीनगर	ए. जी. कालोनी	खाखालनगर	10	50		श्री हरिसाहु
14. रामेश्वरपटना	खास	भुवनेश्वर	15	80	नाग	श्री दण्डपानी साहु
15. यूनिट नं. 9	कल्पनाप्लाट	शाहिदनगर	10	60	"	श्री कृपासिन्धु पुष्टि
16. वारमुण्डा हाउसिंगबोर्ड	बारमुण्डा	खण्डगिरी	7	42	नागेश्वर	श्री गोपाल साहु
17. चंद्रशेखर	शैलश्रीविहार	शैलश्रीविहार	6	35		श्री गोपीनाथ साहु
18. खलियाशाही	जे.आर.सी. नं. 1	शहीदनगर	5	30		श्री रंकनिधि साहु
19. एरोड्रामफील्ड	खास	"	3	15		श्री सीतानाथ साहु
20. रसुलगढ़	खास	खास	5	27	काश्यप	श्री विश्वनाथ साहु
21. शुक्रविहार	वाजीविहार	शाहिदनगर	3	17	"	श्री मुरली साहु
22. बुद्धेश्वरी कालोनी	खास	खास	10	57	नागेश्वर	श्री त्रिनाथ साहु
23. कल्पना	बुद्धेश्वरी कालोनी	"	10	52	"	श्री सोमनाथ साहु
24. लक्ष्मीनगर	खास	"	3	20	पराशर	श्री दामोदर साहु
25. नागेश्वरी टंकी	रामेश्वरपटना	"	5	30		
			572	3020		

गंजाम जिले (उड़ीसा प्रांत) के निकटवर्ती सराक ग्रामों की संक्षिप्त सर्वेक्षण रिपोर्ट

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
1. विक्रमपुर	खास	खालिकोट	5	30	काश्यप	श्री अरिहंत साहु
2. कंचना	"	"	20	130	जिनेश	श्री विनोद साहु
3. छद्दीना	बेगुनियापोड़ा	कोदला	5	25	नाग	श्री त्रिलोचन साहु
4. पोस्तपुर	खास	खालिकोट	5	30	"	श्री नामचन्द्र साहु
5. बानियाचिकिन	"	"	6	35	"	श्री शिवु साहु
6. कुम्मारी	"	"	25	130	"	श्री उदय साहु
7. धोबाडीह	नयागांव	नयागांव	5	28	नागेश्वर	श्री अनन्त साहु
8. बेनिया	बावनपुर	आसका	7	38	काश्यप	श्री रघुनाथ साहु
9. बावनपुर	खास	"	30	170	नाग	श्री भीम साहु
10. कनईफुलिया	नयागांव	"	4	20	नागेश्वर	श्री रंग साहु
11. नयागांव	"	खास	12	72	नाग	श्री रामहरि साहु

12. कालसंडपुर	खास	आसका	2	12	जिगनेश	श्री रामचन्द्र साहु
13. पडार	जयपुर	"	12	72	काश्यप	श्री सुदर्शन साहु
14. लालाशासन	आसका	"	7	42	नाग	श्री उदयनाथ साहु
15. लक्ष्मनपल्ली	"	"	5	30	"	श्री अर्जुन साहु
16. चइयापल्ली	"	"	8	48	"	श्री रजनी साहु
17. मुण्डमराई	खास	"	80	480	"	श्री उमापदो साहु
18. जाह्माड़ा	"	"	7	42	"	श्री दण्डपानी साहु
19. गंगातुर	मुण्डमराई	"	6	42	नागेश्वर	श्री लिंगराज साहु
20. दामोदरपल्ली	खास	"	32	195	"	श्री विजय साहु
21. सुरनी पटना	सरमनीपटना	सोरडा	65	30		श्री विश्वनाथ बेहरा
22. वरडायामी	खास	आसका	40	50	नाग	श्री नाथ साहु
23. जयसिंह	रत्नपुर	सोरडा	72	440	साहु	श्री लक्ष्मीनारायण साहु
24. सोरडा	खास	खास	30	180	जिगनेश	श्री हरिहर साहु
25. सरनीती	बंदागी	सोरडा	4	22	काश्यप	श्री कृपासिन्धु साहु
26. बरसिंह	डाम्रतुकम	"	5	25	नाग	श्री पुरुषोत्तम साहु
27. बड़गढ़	खास	खास	7	42	"	श्री सुभाष बेहरा
28. सिंहपुर	पदमपुर	पदमपुर	1	10	"	श्री मोहन साहु
29. पाटपुर	बड़गढ़	बड़गढ़	1	10	"	श्री कासीनाथ साहु
30. रायबंध	खास	सोरडा	1	8	"	श्री बालकृष्ण रंगनी
31. वलाशपल्ली	अम्रतुल	"	1	10	"	श्री पंचसाहु
32. आसका	आसका	आसका	15	90	"	श्री श्यामसुन्दर साहु
33. नामबंटा	खास	"	10	60	"	श्री राजु साहु
34. पड़ंगी	"	कायाटी	35	110	नागेश्वर	श्री सत्यवती साहु
35. गोविन्दपुर	"	पाटपु	20	120	"	श्री दिवाकर साहु
36. गांगपुर	"	बड़गढ़	20	120	"	श्री हाडुबंध साहु
37. सराबाड़ी	"	"	8	50	"	श्री दुर्योधन साहु
38. लोकामारी	एकलपुर	"	3	20	"	श्री महादेव साहु
39. गोकुलपुर	बरोदा	"	3	18	"	श्री त्रिनाथ बेहरा
40. खारिगुड़ा	गोड़गठ	"	5	30	"	श्री कालु साहु
41. गोपालपुर	बड़गढ़	"	2	10	"	श्री साहेब साहु
42. शेरगढ़	खास	पाटपुर	35	190	काश्यप	श्री घनश्याम साहु
43. पितल	"	आसका	35	195	नाग	श्री नटवर पुष्टि
44. फरनोली	खण्डदोली	आसका	3	16	"	श्री दण्डपानी साहु
45. ताकरडा	शेरगढ़	पाटपुर	5	25	नागेश्वर	श्री जुरिया साहु
46. करड़ाकन	मानिकपुर	"	3	20	"	श्री रवीन्द्र साहु
47. डेंगाउस्ता	सिंहपुर	"	147	870	"	श्री उज्वल पुष्टि

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
48. सिंहपुर	"	"	14	75	नाग	श्री हरिहर साहु
49. छनगिरी	दीगपंडी	"	25	130-	"	श्री सोमनाथ साहु
50. मोलाभंजा	खास	"	25	65	"	श्री पुरुषोत्तम दास
51. बाहडागोड़ा	फासीगुड़ा	'	6	30	"	श्री दिल्ली साहु
52. पोड़ागारी	खास	"	4	20	"	श्री मुरली साहु
53. सिंकुलीपदर	फांसीगुड़ा	"	5	30		
54. तलासी	लोहनगुड़ी	"	15	90	"	श्री सोमनाथ साहु
55. नीलबंगला	महानाड़ा	"	27	175	"	श्री चैतन्य साहु
56. पाटपुर	खास	"	10	60	नागेश्वर	श्री रघुनाथ साहु
57. जयनगर	पाटपुर	"	11	55	"	श्री तुम्बनाथ साहु
58. साहसपुर	"	"	12	72	"	श्री देवराज साहु
59. रेन्द्रा	"	पाटपुर	8	48	"	श्री नरसिंह साहु
60. दुदरापुर	खलि	"	45	20	"	श्री वासुदेव साहु
61. आड़पोड़ा	खास	कायाटो	25	125	काश्यप	श्री भीम बेहरा
62. हसराली	बालभद्रपुर	पाटपुर	7	35	"	श्री श्रीनाथ पुष्टि
63. सिद्धेश्वरी	खास	"	15	75	"	श्री भिखारी पुष्टि
64. कुकरोड़ा	"	"	25	125	"	श्री हाडुबंध दास
65. कायाटो	हिंजलीकायाटो	"	150	900	नाग	श्री चिंतामनी साहु
66. बड़साई	"	"	130	780	"	श्री संजय साहु
67. राजासाई	"	"	60	360	"	श्री देवराज साहु
68. दोहरसाई	"	"	80	480	"	श्री लडुकिशोर साहु
69. मुईचनियासाई	"	"	40	240	"	श्री अनंत साहु
70. स्कूलसाई	नारायणीनगर	"	20	120	"	श्री गौरांग साहु
71. कुंवडू	हिंजलीकायाटो	हिंजली	105	630	नागेश्वर	श्री सुभाष चन्द्र साहु
72. कंटकुली	"	"	150	650	"	श्री गोदाबरी साहु
73. शुद्धापुर	कुनचुड	"	80	400	"	श्री विजय साहु
74. सायारु	साया	हिंजलीकोयाटी	60	300	काश्यप	श्री नारायण साहु
75. पुराना झल	खास	"	30	180	"	श्री अर्जुन साहु
76. नयामकरझल	खास	"	20	100	नाग	श्री ईश्वर साहु
77. सुर्वन्हा	खास	"	50	250	जिगनेश	श्री गोविन्द दास
78. बेलगांव	"	कायोटी	15	75	नाग	श्री रामकृष्ण साहु
79. नरदीह	टांगनापल्ली					
80. सुन्दरपुर	खास	छप्रपुर	25	125	"	श्री नरुकिशोर साहु
81. झांड़ागकुली	"	बहरमपुर	20	120	"	श्री गुरुनाथ साहु
82. बुरीगांव	"	"	12	65	"	श्री चैतन्य साहु
83. बहरमपुर	"	"	50	250	जिगनेश	श्री अर्जुनदास
84. बागरला	"	पुरुषोत्तमपुर	12	72	"	श्री भिखारी दास
			2203	12319		

उक्त सर्वे रिपोर्ट का सारांश निम्न प्रकार है

क्र.सं.	प्रान्त एवं जिले का नाम	ग्रामों की सं.	परिवार सं.	जनसंख्या
1.	सिंहभूम (बिहार-प्रदेश)	6	233	1307
2.	रांची (")	47	862	5291
3.	दुमका (" सं. परगना)	30	384	3338
4.	वीरभूम (")	3	24	315
5.	धनबाद (")	3	150	850
6.	बोकारो (")	10	171	1145
7.	वर्द्धमान (पश्चिम-बंगाल)	27	491	4345
8.	बांकुड़ा (")	31	1133	8934
9.	पुरुलिया (")	88	3088	23628
10.	मेदिनीपुर (")	45	1653	12382
11.	कटक (उड़ीसा-प्रान्त)	49	1351	8670
12.	नोयागढ़ (")	25	850	5670
13.	गंजाम (")	22	572	3206
14.	पुरी (")	29	692	3745
15.	खुर्दा (")	26	572	3020
16.	गुंजाम (")	84	2203	12319
		525	14429	98165

ग्राम	पोस्ट	थाना	घर सं.	जन सं.	गोत्र	मुख्य व्यक्ति का नाम
48. सिंहपुर	"	"	14	75	नाग	श्री हरिहर साहु
49. छनगिरी	दीगपंडी	"	25	130-	"	श्री सोमनाथ साहु
50. मोलाभंजा	खास	"	25	65	"	श्री पुरुषोत्तम दास
51. बाहडागोड़ा	फासीगुड़ा	'	6	30	"	श्री दिल्ली साहु
52. घोड़ामारी	खास	"	4	20	"	श्री मुरली साहु
53. सिंकुलीपदर	फांसीगुड़ा	"	5	30		
54. तलासी	लोहनगुड़ी	"	15	90	"	श्री सोमनाथ साहु
55. नीलबंगला	महानाड़ा	"	27	175	"	श्री चैतन्य साहु
56. पाटपुर	खास	"	10	60	नागेश्वर	श्री रघुनाथ साहु
57. जयनगर	पाटपुर	"	11	55	"	श्री तुम्बनाथ साहु
58. साहसपुर	"	"	12	72	"	श्री देवराज साहु
59. रेन्द्रा	"	पाटपुर	8	48	"	श्री नरसिंह साहु
60. दुदरापुर	खलि	"	45	20	"	श्री वासुदेव साहु
61. आड़पोड़ा	खास	कायाटो	25	125	काश्यप	श्री भीम बेहरा
62. हसराली	बालभद्रपुर	पाटपुर	7	35	"	श्री श्रीनाथ पुष्टि
63. सिद्धेश्वरी	खास	"	15	75	"	श्री भिखारी पुष्टि
64. कुकरोड़ा	"	"	25	125	"	श्री हाडुबंध दास
65. कायाटो	हिंजलीकायाटो	"	150	900	नाग	श्री चिंतामनी साहु
66. बड़साई	"	"	130	780	"	श्री संजय साहु
67. राजासाई	"	"	60	360	"	श्री देवराज साहु
68. दोहरसाई	"	"	80	480	"	श्री लडुकिशोर साहु
69. भुईचनियासाई	"	"	40	240	"	श्री अनंत साहु
70. स्कूलसाई	नारायणीनगर	"	20	120	"	श्री गौरांग साहु
71. कुंघडू	हिंजलीकायाटो	हिंजली	105	630	नागेश्वर	श्री सुभाष चन्द्र साहु
72. कंटकुली	"	"	150	650	"	श्री गोदाबरी साहु
73. शुद्धापुर	कुनचुड़	"	80	400	"	श्री विजय साहु
74. सायारु	साया	हिंजलीकोयाटी	60	300	काश्यप	श्री नारायण साहु
75. पुराना झल	खास	"	30	180	"	श्री अर्जुन साहु
76. नयामकरझल	खास	"	20	100	नाग	श्री ईश्वर साहु
77. दुर्बन्हा	खास	"	50	250	जिगनेश	श्री गोविन्द दास
78. बेलगांव	"	कायोटी	15	75	नाग	श्री रामकृष्ण साहु
79. नरदीह	टांगनापल्ली					
80. सुन्दरपुर	खास	छत्रपुर	25	125	"	श्री नरुकिशोर साहु
81. झांड़ागकुली	"	बहरमपुर	20	120	"	श्री गुरुनाथ साहु
82. बुरीगांव	"	"	12	65	"	श्री चैतन्य साहु
83. बहरमपुर	"	"	50	250	जिगनेश	श्री अर्जुनदास
84. बागरला	"	पुरुषोत्तमपुर	12	72	"	श्री भिखारी दास
			2203	12319		

उक्त सर्वे रिपोर्ट का सारांश निम्न प्रकार है

क्र.सं.	प्रान्त एवं जिले का नाम	ग्रामों की सं.	परिवार सं.	जनसंख्या
1.	सिंहभूम (बिहार-प्रदेश)	6	233	1307
2.	रांची (")	47	862	5291
3.	दुमका (" सं. परगना)	30	384	3338
4.	वीरभूम (")	3	24	315
5.	धनबाद (")	3	150	850
6.	बोकारो (")	10	171	1145
7.	वर्द्धमान (पश्चिम-बंगाल)	27	491	4345
8.	बांकुड़ा (")	31	1133	8934
9.	पुरुलिया (")	88	3088	23628
10.	मेदिनीपुर (")	45	1653	12382
11.	कटक (उड़ीसा-प्रान्त)	49	1351	8670
12.	नोयागढ़ (")	25	850	5670
13.	गंजाम (")	22	572	3206
14.	पुरी (")	29	692	3745
15.	खुर्दा (")	26	572	3020
16.	गुंजाम (")	84	2203	12319
		525	14429	98165

विभिन्न जिलों के प्रत्येक सराक ग्रामों में सर्वेक्षण किए हुए युवकों के नाम एवं जिले

क्र.सं.	युवक का नाम	ग्राम	युवकों द्वारा सर्वेक्षण किए जिलों के नाम
1.	श्री नकुल चन्द्र मांझी	तड़ाई	पुरुलिया (पं. बंगाल)
2.	श्री धीरेन्द्र नाथ मांझी	,,	,,
3.	श्री राजकिशोर आचार्य	,,	,,
4.	श्री प्रकाश चन्द्र मांझी	,,	,,
5.	श्री सृष्टिधर सराक जैन	चोकाहातु	डुमका (बिहार) सं. परगना
6.	श्री अर्जुन कुमार मांझी	नौढ़ी	,,
7.	श्री राजेन्द्र नाथ सराक जैन	देवलटांड़	मेदिनीपुर (पं. बंगाल)
8.	श्री अजित कुमार मांझी	,,	,,
9.	श्री धीरेन्द्रनाथ मांझी	नौढ़ी	उड़ीसा (में भ्रमण कार्य)
10.	श्री सुरेन्द्रनाथ मांझी	देवलटांड़	उड़ीसा (में भ्रमण कार्य)
11.	श्री संतोष कुमार मांझी	चोकाहातु	धनबाद (बिहार)
12.	श्री नकुल चन्द्र मांझी	तड़ाई	,,
13.	श्री दिलीप कुमार मांझी	चोकाहातु	,,
14.	श्री बलराम चन्द्र मांझी	नौढ़ी	,,
15.	श्री सृष्टिधर सराक जैन	चोकाहातु	वीरभूम (बिहार)
16.	श्री अर्जुन कुमार मांझी	नौढ़ी	,,
17.	श्री दीनबन्धु मांझी	,,	बांकुड़ा (पं. बंगाल)
18.	श्री अजित कुमार	,,	,,
19.	श्री दीनबन्धु मांझी	,,	वर्द्धमान (पं. बंगाल)
20.	श्री आनंदकुमार सराक जैन	,,	कटक (उड़ीसा)
21.	,,	,,	नोयागढ़ (उड़ीसा)
22.	,,	,,	गंजाम (उड़ीसा)
23.	,,	,,	पुरी (उड़ीसा)
24.	,,	,,	खुर्दा (उड़ीसा)
25.	,,	,,	गुंजाम (उड़ीसा)
26.	श्री सन्तोष कुमार मांझी		बोकारो (बिहार)
27.	श्री दिलीप कुमार मांझी		,,
28.	श्री नकुल चन्द्र मांझी		,,

हाथीगुम्फा शिलालेख

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर के समीप उदयगिरि का हाथीगुम्फा नामक एक प्राकृतिक गुम्फा के आभ्यंतरीण छत पर खोदित महाराज खारवेल की एक सुदीर्घ प्रस्तर-लिपि है। यही भारत-प्रसिद्ध "हाथीगुम्फा शिलालेख" है। यह शिलालेख ओडिशा में अंग्रेज शासन की प्रतिष्ठा के प्राक्काल तक अज्ञात था। इसकी खोज कर सबसे पहले ष्टर्लिंग साहब ने ई. 1820 में अपने "An Account of Geographical, Statistical and Historical of Orissa or Cuttack" ग्रंथ में संदर्भित किया था। तब इसका एक असंपूर्ण चित्र ही प्रकाशित हुआ था। परन्तु उस समय ब्राह्मी लिपि को पढ़ पाना सम्भव न हो पाने के कारण विद्वानों को इसकी सही जानकारी नहीं मिल पायी। जेम्स प्रिन्सेप् ने ब्राह्मी लिपि का रहस्योद्घाटन ई. 1835 तक कर लिया था, परिणामतः प्राचीन भारतीय इतिहास के अनेक तथ्य प्रकाशित हुए। हाथीगुम्फा अभिलेख की एक चाक्षुस प्रतिलिपि (Eye copy) काफी परिश्रम से मार्खम् किटो (M. Kittoe) ने बनाई और वही प्रतिलिपि पाठोद्धार के लिए प्रिन्सेप को भेजी गई। हाथीगुम्फा अभिलेख प्रथम बार प्रिन्सेप के द्वारा पठित होकर ई. 1837 में प्रकाशित हुआ (J.A.S. Vol. VI) इसके बाद फिर इसे ई. 1877 में अलेकजींडर कनिंगम् ने अपने संकलित ग्रंथ (A. Cunnigham-"Corpus Inscriptionum Indicarum) में प्रकाशित करवाया। उसके पश्चात् राजेन्द्रलाल मित्र ने Antiquities of Orissa, Vol. II ग्रंथ में ई. 1880 में सामान्य परिवर्तित करके प्रकाशित किया था। उसी वर्ष लॉक साहब (Locke) स्वयं उदयगिरि आए और इस अभिलेख का एक "प्लास्टर कास्ट" तैयार किया। अब वही "प्लास्टर कास्ट" कलकत्ता के इण्डियन म्यूजियम में संरक्षित है। ई. 1884 में विएना में प्राच्य विद्याविशारदों को लेकर आंतर्जातिक कांग्रेस का छठा अधिवेशन का आयोजन हुआ था। (VIth International Congress of Orientalist), जहां पण्डित भगवान लाल इन्द्रजी ने हाथीगुम्फा अभिलेख का एक संशोधित पाठ प्रस्तुत किया था। यह उल्लेखनीय है कि सबसे पहले इन्द्रजी ने ही "खारवेल" का नामोल्लेख किया है। लिपि–विज्ञानी व्यूलर (Buhler) ने ई. 1894 और 1898 में इन्द्रजी के पाठ में कतिपय संशोधन परिवर्तन किए। ई. 1906 में ब्लॉक साहब (J.B. Block) ने इस अभिलेख की एक प्रतिच्छवि स्याही से बनाकर सुपण्डित कीलहॉर्न (Keilhorn) को प्रदान किया था। इसे J.h. Fleet के पास विलायत भेजा गया

और फ्लीट् साहब ने ई. 1910 में इसका संशोधित पाठोद्धार कर रॉयल एसिआटिक (Royal Asiatic) पत्रिका में प्रकाशित करवाया था। इसी पत्रिका में ल्यूदर (H. Luder) साहब की टिप्पणी भी प्रकाशित हुई थी। इसके पश्चात् विशिष्ट ऐतिहासिक टॉमस ने (F.W.Thomas) Annual Report of the Archaeological Survey, India 1922-23 में और स्टेन कोनो ने (Sten Konow-Acta Orientalia, Vol. I) इस अभिलेख पर नए सिरे से प्रकाश डाल कर इसके ऐतिहासिक महत्व का प्रतिपादन किया था। ऐतिहासिक राखालदास बेनर्जी स्वयं ई. 1913 में उदयगिरि आए थे और हाथीगुम्फा अभिलेख का एक फोटो चित्र लिया था। उसी फोटो चित्र का प्रकाशन काशी प्रसाद जयस्वाल के द्वारा ई. 1927 में बिहरा-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी जर्नल में हुआ था। उसी वर्ष जयस्वाल भी उदयगिरि आए थे और स्वयं शिलालेख का अध्ययन-अनुशीलन करने का अवसर पाकर अपने पाठ में कुछेक संशोधन कर पाए थे। फिर 1919 ई. में जयस्वाल और बेनर्जी दोनों एक साथ और विभिन्न दृष्टिकोण से शिलालेख की समीक्षा की थी। उनके वापस जाने के पश्चात् पटना म्यूजियम के लिए इसी अभिलेख का प्लास्टर कास्ट बनवाया गया और कुछेक फोटो भी लिये गए थे। राखलदास और जयस्वाल ने हाथीगुम्फा अभिलेख का पाठोद्धार करने के लिए अक्लांत परिश्रम किया है। वे दोनों फिर से सन् 1924 में उदयगिरि आकर अभिलेख के विभिन्न अंशों का पुनः निरीक्षण किया था। अकेले जयस्वाल ने सन् 1927 में बिहार-उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी जर्नल में और बाद में 1929 में बेनर्जी के साथ मिलकर एक एपीग्राफिया इण्डिका में इसी अभिलेख का संशोधित पाठ का प्रकाशन करवाया था (Epigraphia Indica, Vol. XX) । 1929 में वेणीमाधव बड़ुआ का "The Old Brahmi Inscriptions in Udayagiri and Khandagiri caves" ग्रंथ प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ मे बड़ुआ महोदय ने अभिलेख पूर्णाअंग पाठ देने की चेष्टा की थी पर उनके पठन में कल्पना की अधिकता के कारण लगता है उसकी ऐतिहासिक उपादेयता ही नहीं रही। लिपिविद् दीनेश चन्द्र सरकार ने भी सन् 1942 में अपनी Select Inscriptions, Vol. I में भी इसी अभिलेख का पाठोद्धार किया है। इस सन्दर्भ में इतिहासकार नवीन कुमार साहू ने अपने ग्रंथ "खारवेल" में अन्तिम प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

Dr. H.K. Mahatab - History of Orissa
Dr. N.K. Sahu - History of Orissa, Vol. (U.U.)
Dr. N.K. Sahu - Kharavela
Dr. N.K. Sahu - Buddhism in Orissa
Dr. K.C. Panigrahi - History of Orissa
Paramananda Acharya - Studies in Orissan History,
Archaeology and Archives
R.D. Benarjee - History of Orissa, Vol. I
B.M. Barua - Old Brahmi Inscription in Udayagiri and
Khandagiri Caves
Buhler - Indian Palaeography
A.H. Danı - Indian Palaeoography
G.H. Ojha - Indian Palaeography (Hindi)
Cunninghum - Corpus Inscriptionum Indicaru, Vol. I
Hiralal - Inscriptions of C.P. and Berar
A.P. Sastri - Early Inscriptions of Bihar and Orissa
B C. Maznmdar - Orissa in the Making
Oldenburg - 'I he Vınaya Pitaka - Vol. I
Debla Mitra - Udayagiri and Khandagari
Dr. K.C. Panigrahi - Archaeological Remains of Bhubaneswar
J. Prinsep - Essays on Indian Antiquities
D.C. Sircar - Select Inscription - Vol. I
P.L. Gupta - Coins
Dr. H.C. Das - Cultural Develpment in Orissa
Dr. R.P. Mohapatra - Udayagiri and Khandagiri Caves
Sahu, Mishra and Sahu - History of Orissa
S.N. Agarwal - Orissan Palaeography
Epigraphia Indica
Indian Historical Quarterly
Journal of Andhara Historical Research Society
Indian Antiquary
Journal of the Asiatic Society of Bengal

Journal of the Bihar and Orissa Research Society
Journal of the Kalinga Historical Society
Orissa Historical Research Journal
Proceedings of the Indian History Congress

हिन्दी

सदानन्द अग्रवाल, श्रीनिवास उद्गाता—खारवेल
डॉ. नेमिचन्द्र जैन—आदिपुराण में प्रतिपादित भारत
बलभद्र जैन—भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ
काशीप्रसाद जयश्यावल—खारवेल के शिलालेख का विवरण
साहित्य संगम (सं.)—उत्कल दर्शन
महाभारत, रामायण (गीता प्रेस)
प्राचीन जैन स्मारक
बिहार, बंगाल, उड़ीसा के जैन तीर्थ
पी. सी. राय चौधरी—बंगाल में जैन धर्म
गजेटियर बंगाल बिहार